

प्रत्येक—

मानिक मुद्रा

अथवा

द्वार (राजपुत्र)

लक्ष्मी-मोक्ष में पुस्तक मित्रों का पता—

भी० कोटेश्वरजी बति,

मु० सुभाषगढ़

जिला बीकानेर

सुदृष्ट

११ चर्म नक्षत्र-सामान्य ग्रंथ जयमेर १ १-६-१

१ चर्म (भूमिशास्त्र) ग्रंथ जयमेर १ १-६-१

प्राक्कथन



हमारे कई एक जैन नामधारी भाइयों ने अपने उल्टे सिद्धान्तों द्वारा दया-दानादि जैन-धर्म के मूल-तत्वों का जिस निर्दयतापूर्वक विरोध किया है, उसे देखते हुए कहना पड़ता है, कि भगवान्-महावीर के पवित्र सिद्धान्तों को इन निर्दय-सिद्धान्तों से रक्षा करना प्रत्येक धर्म-प्राण जैनधर्मावलम्बी का कर्तव्य होगया है । मारवाड़-मेवाड़ की लगभग ६० हजार जनता आज तर्क-वितर्क और शास्त्रीय-ज्ञान से शून्य होकर, इस प्रकार के शास्त्रविरुद्ध-सिद्धान्तों

पूम्पका से मारबाड़ में न तो जन्म ही
 पहण किया है, न धनकी रिशवा-बीका ही मार
 बाड़ में हुई है। जन्म से लगाकर बीका क्या
 इसके परचात का भीमानजी का अधिकार
 समय मारबाड़ से बाहर ही पीता है। यही कारण
 है कि भीजी की भाषा मारबाड़ी नहीं है।
 फिर भी अपनी असौखिक प्रतिमा के कारण,
 आपने बोलू ही दिनों के भीतर मारबाड़ी भाषा
 में बहुत कुछ गति प्राप्त करली है। यदि, इस
 उल्लो को इस मारबाड़ी-भाषा में न बनाया जाता
 और लड़ी पाली में बनाया जाता तो जिस
 लाभ का दृष्टि में रखकर इनका निर्माण किया
 गया है उस लाभ से यदि सर्वथा नन्दी, या
 बहुत बरा में जनता को रक्षित रहमा पड़ता।
 क्योंकि प्रत्यक्ष-प्राप्ती अपनी मानुभाषा में—
 फिर बाद बाद दूरी कृती या अशुद्ध हो क्या न

हो— जितना शीघ्र और अच्छी तरह समझ सकता है, उतना शीघ्र और अच्छी तरह दूसरी भाषा में नहीं समझ सकता । इसलिये पूज्यश्री ने इन ढालों को, उसी भाषा में, उसी तर्ज पर और वैसे ही उदाहरण देकर रचना उचित समझा, जैसी भाषा, तर्ज और जैसे उदाहरणादि उन ढालों में हैं, जिनका निर्माण अनुकम्पा और दान को पाप बताने के लिये हुआ है । इन ढालों में, पूज्यश्री ने भाषा और कविता पर उतना ध्यान नहीं दिया है, जितना ध्यान ऐसी जनता के हृदय-पट पर अङ्कित जीवरत्ना और दान के विरुद्ध बने हुए दुर्भाव मिटाने पर दिया है ।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन द्वारा पूज्यश्री की कवित्व-शक्ति का परिचय देना हमारा अभि-
प्राय नहीं है, न पूज्यश्री ने इस उद्देश से इन

राशों की रचना ही की है। अथिषु इस प्रश्न की रचना और प्रकाशन से यह अभीष्ट है, कि हमारे विन मोले-माल भाइयों को, अज्ञान के भयङ्कर-धैरे में बाँध रखा गया है, उन्हें ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हो और वे जन-धर्म के उत्सव को समझकर, उस डालरूपी जाल के बन्धन से निकल सकें, जिसमें कि अनेक ऐसे हुए हैं। अतः पाठक-महोदय इस पुस्तक को कविता की दृष्टि से न देखकर भाव की दृष्टि से देखने की कृपा करें और अनुकम्पा-राम को छानने के लिये राशों द्वारा जो प्रकल किया गया था, उसके समुत्तिक-लयन पर शास्त्र और गम्भीरतापूर्वक विचार करके इस पुस्तक और पूज्य श्री के परिग्रह से लाभ उठावें।

पूज्यश्री म मणपि शास्त्रीय-दृष्टि से ही इस राशों की रचना की है तथापि समाप्त, पूज्य-

संशोधक या अन्य किसी कार्यकर्ता की असा-
वधानी से यदि कहीं कोई त्रुटि रह गई हो, तो
इसके लिये कार्यकर्ता जिम्मेदार हैं। यदि,
कोई सज्जन, इस पुस्तक में कोई ऐसा दोष
देखे, तो सूचित करने की कृपा करें, ताकि
अगले संस्करण में वह शुद्ध कर दिया जा सके।

एक बात और। कहीं-कहीं इन ढालों में
बड़े कड़े हेतु देने पड़े हैं। किन्तु विवशता थी।
वैसा किये बिना, काम चल ही नहीं सकता
था। क्योंकि जिन ढालों के उत्तर में इन ढालों
की रचना की गई है, उनमें वही हेतु, प्रायः
उसी स्थान पर उसी ढङ्ग से दिये गये हैं।
अतः यह प्रयत्न किया गया है, कि उनका कुतर्क
उन्हीं के भूले-सिद्धान्तों के लिये घातक सिद्ध हो।
अन्त में, हम यह कह देना भी उचित
मान्यमाने हैं, कि पूज्यश्री के अथवा हमारे हृदय

हासों की रचना ही की है। अपितु इस ग्रन्थ की रचना और प्रकारान स याद अभीष्ट है कि हमारे जिन मोझे-आले भाइयों को, अज्ञान के अंधार धँसेरे में डाल रखा गया है, उन्हें ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हो और वे जैन-धर्म के रहस्यों को समझकर, एवं हासरूपी ज्ञान के सम्बन्ध में मित्र सके जिसमें कि अथवा वैसे हुए हैं। अतः पाठक-महोदय इस पुस्तक को कवित्व की दृष्टि से न देखकर मात्र की दृष्टि से देखने की कृपा करें और अनुकम्पा-रान को उठाने में लिये हासों द्वारा जो प्रयत्न किया गया था, उसके समुचित-अवसर पर शक्ति और सम्मी-रतापूर्वक विचार करके, इस पुस्तक और पूरक की के परिणाम से लाभ उठावें।

पूज्यभी ने यद्यपि शास्त्रीय-दृष्टि से ही इन हासों की रचना की है, तथापि, संसारिक, मूल-

अंग है, या पापपूर्ण कार्य और जैन-शास्त्र
 उसका समर्थन करते हैं, या विरोध । साथ ही,
 यह भी देखें, कि उन्हें कैसे गहरे-गहरे में डाल
 रखा गया है, जहाँ से उनका बिना तर्क-वितर्क
 किये कदापि छुटकारा नहीं है । हमारा विश्वास
 है, कि बुद्धिमान लोग तुलनात्मक-दृष्टि से ही
 इस ग्रन्थ का अध्ययन करेंगे । किमधिकम् ।

नया-वास,

व्यावर

श्रावण शुक्ला १५

वीर सं० २४५६

विक्रमी सं० १९६७

प्राणिमात्र का हितेच्छु

मानमल सुराणा

में, एक माइनों पर, उनके इस अज्ञान के कारण अग्रगण्य क्या है। इस प्रश्न में, इसी की रचना द्वारा जो प्रयत्न किया गया है, वह केवल अनुकम्पा-पातक, धर्म-विरोधी विचारों के साथ हमारा अतिराग विरुद्ध है। परन्तु हम विचारों को रखनेवाली आत्माओं के साथ हमारा तनिक भी विरोध नहीं है, प्रत्युत उनकी आत्मा के साथ पूर्ण सहानुभूति और मित्रता है। इसी आन्तरिक-धर्मा की प्रेरणा से हमें जो कटु-भौषण देकर उसका रोग शांत करने के प्रयत्न के समान यह प्रश्न निर्माण किया गया है। इसलिये हमारी सब वस्तुओं से सब नव प्रार्थना है कि द्वेष-दृष्टि को अलग रखकर, मैत्री भावना से इसे पूर्ण और विशिष्टा प्रदर्श करें। उन्हें, मित्र-दृष्टि से यह विचारना चाहिए, कि जीवरक्षा, जैन-धर्म ही एक

विषय-सूची



पहली ढाल के दोहे

नाम विषय दोहे से दोहे तक

अनुकम्पा का स्वरूप और उसके
किये गये भेदों का उत्तर— १-१४

ढाल पहली

१—अधिकार मेघकुँवर का—	पेज	३
२—श्री नेमनाथजी का करुणा अधिकार—	"	६
३—धर्मरुचिजी का करुणा अधिकार—	"	१३
४—श्री महावीर स्वामी की गोशालक	"	१

विषय-सूची



पहली ढाल के दोहे

नाम विषय दोहे से दोहे तक

अनुकम्पा का स्वरूप और उसके

किये गये भेदों का उत्तर—

१-१४

ढाल पहली

- | | | |
|--------------------------------|-----|----|
| १—अधिकार मेघकुँवर का— | पेज | ३ |
| २—श्री नेमनाथजी का करुणा | | |
| अधिकार— | ” | ६ |
| ३—वर्मरुचिजी का करुणा अधिकार— | ” | १३ |
| ४—श्री महावीर स्वामी की गोशालक | | |
| पर अनुकम्पा का अधिकार— | ” | १७ |

	३३
५—त्रिभक्त्युपि का अविष्कार—	३४
६—द्विभक्त्युपि का अविष्कार—	३५
७—अविष्कार इतिहेतु सुवि का—	३६
८—कारणों की गर्भ विषयक अनुकम्पा का अविष्कार—	३७
९—अविष्कार कुलमी की हृद विषयक अनुकम्पा—	३८
१०—अविष्कार रूप में यह हृद कीर्ति के सम्बन्ध में—	३९
११—अनन्तकुमार की अनुकम्पा का अविष्कार—	४०
१२—अविष्कार चतुर्दशमे लोके का—	४१
१३—अविष्कार ज्ञानि मित्रात्मक विषयक—	४२
१४—अविष्कार शास्त्र की कविता से शास्त्र की मान्य रक्षा का—	४३

५—अधिकार मार्ग मूले हुए को साधु
किस कारण रास्ता नहीं बतावे— ”

पेज
६४

दूसरी ढाल के दोहे

दोहे से दोहे तक

साधु, अनुकम्पा के लिए अपना
कल्प नहीं तोड़ते जिस प्रकार वन्दन के
ए नहीं तोड़ते हैं—

१-८

सावज कारणों के सेवन से, वन्दन
ही तरह अनुकम्पा भी सावज नहीं है,
साधु अपने कल्प के अनुसार ही अनु-
कम्पा करते हैं—

१-२

ढाल दूसरी

१—अधिकार जीवाँरी दया खातर
दयावान मुनि ने पाँधने-छोड़ने का—
अधिकार लाय बचाने का—

- १ — अधिकार अपराधी को विरपराधी
बढ़ाने का— ४३
- ४ — अधिकार जीवनाभरणा बाँटने का— ४४
- ५ — अधिकार धर्म तापदि बँटव्या
आसरी— ४५
- ६ — अधिकार नीति का पालन कमाने का— ९

तीसरी श्रृंखला के दोह

दोह से दोहें तक

चम के लिए जीवनाभरणा बाँटनेवाले

गन्धधार शरमा हैं—

१—५

चाल तीसरी

- १ — अधिकार मेचरवा
पर दबा करने का—
- २ अधिकार करणका
कम्पा का—

३—अधिकार माता बचाने से चुलणी
पिया के घृतादि का भंग कहने
वालों को उत्तर—

१०६

शूरादेव का दाखला

११२

४—अधिकार 'नमीराज ऋषि ने अनु-
कम्पा नहीं की', ऐसा कहनेवालों
के लिए उत्तर —

११६

५—अधिकार 'नेमिनाथजी ने गजमुकु-
माल की अनुकम्पा नहीं की',
ऐसा कहनेवालों को उत्तर —

१२१

६—अधिकार वीर भगवान के उपसर्ग
दूर करने में पाप कहते हैं,
उसका उत्तर —

१२७

७—अधिकार 'द्वीप मनुजों की हिंसा
देखना क्यों नहीं सेटे ?' इसका

१३१

८—अधिकार कोविड-वेदा का समाप्त
मिथाने में पाप कहते हैं इसका
उत्तर—

११८

९—अधिकार समुद्रपान्थी के और पर
अनुकम्पा नहीं करी करते हैं,
उसके विषय में—

११९

बोधी दास के दाई

विचित्र विंसा के समाप्त विचित्र धारा
को पाप कहनेवालों के विषय में—

कोरे

१-११

बोधी दास

गाथा से गाथा तक

मैं और जीवन्त तन्मय की कुपुन्ति
पर तथा पाप मेरे में पाप करते हैं इसका
उत्तर—

१-२९

गाथा से गाथा तक

सहायता, सम्मान देकर मिथ्यात्वी
को समझिती बनाने में पाप कहते हैं,
इसका उत्तर—

२७-३३

पांचवीं—ढाल

चोर, हिंसक, लगपट को केवल उनका
पाप छुड़ाने के लिये उपदेश देते हैं, ऐसा
कहनेवालों को उत्तर—

१-११

मरते हुए बकरे का कर्ज चुकता है,
ऐसा कहनेवालों को उत्तर—

१२-२२

बकरा और धन एक समान होने से
उनके लिए उपदेश नहीं देते हैं, ऐसा
कहनेवालों को उत्तर—

२३-२९

मरते जीव के लिये उपदेश देने से
उनकी निर्जंरा होती बन्द हो जाती है,
ऐसा कहनेवालों को उत्तर—

३०-४७

परछी-पापी को उपदेश देकर पाप
 सुझाने से बाली-बाली कुँए में गिरपड़ी
 इसी तरह हिंसक को उपदेश देने से बकरे
 बच गये। बकरा बचा और ली मरी ने
 दोर्बीं समाल है बरि एक का कर्म बड़ी
 ती दूसरे का पाप भी माफी देसा करने
 बाली को उत्तर—

४८-१

बीचीं के किये उपदेश नहीं दते
 एक हिंसक को समझाकर बने बीचीं के
 क्लेश नहीं मिटने देसा करनेवाली को
 उत्तर—

४९-१४

कम-काया के घर लालि नहीं होवे
 ऐसा करनेवाली को उत्तर सब कित
 जायक के दानके के -

५५-११६

छठी ढाल के दोहे—

दोहे से दोहे तक

१—जीव वचाना और सत्य बोलने का
स्वरूप—

१-६

२—सत्य सावद्य-निरवद्य होता है, परंतु
अनुकम्पा निरवद्य ही होती है—

७-१३

ढाल—छठी

गाथा से गाथा तक

१—उकाया की रक्षा में पाप कहते हैं,

१-११

उसका उत्तर—

२—साधु की उपधि से मरते हुए जीव
वचाने का विचार—

१२-२३

३—श्रावक के पेट पर हाथ फेरने का कहते
हैं, उसका उत्तर—

२४-३२

४—विल्ली से चूहे को नहीं छुड़ाना कहते
हैं, उसका उत्तर—

३३-४१

५—श्रावक को मरते से वचाने का निषेध
करते हैं, उसका उत्तर—

४२-५१

- ६—कद, मज्जावादि जीव पशुओं से मरते
छातु बचाने क्यों न जान ? इसका
उत्तर— १३-६
- ७—गौसाक्षा बचाने में मज्जावाको बूझे,
तथा छातु को कर्मिणमात्र कोझने
में पाप जानते हैं असुख उत्तर— ६३-१
- ८—गौसाक्षा को बचाने में मिथ्याता
बढ़ता करते हैं इसका उत्तर— १२-८
- ९—दो छातु को मज्जावा नै नहीं बचाने
असुखे विषय में— ११-११

छातुओं का ल के रोदे—

- १ मज्जा से निर्धन को बचाने में पाप
करने हैं इसका उत्तर— १०-१
- २—पुण्ड और धर्म मित्र बीमे हैं या नहीं
इसका १-२६

ढाल—सातवीं

गाथा से गाथा तक

- १—सात दृष्टान्तों का खण्डन—गाजर
मूला आदि खिलाकर जीव बचाने
का कहते हैं, उसका उत्तर तथा
अमिका, पानी का, हुक़्के का, मास
खाने का, मुर्दा खिलाने का, मनुष्य
मारकर मनुष्य बचाने का दृष्टान्त
देकर दया उठाते हैं, उसका उत्तर— १-५३
- २—न्यामिचारादि दुष्कृत्यों-द्वारा जीव
छुड़ाना कहते हैं, उसका उत्तर— ५४-६५
- ३—कसाई को मारकर जीव बचाना
कहते हैं, उसका उत्तर— ६६-७२
- ४—श्रेणिक राजा ने पढ़हा पिटाकर
“अमारी” धर्म की घोषणा कराई,
इसमें पाप कहते हैं, उसका
----- ७३-११९

५—दो बेरघारों का दहान्त देते हैं

उसका उतर

१२८-१२९

६—दो बेरघारों के दूसरे दहान्त का

कलह—

१३१-१३६

७—बीब मारे नहीं भरता है इसलिये

उसकी रक्षा में चर्म नहीं इसका

उतर तथा जलपावर की हिंसा

सुरंगी कहते हैं इसका उतर १३९-१४४

८—पने से ममता उगाकर बीब बचाने

बान्ने की बाप कहते हैं इसका उतर १४५-१४९



भाटनी हाल के रोड़े—

बाड़े से रोड़ तक

मददा और परददा दोनों साथ

सुम्मत हैं—

ढाल आठवीं

गाथा से गाथा तक

लाय में बल्लते जीव को बचाने में पाप
कहते हैं, उसका उत्तर — १-१०

औपधि देने में पाप कहते हैं, उस-
का उत्तर — ११-२०

“उपदेश देकर ‘हिंसा’ छुड़ाते हैं”
ऐसा कहने वालों को उत्तर — २१-३७

“अकृत्य करते समय ‘पाप छुड़ाने’
को उपदेश देते हैं”, ऐसा कहने वालों
को उत्तर — ३८-४८

“श्रावक के पैर से जङ्गल में जीवों
की घात क्यों नहीं छुड़ाते”, ऐसा कहने-
वालों को उत्तर — ४९-६४

“गृहस्थ की उपधी से जीव मरते हैं,
उन्हें छुड़ाने क्यों नहीं जाते हो”, ऐसा
प्रश्न करने वालों को उत्तर — ६५-७३

‘सुमनसहरण में आते जाते मनुष्यों
 से बीरों की बात होती थी और अथि
 के बने के बने के रूप में आते हुए
 बन्दन सन्निहार की नीति बाला । इनकी
 बचने महावीर स्वामी के साधु क्यों नहीं
 थे ?’ ऐसा कहने वालों की उत्तर—

७४-८३

साधु साधक की एक मनुष्यता है
 ऐसा कहनेवालों की उत्तर—

८५-९३

कर्तव्यमय में मरते बीर की
 कलावाप है ऐसा कहनेवालों की उत्तर

९४-१ ९

काल में बचते हुए बीर क्यों की
 निर्जरा करते हैं ऐसा कहनेवालों की उत्तर

१ १-१ ८

अन्धकारमय गुण में नहीं है ऐसा कहने-
 वालों की उत्तर—

१ ९-१२१

काल तुलाने का अन्धकारमय बरि
 गुण में है तो साधु इसलिये क्यों नहीं
 होते ? ऐसा कहने वालों की उत्तर—

१२१-१२२

गाथा से गाथा तक

आग बुझाना और कसाई को मारना

एक सरीखा कहते हैं, उनको उत्तर— १३३-१४३

ढाल नवमी

दया के साथ नाम—

१-२५

त्रिविधि से जीव रक्षा करने में पाप
कहते हैं, उसका उत्तर—

२६-३५

रक्षा करने में जीव मरते हैं, अतः
रक्षा पाप है, ऐसा कहनेवालों को उत्तर

३६-५५

“साधु को जीव नहीं बचाने तथा
रक्षा को भली नहीं समझनी” ऐसा कहने-
वालों को उत्तर—

५६-६१

जीव का जीना नहीं चाहते, सिर्फ
घातक का पाप टालना चाहते हैं, ऐसा
कहनेवालों को उत्तर—

६२-६९

गाथा से गाथा तक

‘त्रिविधे-त्रिविधे जीव रह्या न करनी’

का उत्तर—

३०-१५

माया भूत जीव सुख की रह्या में
पुष्प-वाप कहते हैं उसका उत्तर—

३१-४१

धर्म के कार्य में आरम्भ करव से
समझि जाती हैं ऐसा कहनेवालों की
उत्तर—

४२-११

साधनी कसाम्या का पुष्प-वाप
कहनेवालों को उत्तर—

५१-५१

जीवों का पुष्प सिधने में पुष्प-
वाप कहत हैं उसका उत्तर—

५४-१ ॥

धर्म-मार्ग में हिमा करवे से काय का
बाध नष्ट होता है ऐसा कहनेवालों का
सहाय के उदाहरण गहित उत्तर—

१ १-१ ५

दसन को धर्म में भीर हिमा को
बा से भया-भय मायने हैं” उत्तर।

सुझा—

११०-११०

गाथा से गाथा तक

"यदि आरम्भ में उपकार होता है,

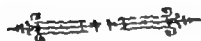
तो झूठ चोरी से भी होना चाहिए"

ऐसा कहने वालों को उत्तर—

११८—१२४

तथा का स्वरूप—

१२५—१२९ -



अनुकम्पा विचार

श्रीमज्जवाहिराचार्य
विरचितम्

ॐ नमः

अनुकम्पा-विचार



दोहा

करुणा वरुणालय प्रभो, मङ्गलमूल अनन्त ।
जय-जय जिनवर विबुधवर, सुखमय सुषमावन्त ॥ १ ॥
अनन्त जिन हुआ केवली, मनपर्यव मतिमन्त ।
अवधिघर मुनि निर्मला, दशपूर्व लागि सन्त ॥ २ ॥
आगम बलिया ये सह, भाषे आगम-सार ।
वचन न श्रद्धे तेहना, ते रूलसे संसार ॥ ३ ॥
अनुकम्पा आछी कही, जिन-आगम रे माँय ।
अज्ञानी सावज कहे, खोटा चोज लगाय ॥ ४ ॥

अनुकम्पा-विचार

ढालों नहिं, जालों दुई, अनुकम्पा ही पल ।
 पंचमहाल प्रभाव भी हा ! हा ! त्रिभुवन ताल ॥ ५ ॥
 अनुकम्पा उगायना, मोड़ी माया जल ।
 मूरख मद्धता क्यों पैम्पा कल अमन्ता कल ॥ ६ ॥
 दुःखमि भार पंचम कुगुरु बतावो पन्ध ।
 अनुकम्पा लांटी कहे माम पराये मन्त ॥ ७ ॥
 भाक-बोर मा दूष सम अनुकम्पा बरसाव ।
 मन सौ सावज नाम दे मोला न भरमाव ॥ ८ ॥
 सपाप सावज नाम है, हिंसादिक भी होय ।
 अनुकम्पा बिभा नहीं सावज किंस विष होय ॥ ९ ॥
 अनुकम्पा रक्षा कही क्या कही माकन्त ।
 पाप बड़े कोई तेहने मिथ्या जानो कन्त ॥ १० ॥
 असूत एक सो जाणवो अनुकम्पा पिछ एक ।
 मेद प्रभू मदि भाषियो सुख मोड़ी बेज ॥ ११ ॥
 तो पिछ कुगुरु कयावो, बहिषा बिस्वा बीस ।
 मन्त हूँ करे परपणा कही ग्योरी रीस ॥ १२ ॥

निरवद ने सावद वलि, अनुकम्पा रा भेद ।
 अणहूँता कुगुरु करे, ते सुण उपजे खेद ॥ १३ ॥
 भरमजाल ताडन तणूँ, रचूँ प्रबन्ध रसाल ।
 धारो भवजीवौ । तुम्हें, वरते मङ्गलमाल ॥ १४ ॥

ढाल-पहली



१—अधिकार मेघकुँवर का

(तर्ज—धिग धिग छे उणी नागश्री ने)

घकुँवर हाथी रा भव में,

करुणा करी श्री जिनजी बतार्ई ।

पाणी, भूत, जीव, सत्व री,

अनुकम्पा कीं, समकित पाई ।

अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥ अनु० ॥ १

अनुष्ठा-विचार

मित्र वह ही परमा महिं राखी,

पर-अनुष्ठा रो हुबो रमियो ।

बीस पहर पाग ऊँचो राख्यो,

पर उपकार सूर्मम महिं रसियो ॥ अनु० ॥ १ ॥

पढ़तसंसार कियो तिण विरियो, —

मेथिऊ पर बपनो गुण्य पाव ।

भाठ रमणी तज दीक्षा सीधी,

झाठा अम्पयन गणधर गार्ह ॥ अनु० ॥ २ ॥

(कहे) बलदाजीव वावानस देली

सुखसूर् पकड़ के माय बचावा ।

मूढ़मत्स्यों ही या लाठी कलपना,

बलदाजीव सूतरम बचावा ॥ अनु ॥ ४ ॥

मखल सीधो बी पूर्या भरियो

राम बैठम ने स्थान त मिलियो ।

सीध लाव किय आगा मेले

लाठो—पह मिथ्यावी मरियो ॥ अनु ॥ ५ ॥

सलो न मारथो अनुकम्पा बतावे,

(तो) एक जोजन मण्डल रे मोई ।

व घणा जामे आइने वसिया,

(त्यो) सगला ने हाथी तो मारथा नही ॥ अनु० ॥ ६ ॥

जो) सुसलो न माखा रो धर्म बतावो,

(तो) दूजा (ने) न माखो रो क्यों नहिं केवो ।

जो) सुसला रा प्राण बचाया धर्म है,

तो दूजा जीव बचाया रो (पिण) केवो ॥ अनु० ॥ ७ ॥

जोजन मण्डले जीव जो बचिया,

मन्दमती ताने पाप * बतावे ।

❧ जैसा कि वे कहते हैं —

मौडलो एक जोजन नो कीधो,

घणा जीव बचिया तहाँ आई ।

तिण बचिया रो धर्म न चाल्यो,

समझिन आया दिन समझ न कोई ।

आ अनुकम्पा सावज जाणो ॥

(अनुकम्पा शाल १ गाथा २)

अनुकम्पा-विचार

त्योंरे लेला, सुसलो बैधिया रो,
'धर्म' कहो जी किय विध जाने ॥ अनु० ॥८॥

कलदी मली सूँ ऊँधी लम्पे,
जीब बचाया मैं पाप बचाये ।

हाथी ला जीब बचाइ ने तिरियो,
कलम बन राहा नहिँ पाये ॥ अनु० ॥९॥

२—नेमनाथजी का करुणा भविकार

लीम कान धर नेम प्रसूनी,
आब न करखा निग्रह काये ।

बाल-बह्वारी बाविसमों
होसी गिम्बर जिनजी बचाये ॥ अनु० ॥१॥

जीब दया सब जग में बचाया,
माइजी बिसा मेठय - कसे ।

पंथेष्टि प्राणी रा प्राण बचाया
मत्यह म्हाय प्रभुजी रो राम ॥ अनु० ॥१॥

आदि उपकार रे अर्थे,

आव करण री बात ज मानी ।

तान अर्थे पाणी बहु देख्यो,

जामें भी जीव जाणे बहु झानी ॥ अनु० ॥३॥

रण पशु-पक्षी री हिंसा मोटी,

रक्षा पिण ज्यारी मोटी जाणी ।

यो ही भेद सब जग ने बतावा,

स्नान कियो सूतर री या वारणी ॥ अनु० ॥४॥

मन्दमती कहे जीव सरीखा,

एकेन्द्री पचेन्द्री भेद न दाखे ।

श्रेढी, मोटी हिंसा रा भेद ने,

केई अज्ञानी 'सरीखा' भाखे ॥ अनु० ॥५॥

जो या श्रद्धा नेम री होती,

तो पाणी ने देखि स्नान न करता ।

वाडा रा जीवों थी असंख्यगुणा ये,

तत्क्षण देखि ने पीछा फिरता ॥ अनु० ॥६॥

अनुकम्पा-विषय

पल्लुपंखी गी ब्या (रक्षा) रे मोहिं,

लाम घखा प्रमु परगट कीन्ते ।

अल्प हिंसा पाणी री आय्,

किण्ण धी पचेन्निग्रय मेंमन(ध्यान)रीनो । अनु० ।

झाटी-मोटी हिंसा-रक्षा ग,

झामी तो मेह परगट साथे ।

मन्दमणी रक्षा महिं नाव

तेही ह तो ऊँधी साथे ॥ अनु० ॥

स्नान करी परखीजण वात्स्या

तोरख पर वस्या बहु प्राणी ।

वाड़ा पिंजर में रकिया दुस्निया

सूख (सारथि)स पूछे कल्याणायणी ॥ अनु० ॥

सुख अर्थां य जीव निचार

क्याकर योन दुस्त्रिया कीपा ।

तब ता नागधि इणविध बाँले

न्यामी बचन सुणो हम सीपा ॥ अनु० ॥ १० ।

सहु भद्रक प्राणी प्रभुजी,

व्याह कारण तुमरो मन आणी ।

आमिष (मांस) भक्षी रे भोजन सारू,

बाँध्या छे घात दिल ठाणी ॥ अनु० ॥११॥

सारथि वचने रु ज्ञान से जाणी,

दीनदयालु दया दिल आणी ।

जीवों तणो हित वंछथो स्वामी,

आत्म सम जाण्या ते प्राणी ॥ अनु० ॥१२॥

व्याह रे काज मरें बहु प्राणी,

हिंसा से डरिया निर्मल ज्ञानी ।

सारथि प्रभुजी री मनस्या जाणी,

जीवों ने छोड दिया अभयदानी ॥ अनु० ॥१३॥

जीव छुट्या सँ नेमजी हरप्या,

वक्षीसी दीनी सूत्र में गाई ।

कुण्डल युग्म अरू कण्ठोरो,

सर्व आभूषण दीया वधाई ॥ अनु० ॥१४॥

मनुस्मृत-विचार

पीछे वरपीदान का वीधो,

दान-बया दोनूँ ओसझाया ।

संजम सहस्रात्मन में लीधो,

केवल ले प्रभु मोक्ष सिधाया ॥ अनु० ॥ १८

(अथ) 'जीवों से दित नहीं मेमझी बंधधो',

वीधिकारिक ही साज बसावे ।

वीधिक में दितकारी (अर्थ) * माध्या,

कथन अझानी जाय दिसावे ॥ अनु० ॥ १९

नहि मारण न दित बसावो

(ता) जीव बचाया अदित किम पाव ।

महि मारण निज दित पदिझाणो

मरती बचाया मनुपरदित पाव ॥ अनु० ॥ २०

* साधुदामि किण्हिजो

(उत्तराचक्षर मूल अ २२ गा १८)

अर्थ—माधु शीशः सह मनुज्योत्तम भक्त इति साधु

मोक्ष साधक जीवो दितः जीव विषय विनष्टु ।

जीव बचे जीने रक्षा कही प्रभु,
 देही (जीव) री रक्षा ने दया बताई ।
 म्वरद्वार में पाठ उघाडो,
 मन्दमती रे मन नहिं भाई ॥ अनु० ॥१८॥
 जीवों ने नेमजी नाँय छुड़ाया,"
 मन्दमती एवी बात उचारे ।
 'अवचूरी दीपिका टीका' अर्थ ने,
 मिथ्या उदय थी नाय विचारे ॥ अनु० ॥१९॥
 जीव छुट्या री बचीसी दीधी,
 "अवचूरी दीपिका टीका†" देखो ।

†—“जइ मज्झ कारणा ए ए, हम्मति
 सुवहू जिया । न मे एय तु निस्सेस परलोगे
 भविस्सई ॥ सो कुण्डलाण जुयल, सुत्तग च महा-
 गम्मे... आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स

अमुकस्याविचार

मूल पाठे चत्तीसी मापी,

मंदमती ! जरा ममको लेखो ॥ अनु० ॥

पर्यामर्ह ॥ (उच सूत्र अन्व १२ गाथा १९-२०)

हीनिष्ठ—नदा नेमिकुमारो कि चिन्तातीत्यत्र बनि स

विवाहादि कारणेन पुन सुवदया मपुराजीया इति च
 मारयिष्यन्ते नदा ७ नद विस्तार्य कर्म परस्मैके चरम
 निष्ठ वस कल्याणकारी न मरिष्यति परस्मैके मीढया
 अन्वन्त अभ्यस्तनया एव अभिप्राय अन्वया मन्त्रनचरम
 इत्यान् अभिप्राय ज्ञानत्वात् कुत पूर्व विधा चिन्ता इति धात
 ॥ १९ ॥ स नेमिकुमारो महायया नेमिनाभस्याधमिप्राचा
 सर्वेषु जीवेषु कल्पनेभ्यो मुनेषु सन्तु सार्धानि ज्ञायन्त्यानि
 सार्धदे प्रणाम्यन्ति दद्याति नाम्नाभरन्त्यानि कुण्डल्यनी पुनत
 पुन सूचक इतिदगाक चकारान ज्ञायन्त धर्मेन दाराजीनि
 सर्वाङ्गोपाद् भूयमानि सार्धदे दरी ॥ १ ॥

हीनिष्ठ—महागतेषु परस्मैके भीष्मपत्याचनमभ्यस्तक
 नैवमभिप्रायमन्वया चरम सार्धत्वादिप्राय ज्ञायन्त्यानि

आज पिण या परतख दीखे छे,
मनमाने काम से स्वामी रीझे ।

जब राजी हो वच्चीसी देवे,

परिहत न्याय विचारी लीजे ॥ अनु० ॥२१॥

जीव छुट्या प्रभु राजी न होता,

वच्चीस नेमजी काहे को देता ।

“निर्दय ऐसो न्याय न लेखे”

करुणाकर यों परगट केता ॥ अनु० ॥२२॥

३—धर्मरुचिजी का करुणा अधिकार

कटुक आहार जेहर सम जानी,

परठण री गुरु आद्या दीनी ।

भगवत् कुत पृवविधचिन्तावसर ? एवं च विदित भगवद्वा-
क्यतेन सारथिना मोचितेषु सत्त्वेषु परितोपितोऽसौ यत्कृतवां
स्तदाह—‘सो’ इत्यादि ‘सुत्तकचे’ तिक्कीसूत्रम्, अपर्यतीत
योग, किमेत दैवेत्याह—आभरणानि च सर्वाणि शेषाणीति
गम्यते ।

अनुकम्पा-विचार

लाभण रो निपघ जो कीनो,

धर्मरुचीजी 'तहस' कर सीनी ॥ अनु० ॥ १४ ॥

कटुक आहार तूं किड़ियों मरली,

अनुकम्पा मुनि मन मोंही आली ।

ककम्पा तुम्हा रो भोजन कीया,

धर्मरुचीजी । धन गुणस्थानी ॥ अनु ॥ १५ ॥

गुरु आद्या भिन आहार दियो मुनि,

किड़ियों री अनुकम्पा आली ।

विद्युरमान मुनि ग अदि आद्या,

आराधिक हुआ गुणस्थानी ॥ अनु० ॥ १६ ॥

अन दुवर्धी "धर्मरुचीजी (तो)

किड़ियों बचावण भाव न स्वादा ।

आपों तूं मरता जीव आली ने

पाप दटा मुनि कर्म स्वपाया ॥ अनु० ॥ १७ ॥

जीव बचावा में पाप बगावा,

इस विध भोग (वन) ने मरमा ॥

॥यवादी हानीजन पूछे,

(तो) मंदमती ने जाब न आवे ॥ अनु० ॥५॥

प्रचित मही मुनि विन्दू परठ्यो,

किड़ियाँ मारण रा नहिं कामी ।

॥न बिना किड़ियाँ खा भरती,

जाने बचावण कामी । स्वामी ॥ अनु० ॥६॥

प्रचित भू परठ्यो पाप जो लागे,

तो गुरु परठण री आज्ञा न देता ।

उच्चारदि नित मुनि परठे,

उपजे मरे जीव त्यों माहीं केता ॥ अनु० ॥७॥

तिण री हिंसा मुनि ने नहिं लागे,

सूतर माँहीं गरणधर भाषे ।

धर्मरुचीजी तो विध से परठ्यो,

जिनमें पाप कुतर्की दाखे ॥ अनु० ॥८॥

जो मुनि कड़वो तुम्बो न खाता,

तो परठ्यो दोष मुनी ने न कोई ।

मनुष्याभिधा

कृष्णसागर किदियो रे। लखि,

मिअ तन री परबा। मदि सय ॥ ४७ ॥

या अपिकई जीवदका री,

सुख में गच्छयगजी गार् ॥

“पराशुक्म्य सो आवापुकम्ये ॥”

बीधा ठम्हा में सो, बरसा ॥ ४८ ॥

परजीवो र माख बचावम,

अपना माख री परबा म राख ॥

॥ — बचारी पुरिषवाका ५० त० — ब्रावी

कम्यए आबबीगे नौ पराशुक्म्यए ॥

(अन्तर्गतसूत्र यन्ता क अदे १ ४ सुख २५२

दीक्षा — आवापुकम्यका — आवापित महका अन्तर्गत

मिबकम्यकी वा पराशुक्म्यकी वा निर्धका पराशुक्म्यकी विधि

तार्किका तीर्थरतः अन्तर्गतसूत्रो वा दक्षिणार्धो वेतार्किक

अन्तर्गतसूत्रका रचनितार्किक अन्तर्गतसूत्रका पापात्मा

॥ १०० ॥

जा तो विरूला दूण जग में,

धर्मरुची सा शास्तर साखे ॥ अनु० ॥११॥

४—श्री महावीरस्वामी की गोशालक पर अनुकम्पा का अधिकार

तेवलहानी वीर जिनेश्वर,

गौतमजी को भेद बतायो ।

दयाभाव (से) अनुकम्पा करने,

में पिण गोशाला ने बचायो ॥ अनु० ॥१॥

गोशाल बचाया में पाप होतो तो,

गौतमजी ने क्यों नहिं कीनो ।

“पाप कियो मैं, तुम मत करज्यो,”

यो उपदेश प्रभू क्यों न दीनो ॥ अनु० ॥२॥

फेवली तो अनुकम्पा केने,

मन्दसनी तामे पाप बताये ।

अनुकूल-चिन्ता

ज्ञानी बधन तज मूर्खों का मान,

व नर माइ मिथ्यातम पावे ॥ अतु० ॥३॥

असंजती रो नाम लई मे,

गोराह बचावा रो पाप जो केवे ।

माछी-भूपक पात्र से काइ

स्पष्ट तो जाब मरल नहि बने ॥ अतु० ॥४॥

जुँहाँ अमंयति न बे पावे

पाप जाये तो क्यों नहि केके ।

जब करे म्हाठी क्या छठ जावे

(ता) बीर मे दोष करो क्युन लेख ॥ अतु० ॥५॥

प्राणि आदि अनुकम्पा करने

बैसाधय जूँनों शिर बारे ।

सूत्र मगाती सतक पन्नाइवे

हंकर जानी कवन क्यार ॥ अतु० ॥६॥

प्राणी भूत जीव भन्बालुकम्पा

साखावेइनी रो कारण माया ।

प्रम शतक छठे उद्देशे,
 वीर प्रभू गौतम ने ढाल्यो ॥ अनु० ॥७॥
 षकुँवर अधिकार पाठ यों,
 प्राणी भूतादि जीवदया रो । ।
 ॥ पाठों में असंजति आया,
 पाप नहीं अनुकम्पा किया रो ॥ अनु० ॥८॥
 प्रनुकम्पा उठावन कारण,
 वीर ने द्वेषी पाप बतावे ।
 सूत्र रो न्याय बतावे ज्ञानी,
 तो मंदमती ने जवाब न आवे ॥ अनु० ॥९॥
 (कहे) “दोय साधों ने क्यों न बचाया,
 गोशाला थी बलता जाणी ।”
 (उत्तर) आयुष आयो ज्ञानी जाण्यो,
 न्याय न सोचे खँचाताणी ॥ अनु० ॥१०॥
 विहार कराया तो थारे (पिण) लेखे,
 तेज ते तेज तेज न जणे ।

अनुकम्पा-विचार

क्यों न बिहार कराओ स्वामी,
पात जायता (या) दोनों ही सागे ॥ अनु० ॥

सब करे "निश्चय" ज्ञान में बंधो,
दोनों ही पात यहाँ इस आई ।

जहाँ बिहार कराओ मझी
मक्तिम्बता टासी मझी आई" ॥ अनु० ॥

सरल भाव को ही तुम शरणो
अनुकम्पा में (तो) पाप न आई ।

जानी ज्ञान देखी क्यों बरते
छिप्टी लैंक करते मत भाई ॥ अनु० ॥

अनुकम्पा साधन थापण ने,
सूत्रपाठ रा करण ने छेले ।

मे लेखा अक्षय नीर रे
बोले मिथ्यासी पाप को छेले ॥ अनु० ॥

विस्तार, नीस कापोठ लेखा रा
भाव में साधुपणो मझी पावे ।

थम शतक दूजे उद्देशे,

(तो) वीर में पट्लेश्या किम थावे ॥ अनु० ॥ १५ ॥

‘कपाय कुशील’ रो नाम लेई ने,

अद्यानी भोला (ने) भरमावे ।

मूल-उत्तर गुण दोष न सेवे,

भाव माठी लेश्या किम पावे ॥ अनु० ॥ १६ ॥

कपाय कुशील भाव लेश्या जो माठी,

होती (तो) अपडिसेवी क्यों कहता ।

इण लेखे द्रव्य लेश्या छ जाणो,

भाव लेश्या (रा) शुध भाव वदीता ॥ अनु० ॥ १७ ॥

‘कपायकुशील’ ‘सामायिक’ चारित्रे,

छे लेश्या रो नाम जो आयो ।

प्रथम शतक दूजे उद्देशे,

टीका में तिरण रो भेद बतायो ॥ अनु० ॥ १८ ॥

अनुष्ठा-विचार

किसन मील कापोत द्रव्य लेखा (में),

साधुपणो छुट मावे जाणो ।

व लेखा तिण लेले करिचे,

भावे तो तीनों ही छुट पिढाणो ॥अनु० ॥१५॥

तभी छे लेखा द्रव्य करिचे,

भावे तो तीनों ही छुट पिढाणो ।

कपायकुरील अरु संजम मई

भाब लागी लेखा मव जाणो ॥अनु० ॥१६॥

बगोत्थापन अरु सामाधिक

संयम छे लेखा द्रव्य जाणो ।

या ही म्याय ममपर्यवसान

भावे ता तीनों ही छुट पिढाणो ॥अनु० ॥१७॥

न्य म्याय द्रव्य छे लेखा पावे

द्रव्यी म्याय मुगल न बतावे ।

दण्ड हाव विवक नूँ तले

तोटी लाग न गमभित्त जावे ॥अनु० ॥१८॥

क पडिसेवन कुशील ने,

मूल उत्तरगुण दोषी भाख्या ।

(पिण) तीनू भाव शुद्ध लेश्या में,

मूलपाठे सूतर में दाख्या ॥ अनु० ॥२३॥

युक्तस पिण उत्तरगुण दोषी,

तीन भावलेश्या तिहाँ पावे ।

कथायकुशील तो दोष न सेवे,

खोटी लेश्याँ रा भाव क्यों आवे ॥ अनु० ॥२४॥

त्पातीत अरु आगम विहारी,

द्वयस्थपणे प्रमु पाप न कीनो ।

आचारंग नवमें अध्ययने,

केवलज्ञानी परकाश यूँ दीनो ॥ अनु० ॥२५॥

अनुकम्पा कर गोशालो वचायो,

मन्दमती रे मन नहीं भायो ।

अद्धती छे लेश्या प्रमु रे लगाई,

अनुकम्पा-द्वेषी आल चढ़ायो ॥ अनु० ॥२६॥

अनुकम्पा-विका

५—जिनश्चपि का अभिकार

(कह) “जिनश्चपि कह अनुकम्पा कीधी,

रेखावरी सामो तिख ओरो ।

रौतक बह हेरो क्ताका,

देवी काय तिख लहग में पोरो ।

आ अनुकम्पा सावज जाणो ॥”

(अनु वात १ का ।

सूत्र विच्छेद यों बात ठा करि,

अनुकम्पा सावज बतपाव ।

अनुकम्पा पाठ तिहाँ मर्हि जानका

बघानी मूठ रा गोला बलावे ॥अनु० ॥१॥

अनुकम्पासे गबला जर बोली

जिनश्चपिर्षो रे अनुकुरस जायो ।

अनुक पाठ ललामूठ में,

तो बिछ मोला भरम कैपारो ॥अनु० ॥६॥

एस अनुयोग दुवारे,
 आठवों (रस) पाठ में वीर बतायो ।
 रो वियोग हुवा यो आवे,
 ऐसो श्री गणधरजी गायो ॥ अनु० ॥३॥
 ज रम जिणच्छवियों रे आयो,
 रेणादेवी रा वियोग थी पायो ।
 नूँ सूतर रो पाठ सरीखो,
 लक्षण से भी तुल्य दिखायो ॥ अनु० ॥४॥
 मोह कलुण्णरस में अनुकम्पा,
 भेषधार्यों ए मूठी गाई ।
 शङ्का होवे तो सूतर देखो,
 मत पड़ज्यो मूठा फँद मौई ॥ अनु० ॥५॥
 गणान्न दशमें ठाण रे मौई,
 अनुकम्पा-दान प्रथम बतायो ।
 कालुणी दान रो पाठ छे न्यारो,
 अर्थ दोन्यों रो न्यारो दिखायो ॥ अनु० ॥६॥

अनुकम्पा-विचार

‘कलुष’ (रस) ‘अनुकम्पा’ एक नहीं है,

“आत्मासूत्र” से भेद बताया ।

अनुकम्पा क्या, रक्षा, कदिव,

कलुष (रस) हुआ विबोग में गयो ॥ अनु० प्रभा

रक्त-दिवस क्या दोनों ही न्याय,

ता पिछा में भाला भरमाये ।

कलुषरस ता मोह मलिन है,

अज्ञानी अनुकम्पा में लाये ॥ अनु० ॥८॥

आमबद्धर तीजा रे माँही

हीन आगत रे कलुष बताया ।

दृज अंग प्रथम भुक्तार्थे

पछा अन्वयम में बादीज भाया ॥ अनु० ॥९॥

शाक आगत भाव कलुषरस है

सुतर साम्य लखो नुम धारी ।

कलुषरस अनुकम्पा, कलुषा,

। क मरीची न गूध चकारी ॥ अनु० ॥१०॥

१—हिरण्यगर्भेष्टी का अधिकार

रण्यगर्भेष्टी (देव) अनुकम्पा करने,

देवकि-बालक सुलसा ने दीधा ।

मेशरीरी छठ जीव बचिया,

संजम पालि ने होगया सिद्धा ॥ अनु० ॥१॥

मन्दमर्त्याँ रे मन नहिं भाया,

(तासूँ) हिरण्यगर्भेष्टी ने पाप बताने ।

जावण आवण रो नाम लेई ने,

अनुकम्पा ने सावज गावे ॥ अनु० ॥२॥

जावण आवण री तो किरिया न्यारी,

अनुकम्पा (तो) परिणामों में आई ।

जिन वन्दन देव आवे ने जावे,

(तो) वन्दना सावज जिन ना बतार्ई ॥ अनु० ॥३॥

आवण जावण (से) अनुकम्पा जो सावज,

(तो) वन्दना ने पिण सावज कहणी ।

अनुकम्पा-विचार

(जो) आबण जावण वैदमा नहिं सावज,^१

(तो) अनुकम्पा पिण निबद बरसी ॥ अनु० ॥ ५४ ॥

मंदमती डीपी सरधा सूँ,

अनुकम्पा सावज बठलावे ।

बन्दमा ने वो निबद के वे,

जाये म्हाटी पूजा उठजाव ॥ अनु० ॥ ५५ ॥

बूब करी सुलसा री कम्मा,

त पी वेहूँ बाल बचाया ।

कंस ग भय पी निग्भय कीधा

अमयवान फन बक्ता पाया ॥ अनु० ॥ ५६ ॥

७—अधिकार हरिकशी हूनि का

हरिकशी मुनि गावरी आवा

जोगी निग ॥ बाळणु कीमी ।

जगद्व अनुकम्पक मुनि ग

राभ्यामुक्त समस्त बटु शीमी ॥ अनु० ॥ ५७ ॥

म्पा थी धर्म बतायो,
मूलपाठ रा वचन है सीधा ।

कहे "अनुकम्पा रे कारण,
रधिर वमन्ता ब्राह्मण ॐ कीधा" ॥ अनु० ॥ २ ॥

कम्पा रा द्वेषी बेबी,
मिथ्या बोलचौ मूल न लाजे ।

नी सूतरपाठ दिखावे,
अज्ञानी जब दूरा भाजे ॥ अनु० ॥ ३ ॥

। हेतू जच सुणाया,
(जद) ब्राह्मण बालक मारण आया ।

कुमारी भद्रा वारया,
तो पिण मूढ नहीं शरमाया ॥ अनु० ॥ ४ ॥

। — जैसे कि वे कहते हैं —

त रे पाडे हरिकेशी आया, जशनादिक न्याजे नहीं दीधा ।
स देवता अनुकम्पा कीधी, रधिर वमन्ता ब्राह्मण कीधा ॥
(अनु० बाल १ गाथा १३)

अनुष्ठापितार

मसुरेव न कोप को भावो,

कष्ट वेई प्राप्स्य समम्भवा ।

कूटनहार न जघे कूटया,

शास्त्रर मोहि प्रगट वताया ॥ अनु० ॥

अनुकम्पा भी तो वचन उचारया,

पिया न दया भी प्राप्स्य मारया ।

मधजीर्णों । तुमें सोखी शरघो,

अम्रानी जोडा वचन उचारया ॥ अनु० ॥

८—अधिकार धारणी की गर्भ विषय
अनुकम्पा ।

गर्भ री अनुकम्पा करी रखी

धारणी अजलमा सहु टारी ।

जबणा सँ बैठे न जबणा सँ बूटे

आटाभीठा माजम तज भायी ॥ अनु० ॥

आपन गमना माजम जोकया

गर्भ हितकारी भोजन करती ।

न्ता, भय, अरु, शोक, मोहादी,
दुखदाई जाणी परहरती ॥ अनु० ॥२॥

धो अर्थ करी कहे मूरख,

“धारणीजी अनुकम्पा आणी ।

पने गमता भोजन खाया ॥”

मूठी बात कुगुरु मुख आणी ॥ अनु० ॥३॥

नुकम्पा कर भय, मोह त्याग्यो,

या तो पन्थी दीनी छुपाई ।

भोजन पण मनमान्या न खाया,

मनमान्या खावारी मूठी उठाई ॥ अनु० ॥४॥

॥ जैसा कि वे कहते हैं —

प्रेमकुम्भर गर्भ माँहीं हूँ ता, सुख रे तहँ किया अनेक उपायो ।

धारणी राणी अनुकम्पा आणी, मनगमता अशनादिक स्थायो ॥

आ अनुकम्पा सावज जाणो ॥

(अनु० दा० १ गा० १४)

अनुकम्पा-विचार

मोह त्याग्यो अनुकम्पा रे प्रभे,

तिष्ठत मोह अनुकम्पा कथाये ।

मत्त अथा होय मूछा बोलो,

आँधा री स्वार आँधा जाले ॥ अनु० ॥१॥

भावक य पहला मत्त मोह,

पञ्चम अतिचार प्रभु केवे ।

अरान समय भावपाणी न रेवे,

(वा) अतिचार साग मत्त नहि रेवे ॥ अनु० ॥१॥

भावपाणी आकाश दिमा

(तो) गर्भ भूख मारया किम धर्मी ।

अद्यानी इवनो मदि सोचे,

गर्भ री दया छडाई अधर्मी ॥ अनु० ॥१॥

आ बालक न नाथ भुँगावे

(ता) पेछी मत्त नायिका रो आवे ।

(जा) गर्भ ने बाई भूखो मार

ता नप-मत्त तिष्ठ न किम धारे ॥ अनु० ॥२॥

गर्भवती ने तपस्या करावे,

उपवासादि से उपदेश देवे ।

गर्भ मरे तिण री दया नाँहीं,

प्रगट अधर्म ने धर्म वे केवे ॥९॥

गर्भ आहार माता से आहारे,

‘भगवती’ माँहीं वीरजी भाषे ।

आहार छोड़ावे ते भूखा मारे,

वेषधारी दया दिल नहि राखे ॥१०॥

गर्भ अनुकम्पा वारणी कीनी,

सूतर माँहीं गणधर गाई ।

दया रहित से (तो) दाय न आई,

ज्ञानी अनुकम्पा आछी बताई ॥११॥

गर्भ ने दुख न देणो कदापि,

समदृष्टी अनुकम्पा राखे ।

दोपद चौपद भूखा न मारे,

पहले अन्न में जिनवर भाखे ॥१२॥

अनुकम्पा-विचार

६—अधिकार कृष्णजी की एवं
विषयक अनुकम्पा

मीक म नेम म बन्धम चाम्पा,

बुद्धा म अति ही दुक्तियो आसी ।

जीस्य जरा थी बर-बर कम्पे

कलि न मन अनुकम्पा चासी ॥

अनुकम्पा मावज मत जाया ॥१॥

झररी ईट मीकृष्ण बठाई

बूढ़ा रं पर निम शेष पुगाई ।

दुर्गुण नाराज मरगुण भासक

अनुकम्पा री रीय दित्ताई ॥२॥

माह अनुकम्पा इष्टाने बतावे

आमाजी ऊँचा हेतु लगावे ।

स्वार्थ रहित अनुकम्पा परम स

मावज कष्टि कष्टि अम्म गमावे ॥३॥

६८ ताकण जिन आमा न गवे

तिन मुँ अनुकम्पा सावज केवे ।
 ऊँधी अद्धा श्री ऊँधी सूमे,
 तिणथी कुइतू बहुला देवे ॥ ४ ॥
 अनुकम्पा परिणाम मे आर्डि,
 ईट तोकण किरिया छे न्यारी ।
 (जो) नेमवन्दन री मनमा जागी,
 (तव) चतुरंगी सेना सिणगारी ॥ ५ ॥
 सेन्या री जिन आछा नहि देवे,
 वन्दनभाव तो निर्मल जाणे ।
 (तिम) ईट तोकण री आछा न देवे
 (पिण) अनुकम्पा जिन आछी वखाणे ॥ ६ ॥
 वन्दनकाजे सेना चटाई,
 अनुकम्पा काजे ईट उटाई ।
 सेना चल वन्दन नहि सावज,
 अनुकम्पा ईट श्री सावज नोई ॥ ७ ॥
 "न तोय वन्दन फल भारयो,

अमुकस्या-विचार

वत्तराभ्यस्यमः गुणसीस र मीरी ।

अमुकस्या कस सातावेदमी,

भगवतिसूत्रेऽ जिन पुत्रमार्ग ॥८॥

दामो करज भाव्या वाणो,

ममदशी रे आता मीरी ।

अबद्धवन (संसार पक्ष) सुकाम निर्जरा,

आतादिक मूलर में आद ॥९॥

दुख्य बैये आतानीजन र

अकाम निर्जरा व पिणु पाव ।

आता बद्धो ममकित पाव

जब का जिन आता में आद ॥१०॥

दुखिया नीन बरित्री आली

पंचेन्द्रिय जीवो न मागल पाव ।

माम अर्धी भूत कुल र पीकना

(बी) अतामी जीवो न कायु अमावा ॥११॥

अतादिक (आता) दुखिया आता-न

अचित्त वस्तु देई कारज सार-था ।

पंचेन्द्र जीव रा प्राण वचाया,

हिंसक हिंसादि पाप ज टार-था ॥१२॥

मूरख इणमें पाप बतावे,

जानी पूछे जव जाव न आवे ।

जो हिंसा उपदेशे छुड़ावे,

वाहिज साज देई ने छुड़ावे ॥१३॥

हिंसा छुटी दोनों हि ठामे,

जिण में फर्क न दीसे काँई ।

साज सूँ हिंसा छुटी तिण माँही,

एकान्तपाप री कुमति ठेराई ॥१४॥

माज सूँ हिंसा छुट्या माँही पापो,

तो घोडा दोडावणकु जुक्ति थी लाया ।

ॐ जैसा कि वे कहने हैं —

भाप राजा ने हम कहै, सौंमलज्यो महारायजी
घोड़ा वेदा कमोद ना, में ताजा किया घरायजी

भनुष्या-विचार

चित्त भावक परवरी राख न,

केसी समझ जर धर्म बतायो ॥१५॥

घोड़ा बोझाई राजा न स्थायो,

इस में तो पगलाली बताव ।

(तो) साज बेई न हिंसा सुझावे,

(जामे) पाप बतावतों साज न आव ॥१६॥

सुमुदि प्रधान की अंतरा नु राजा

पाखी परिचय की समझाणा ।

वा पण धर्म कलाली जाना

आरंभ हूबो त अलग पिछागुन ॥१७॥

धर्म बकाही चित्त कर ॥१८॥

विजयिष क्वाच राज न सांभळणो बनारीजी ।

चित्त मरीणा रुपगारिणा विरह्य हूब सासारीजी धर्म ॥१९॥

भाव भीने त प्या हूँता ते देख अगरी र्व देवी ।

अवसर वरते नूबो बोझा कितदाक बीदेजी धर्म ॥२०॥

(परदेसी राजा की साथ वाक-१)

गाजर मूला रो नाम लेई ने,
 कुमती भोलाँ ने भरमावे ।
 अचित, देई मूलादि छुडावे,
 जारी तो चर्चा मूल न लावे ॥१८॥
 अचित साहाय अनुकम्पा जो होवे,
 (तो) सचित समष्टि क्याँने खवावे ।
 ऊँधा हेतु अणहूँता लगावे,
 जानी रे सामे जवाब न आवे ॥१९॥

**१०—अधिकार धूप में पड़े हुए जीवों
 के सम्बन्ध में ।**

तडके तडफत जीवाँ ने देखी,
 दया लाय कोई छाया* में मेले ।

❀ जैसा कि वे कहते हैं—

ऊपाडी जो मेले छाया, असजती री बियायच्च लागे ।
 या अनुकम्पा साधु करे तो, त्वारा पाँचो हि महाव्रत भागे ।
 आ अनुकम्पा सावज जाणो ॥१८॥

भनुषम्यभविचार

अद्यानो तिष्ठ मे पाप बताने

त्वोऽग शौचं कुगुल यो लेले ।

अनुकम्पा सावज मनु माणो ॥१॥

भगवति पन्द्रहर्ष शतक में

धीर प्रभू गीतम ने आले ।

तप तप वैसाधण तपसी,

बले-बल पारणो रुल्ल ॥२॥

सूर्य आताप ना लतों खूबों

ताप लाग्या सूर नीच पड़ता ।

प्रायसी, मूठ जीव दया भाव बी

त्पानि कठाइ मस्तक धरता ॥३॥

बाल तपस्त्री दया खूबों पर,

तड़का मूर् लेकर मस्तक मले ।

जैन रो भय सं पाप बताने,

दया कठावण माया लले ।

तप तो दिखरा गिरावणयेछ ।

अनुकम्पा सावज कहि ठेले ।

अनुकम्पा प्रभु निरवद्य भाखी,

ज्ञानी न्याय सूतर से मेले ॥५॥

कीडा-मकोडा ने छाया मे मेले,

असंजती री व्यावच केवे ।

भेषधारी कहे “साधु मेले तो,

त्याँरा पाँचो ही (महा) व्रत नहिं रेवे” ॥६॥

चतुर पूछे कोई भेषधारी ने,

जूवाँ असजति ने थें पोखो ।

नीचे पड़ी ने पाछी उठावो,

महाव्रत रो थारे गहो न लेखो ॥७॥

दशवैकालिक चौथे अध्ययने,

असजीवाँ अनुकम्पा काजे ।

माधु ने प्रभुजी विधी बतावे,

मूलपाठ में इगविध राजे ॥८॥

उपासग बलि उपधी माई,

अमजीव देग दया दिल लावे ।

अनुकम्पा-विचार

रक्षा र ठाम त्योंन मस्त

हु त्व र ठाम महीं परनाथ ॥९॥

जीव बचाया जा महात्रत भागे,

(तो) शास्त्र में आका प्रभु किम दब ।

‘भारीकमा लागें मं भीष्ट करख म’

वया में पाप मिथ्याती केवे ॥१॥

११—अधिकार अमयकुमार की

अनुकम्पा का

अमयकुंवर तप तेला करन

प्रद्युम्न महित पोसो कर कठो ।

पूरब संगति ब्रह्म न समरूपो

मन एकमिह राखो खैंठा ।

अनुकम्पा साजस मस्त जाणो ॥१॥

हीज दिन रे कह प्रभावे

आसण बलतां बेकता बन्ध ।

तला री अनुकम्पा आर्य,

गुणरात्री गुना तप रे तन्त्र ॥२॥

“अनुकम्पा कर वरसायो पानी,”

मिथ्यामती ण्वी भूठी भाखे ।

अनुकम्पा तो तप री आई,

इणरो तो नाम छिपाई ने राखे ॥३॥

जल वरसावण करज न्यारो,

तिहाँ अनुकम्पा रो नाम न आयो ।

भूठा नाम सूतर रा लई ने,

अनुकम्पा रो धर्म उठायो ॥४॥

(तप) सयमीरी अनुकम्पा करे कोड,

समण माहाण पर प्रेम ज लावे ।

उत्तर वैक्रिय कर गुणरागी,

दर्श उमग धरी देव आवे ॥५॥

दर्शण अनुकम्पा गुण राग तो,

निर्मल श्रीमुख जिन फुरमावे ।

वैक्रिय वरण आवण जावण री,

छिपातो तिण श्री न्यागी बतावे ॥६॥

अनुकम्पा-विचार

किया याग गुण-याग न साधज,

निम अनुकम्पा साधत्र नौहीं ।

मौनो म्हाय सुखि मूढ़ मझके,

खोवा पक्ष री ताखु मचाई ॥७॥

१२—अधिकार पशु बाँधने-झोड़ने का

(घड़े) 'भाधु बी अनघ प्रखजीरों न

अनुकम्पा भी बाँध ने लावे ॥

धौमात्मी करह भाधु न भाध

गृहस्थ रे (पिछ) बाध रो बन्ध बाँध" ॥१॥

४ ईमा कि वे कहत है —

भाधु बिना अनेरा मर्ब जीरों री

अनुकम्पा जाले भाधु बाँधे बैपावे ।

निज ने बिजगीय है बाधने उदेरी

भाधु ने बीमात्मी मावधिल भारे ।

भा अनुकम्पा साधत्र नौहीं ॥

(स. भा. १. पा. १३)

अनुकम्पा सावज इण लेखे,

अन्नानी यो बात उचारे ।

‘निशिथ’ पाठ रो अर्थ ऊँ वो कर,

भोला डुवाया मिग्या मक्कधारे ।

अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥२॥

न्याय सुणो हिवे निशिथ पाठ रो,

“कोलुणवडिया” त्रस जो प्राणी ।

ढाभमुज चरमाठि रे फौंसे,

बाँधे न छोड़े सूतर री बाणी ॥३॥

डाभ चाम लक्कड़ रा फौंसा,

माधु रे पास में रेवे नाहीं ।

(तो) माधु इण फौंसे किम बाधे,

पण्डित न्याय तोलो मत्तमाहीं ॥४॥

चूरणी भाग्य में न्याय वंतायो,

मेजातर ग पर गी या ग्रानो ।

जिणगी जागा मे साधु उतरिया,

तहाँ ये जोग मिले साजानो ॥५॥

अनुकम्पा-विचार

साधु आचार से आसुर न माने,

अप वा साधु से घर सँभलाने ।

स्वैय मज्जा न काम आताँ,

बांधख ओढ़ण पशु रा बतावे ॥३॥

साधु कह हम बाँधों न छाड़ों,

गृहरथ रा पर दी बिन्ता न लावें ।

तब ता मुनि से प्रापयित नही

बांध छोड़े तो अनुकम्पा आवे ॥४॥

विशिष्ट अयोग्यावस्त गवाहिक

अमजीबों से अर्थ पिछाण्यो ।

बरणी भाव्य में अथ रा कीसो

जना कई दरवा में आणा ॥५॥

ईन्द्रियारिक जीव तरस रा

अमुक गन्ता में अर्थ बतावा ।

ता अथ मिलना नहिं बीन

निपरा म्याम मुगा धिन पावा ॥ ६ ॥

लट, कौड़ी नं माखी, माखर,
 द्वेन्द्रियादिक जीव पिछाणो ।
 (जाने) चाम वेंत फासे बाँधण रो,
 अर्थ करे ते मन्दमति जाणो ॥१०॥
 अशुद्ध टक्का रो ताण करीने,
 नार्ही हज्य सँ न्याय विचारे ।
 “टीका में नहीं तो टक्का में क्यों थी”
 पोते पण एहवी वाणी उच्चारें ॥११॥
 यो ही न्याय यहाँ पण जाणो,
 टीका विरुद्ध टक्को मत ताणो ।
 भाष्य चूरणी थी मिले ते तो साँचो,
 विपरीत तो विपरीत बख्खाणो ॥१२॥
 ‘कोलुण वडिया’ सूत्र पाठ रो,
 चूरणी भाष्य थी अर्थ विचारो ।
 बाँध्या छोड़्या अनुकम्पा न रेवे,
 यारो ॥१३॥

कुन्ध कुन्ध बाप पौधस्य में लाग,

भाष्य, धूरणी टरुषा में देखा ।

आपणी पर ही पात ज दाने,

तिगुरो बताया इय विष लगो ॥१४॥

बोध्या धी पशु पीदा पाव,

आँटी रागव रग मरजार ।

अन्तगाव बोध्या धी लाग

तककता अनि ही दुःख पाव ॥१५॥

पर ही विराधना या बान्नाह

माधु धन ही दिव मुखा जाला ।

किण कारण मुनि छोड़े नोही,

तिणरो विवरों भाग्य में देखो ।

इंध्या वह परजीवों ने मारे,

कूबा खाड में पडवा रा लेखो ॥१८॥

बोर हरे अटवी में जावे,

सिंहादिक छूटा ने मारे ।

इत्यादि हिंसा रा दोष बताया,

साधु तो चोखे चित्त धारे ॥१९॥

छूटा सँ प्राणी दुखिया होसी,

तो दयावान छोड़न नहीं चावे ।

साधु तो अनुकम्पा रा सागर,

वे छोड़ण मन में किम लावे ॥२०॥

(जो) बाँधे छोड़े अनुकम्पा न रेवे,

तिग थी चौमासी प्राद्वित आवे ।

करुणा, दया, शान्ति ऋषि चावे,

तिण रो दरुड मुनी नहि पावे ॥२१॥

बनुकम्पा-विचार

कुण्ड कुण्ड दोष बाँधण में लाग,

माध्य, चूरखी दम्बा में बखो ।

आपणी पर री पात न होवे,

विणरो बत्तायो इय विष लेखो ॥१४॥

बाँझा भी पणु पीड़ा पावे,

बाँटी लाग रन मरजावे ।

अन्तराय बाँझा भी लाग,

तइफइतो अति ही दुःख पाव ॥१५॥

पर री विरुधमा वा बलारै,

साधु पात री दिवे सुमा बानो ।

सींग भी मार न मुर भी बाँध,

क्रोध बइया करे सुनि री पाला ॥१६॥

साक्षों में विष लघुता लागे

साधू बाहर डाँडा बाँध ।

इय करम बीमारी प्राप्तिन

(विणु) अछानी ना ऊँची साँध ॥१७॥

अनुकम्पा-विचार

अनुकम्पा लाखों से प्राप्ति केने,

मूठा नाम सुतर से लंब ।

भाष्य, सुतर, चूरणि दृष्टा में, ।

कठिं म वास्वो तो पिण केने ॥१८॥

अनुकम्पा से द्वेपी वेपी

मूठा नाम लेता मर्हि साज ।

अज्ञान बंधेरे त्याग उपों कूके

ज्ञान प्रकारा करकर भाज ॥१९॥

साइ में पड़ता न अग्नि में जलता

मिह की गला माधू जाय ।

साय क्या बोले साइ से

प्राप्ति नार्हि अथ प्रमाण ॥२०॥

प्राचीन भाष्य अरु चूरणि में

कर्मणानुकम्पा करणी नार्हि ।

मर्गा जाल बाध अरु छाई,

इतिविधि में कसु प्राप्ति नार्हि ॥२१॥

त्रम अर्थ वेन्ट्रियादिक करने,

दया थी बाँध्या दोष बतावे ।

(पोते) पागी में माखी ठर मुरझाई,

कपडा में बाँध ने मूर्छा मिटावे ॥२६॥

मूर्छा मिट्याँ मूँ छोड़ उड़ावे,

तिण मे तो ते पिण धर्म बतावे ।

(तो) अनुकम्पा थी बाँध्या छोड़्या में,

पाप परुष के भेष लजावे ॥२७॥

साधू पण त्रसजीव कहीजे,

कारण करुणा थी बाँधे ने छोड़े ।

भेष-बाख्यों रे अर्थ प्रमाणे,

पाप हूँमी बाँरी शरधा रे जोड़े ॥२८॥

“साधू ने करुणा थी बाँध्या छोड़्या मे,

धर्म हुवे” यूँ ते पिण बोले ।

अर्थ कहो यह क्यों थी लाया ?

मूतग पाट में तो नहिं गोल्ले ॥२९॥

तब तो कहे मूँ जुगली म केवों

पण्डित स्योंने उत्तर देव ।

“भात्य ब्रूणि” “रुका” री युक्ति,

क्यों नहि माना ? सुगुण यों केवे ॥३०॥

मन र मत भवहीया बोल

हुद-वगम्यता सूत्र न देखे ।

माखी न तो बौध बह छोड़

दूजा जीवों री कृपुक्ति क्यों मल ? ॥३१॥

मृत्र निरीब उहेरा दागरा,

इतर नाम की हुन्द मचाया ।

निगु काग्य वा मैं किना सुलासो

मृत्र ग स्योंना अप्य बताया ॥३२॥

निगु पण्ड्या अनुष्ण्या म रेव,

निगु रा प्राणधित निग्रय जाग्या ।

या या क्काद्यों जीव बप ता

नरह मर्ग नवा र्मैवानासो ॥३३॥

१३-अधिकार व्याधिमिटावण विषयक

व्याधि बहुत कोटादिक गुण ने,

वैग अनुकम्पा तिणरी लावे ।

पासुक औपध दु ख मिटावे

निर्लोभो ने पिण पाप बतावे ।

अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥१॥

दु ख न देखो तो पुन मे चोले,

दु ख मिटावा में पाप बतावे ।

दु ख मिटायो तिण दु ख न नोधो,

मन्दमती क्यों पाप लगावे ॥२॥

जैन रा देखो अन्न उपाङ्गो,

वेद पुराण कुरान में देखो ।

दु ख न देखो अरु दु ख मिटाणो,

दोनों रो शुद्ध बतायो लेखो ॥३॥

दु ख मिटावा में पाप घणेरों-

मन्दमती बिन दूजो न चोले ।

अनुकम्पा पितार

पोर चँपारो दिरया में दायो,

भासों ने नाम दिया मरुमोस ॥४॥

दुख रई काई दुख मिटावे,

तिरु रा नाम तो मुख पर लाव ।

दुख दिया बिना दुख मिटाव,

इज रो ता नाम मन्दि द्रिपाव ॥ ॥

साधू बी बूजा ने छाता जो देवे

पाप लग अझामी केव ।

नारिभाग दृष्टान्त रई ने

दुखि केई मिथ्यामत सवे ॥५॥

नारिभोग पंचेद्रिय हिसा

मैल करण दोनों रे दोवे ।

बो दृष्टान्त दया (अनुकम्पा) रे जोवे,

जो बूवे बो मद-मद रावे ॥६॥

राग सुहावण तिरिया सबख,

गनों न कोई सरीला केव ।

त्यों दुर्गुण रो भेद न जाण्यो.

मोटा हेतु कुपन्धी देखे ॥ ८ ॥

रोग तो वेशनाकर्म उद्यम में

नारिभोग मोहवर्म में जाणो ।

गग मिटाया दुःख मिट जावे,

नारिभोग मोह वधवा रो जाणो ॥ ९ ॥

रोग मिटाया में पाप घणैरो,

नारीभोग समान बनावे ।

माता रो भोग अरु रोग मिटावण,

तिगरी श्रद्धा में मरीणो थावे ॥ १० ॥

कोई माता वन रो रोग मिटावे,

कोई तिण थो भोग कुकर्मा चावे ।

दोनो पापकर्म रा कर्त्ता,

तुल्य कहं ते धर्म लजावे ॥ ११ ॥

लब्धिधारी री लब्धि प्रभावे,

रोग मिटे सतर में घनायो ।

गो मनुष्य मरण श्री ब्रचिया,
मिथ्याती इणने दुर्गुण केवे ॥१६॥

। री मेन्या देश ने मारे
स्वचक्री नृप गो भय थावे ।

गुणतीम अतीम प्रभावे,
भीति (भय) मिटे जन शान्ति पावे ॥१७॥

र' राजा री मेना आठे,
देश ल्हटे वो दुख अति देवे ।

सु परतापे भय मिट जावे,
तीम अतिशय सत्तर केवे ॥१८॥

अति वर्षा बहु जन दुख पावे,
नदी री बाढे जन घबरावे ।

जेण देशे श्री जिनजी विराजे,
तिण देशे अतिवृष्टि न थावे ॥१९॥

बिन वृष्टी दुख जग में मोटो,
दुकाले होवे धर्म रो टोटो ।

अतिशय अतिश मे प्रमुक्रे,

मुमिजे शान्ती सुख माने ॥२०॥

अनरधमृषक रक्त री बुद्धि

बहु उपलब्ध दुधा जिम्य वरा ।

बिम्बानुर दुम्विया अतिभारी,

बद्धा दिव शास्ती होव कैस १ ॥२१॥

निम काल श्री जिनजी पपाखा

विम नुम्य निमदर्शों ॥ दलिषा ।

परमस्य (प्रम्वर) गुण जिनजी र आगे,

अय-अय बोव जन महु मिमिया ॥२२॥

म्याग म्याम मर कोइ भगन्तर,

विबिध-म्याधि विम वेरा व्याइ ।

प्र १ पग धरता म्याधि न रहे

लक्ष्य शास्ती दरा में छारि ॥ २॥

ममचार्यग श्रीतोम में दम्या

या कृतान्त तो पाठ में गाथो ।

मौ-मौ कोमा उपद्रव टलतो,
 केवलजानी आप बतायो ॥२५॥
 दलियो उपद्रव दुर्गुण जाणां,
 तो प्रभुजी रा जोग मूँ दुर्गुण मानां ।
 प्रभु जोग दुर्गुण नहि होंवे,
 तो मिटियो उपद्रव गुण मे वसानां ॥२६॥
 आन रुद्र जीवों रा टले अरु,
 प्रभु ऊपर शुद्ध भाव ज आवे ।
 परतस लाभ यो दु ग्व मिश्रा मूँ,
 प्रभु अतिशय गणवर करमावे ॥२६॥
 “रायपसेणी” सूतर में देगो,
 चित्त “केशीमुनिजी” ने धोले ।
 परदेशी ने धर्म सुणाया,
 किण ने गुग होसी बिवरो खोले ॥२७॥
 दोपद चौपद जीवों ने बहुगुण,
 समण माहाण भिखारी रे जाणो ।

अनुकम्पा विचार

वश न प्रसुखी बहु गुण होसी,

तिण कारख प्रसु घन बलाजा ॥२८॥

जीव बरा अरु समख मिखारी (ग),

रामा बी योरो दुःख मिट जासी ।

आगत मिटसी गुण में भाव्यो,

काख्यो जीव घणा सुख पासी ॥२९॥

मिम राग आगत मिटिया पिण गुण में,

भव जीवो । राहु मत आव्यो ।

बिन स्वाख बी बैष मिटावे

ता तिण म गुण (पिण) मिमय आव्यो ॥३०॥

बेग स्वाख बुद्धि आरम्भ न,

गुण रा मुमिजन नोव बसाण ।

पर उपकारी दुःख मिटावे,

तिण में उकत पाप न जाये ॥३१॥

आरम्भ कर कोई (मुनि) बन्दम जावे,

अवका स्वाख बुद्धी आव्यो ।

आरम्भ स्वारथ गुण में नौही,

वन्दन भाव तो गुण में जाये ॥३२॥

शुद्ध भाव अरु विन आरम्भ थी,

मुनि वन्धा अधिको फल पावे ।

तिस कोई रोगी रो रोग मिटावे,

(तो) वैद्यादिक गुण रो फल पावे । ३३॥

**१४--अधिकार साधु की लब्धि से
साधु की प्राण रक्षा का**

लब्धिधारी रा 'खेलादिक' सूँ,

सोले रोग शरीर सूँ जावे ।

साधू ने रोग सूँ मरता वचावे,

(तो) ज्यो पुरुषों ने भी पाप* बतावे ।

अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥१॥

ॐ जैसा कि वे कहते हैं —

लब्धिधारी रा खेलादिक सूँ,

पाप अन्तराह प्रभुजी मासपा,

अनुकम्पा पाप कठिंहि न चास्यो ।

घटा धर्म न भ्रष्ट करण न,

तो पिण घोषो कुनुरौ चास्यो ॥८॥

लघिधारी रा सेख रे फरमे,

साधु रा रोग मित्र्यो कुण पापा ।

साधु बधिया रा पाप बतावो

तां स्वाया-पीसा में धर्म क्यों बापा ॥९॥

लघिधारी रा शरीर र फरस

राग सू मरसो साधु बधिया ।

लघिधारी न पाप बतावे,

कुनुरु खाने पात्रराह रधियो ॥१०॥

सोख ही रंग करसि सू जाले ॥

बल जाले इन रोगों सु साधु मरसो,

अनुकम्पा आवी मही रोग रीजाले ।

जा अनुकम्पा साधव जानो ॥

(अनु का १ गा २५)

गुरु रा चरण शिष्य नित फरसे,

आवश्यक अध्ययन तीजा देखो ।

देह फरसिया धर्म बतायो,

आनंद चरण फरसियाँ रो लेखो ॥५॥

लब्धिधारी री काया फरसे,

धर्म तो प्रभुजी प्रगट बतायो ।

फरसणवालों ने धर्म हुबो तो,

लब्धिधारी ने पाप क्यों आयो ॥६॥

उत्तराध्ययन ग्यारवें मॉई,

रोगी ने शिक्षा अजोग बतायो ।

लब्धिधारी रा चरण फरस ने,

रोग मिश्या शिक्षा गुण पायो ॥७॥

रोग मिश्याँ गुण चरणफरस गुण,

किणविध अवगुण कुगुरु बतावे ।

गुण में अवगुण री थाप करी ने,

मिथ्याती पोल में ढोल बजावे ॥८॥

अनुकम्पा-विचार

१५ — अधिकार मार्ग मूखे हुए को माधु
किस कारण रास्ता नहीं बताये

अन्धी र मोहि गृहस्थी भूस्वों,

माधु ने मारग पूछ्य सग ।

किय कस्य मुनि माहि बताये,

अर्थ माय्य" में दूखो सग ।

अनुकम्पा साबज मस आयो ॥१॥

मुनि र बताय मार्ग जायों

चार कदाचि न उएन स्य ।

मित्रादिक आपद दुख दन

नित्य उपमर्ग ही माधु भी छुट ॥२॥

वा मित्र रम्य गृहस्थी जायों

सग आदिक अर्थों न मार ।

मित्र कारण दयायन्त मुनीश्वर,

मार्ग बतावा ग परिचय दारे ॥३॥

१५—अधिकार मार्ग मूखे हुए को साधु
किस कारण रास्ता नहीं बतावे

घटकी रे मोंदि गूढ़स्थी मूखों,
साधु ने मारग पूछख साग ।
किण कारण मुनि नाहिं कठावे,
“अर्थ भाष्य” में देला साग ।
अनुकम्पा सावज मत आशो ॥१॥

मुनि र बताय मारग जाखों,
बार कगचिन् उणन हूट ।

निद्रादिक् थाफ्द दुःख दब
तिण उपसर्ग थी प्राण भी हूट ॥२॥

वा दिख रस्त गूढ़स्थी जाखों,
मुग आविष्क जीर्ण ने मारे ।

तिख कारण दवावन्त मुनीश्वर,
मार्ग बताया रो परिचय टारे ॥३॥

द्विचारी मुनि सब जीवों रा,
 अनुकम्पा से प्राणित नौहीं ।
 समष्टी से सूत्र माने,
 श्रुतु री बात देवे किन्कशी ॥ ॥६॥

प्रथम वाक्य सम्पूर्णम्



अनुकम्पा कारण काइ (गृहस्थ)

सावज कर जा (अइ) काम ।

(वि) कारण अनुकम्पा नहीं,

करुणा (अनुकम्पा) निरवध नाम ॥९॥

सावज कारण मेवसों बन्दन सावज नौय ।

अनुकम्पा निमजानम्यो, निरमल ध्यान लग्नय ॥१०॥

भाषा सुमसी थी कर बन्दन ना उपद्रा ।

विम अनुकम्पा ना करे, मुनि रेखा न द्वेय ॥११॥

गङ्गी पिछ समझू दुय, विरक्त मन में लाय ।

बन्दन अनुकम्पा कर बैसा ही फल पाय ॥१२॥

कुगुठ कुकी लेंच सू अनुकम्पा छवाय ।

बन्दन रा ता लासुपी जोर सू मौहे थाय ॥१३॥

कारण कारण भय त कुगुठ खोल भाय ।

कारण न भाग करि, करुणा रीति छ्ठाय ॥१४॥

बन्दन कारण मगट म, बाहुविध आरंभ थाय ।

१५

अनुकम्पा कारण काइ (गृह्म)

सावज कर जो (अइ) काम ।

(८) कारण अनुकम्पा नहीं,

करुणा (अनुकम्पा) निश्चय नाम ॥९॥

सावज कारण सेवर्षे बन्दन सावज न्येय ।

अनुकम्पा विमजानम्यो, निरमल ध्यान लगाया ॥१०॥

भाषा सुमती थी कर, बन्दन ना उपवरा ।

विम अनुकम्पा ना कर, मुनि रेखा न द्वेप ॥११॥

गहरी फिए समभू हूय विवेक मन में लाय ।

बन्दन अनुकम्पा कर, बैसा ही फल पाय ॥१२॥

कुगुर कूड़ी जेच सँ अनुकम्पा उवाप ।

बन्दन ग ना लालुपी आर मूँ मोड पाय ॥१३॥

कारण कारण मरु त कुगुर जाल नाय ।

कारण न आग करि, करुणा रीति उठाय ॥१४॥

बन्दन कारण प्रगट म, बहुविध आरंभ थाय ।

दूसरी-ढाल

१—अधिकार जीवों रो दया स्वातर
दयावान मुनि ने बाँधने झोड़ने का ।

(दर्ज—हीने सम्मलम्बो नरसार)

हाम मूँजादिक र फाँने

गाय भेँसारि बँप्पा बिमास ।

जो छोड़ू रख दुख पास

अटवी में बोड़ी न जाम ॥ १ ॥

रख सिद्धादिक यान कावे,

म्हारी अनुकम्पा उठ जावे ।

अनुकम्पा घणी घट माँही

तथी मुनिवर छोड़े नाँही ॥ २ ॥

साइया अनुकम्पा उठ जाव,

मुनिजी न प्रायद्विस्त जावे ।

इम बाँध्या सूँ तडफे प्राणी,
रखे मरजावे इसडी जाणी ॥ ३ ॥

इण कारण बाँवे नाई,
अनुकम्पा घणी घट माँई ।
मरता जाणे तो बाँधे ने खोले,
दोष नाहीं अर्थ यूँ बोले ॥४॥

साधुजन रा पातरा माँहीं,
चिडियो उन्दिर पडियो आई ।
भेपधारी पिण काढणो केवे,
बिन काढ्याँ दया नहिं रेवे ॥५॥

(तो) अनुकम्पा थी छोड्याँ पापो,
एहवी खोटी करो किम थापो ।

अनुकम्पा निरवद्य जाणो
तिणरा साधु रे नहिं पचखाणो ॥६॥

साधू पातरा सूँ जीव काढे,
तामे धर्म कहे चोडे-धाडे ।

दूसरी-ढाल

१—अधिकार जीवों रो दया स्वातर
दयावान मुनि ने बाधने छोड़ने का ।

(वज्र—हीरे सामलम्बो तरनार)

डाम मूंगारिक रे फीम,

गाय मेमादि बैष्ठा विमाम ।

जा बाधो गद दुख पास,

अन्धी में रोई न जास ॥ १ ॥

रत्न मिहारिक पान दास

गहमी अनुकम्पा उठ जास ।

अनुकम्पा धर्मी घट मोड़ी,

मधी मुनिक बाध नोड़ी ॥ २ ॥

बाधना अनुकम्पा उ जास

मुनिजी न प्रायश्चित्त भास ।

डम बाँध्या सूँ तडफे प्राणी,
 रखे मरजावे इसड़ी जाणी ॥ ३ ॥
 इण कारण बाँवे नोई,
 अनुकम्पा घणी घट माँई ।
 मरता जाणे तो बाँधे ने खोले,
 दोष नाहीं अर्थ यूँ बोले ॥४॥
 साधुजन रा पातरा माँहीं,
 चिडियो उन्दिर पडियो आर्ड ।
 भेषधारी पिण काढणो केवे,
 विन काढ्याँ दया नहिं रेवे ॥५॥
 (तो) अनुकम्पा थी छोड़्याँ पापो,
 एहवी खोटी करो किम थापो ।
 अनुकम्पा निरवद्य जाणो
 तिणरा साधु रे नहिं पचखाणो ॥६॥
 साधू पातरा सूँ जीव काढे,
 तामे धर्म कहे चोढ़े-धाड़े ।

अमुकम्पा-विचार

मस्ती यदि जीव दुकावे,
पाप लागो रो इस्तो उकावे ॥७॥

मस्ती रे भूँज रा पासा,
पशु वैष्वा पावे आसा ।

सो अण्णे बो नाहिं होल,
पाप लागो सुखर यों बोले ॥८॥

ओ लागें तो पाप खूँ बणियो,
हुबो अमुकम्पा रो रमियो ।

अपभारी छलटी सिखावे
मस्ती (रे) छोड यों पाप बकावे ॥९॥

तब उत्तम नर काई माणी
भेषभार यों म बोख्यो वाणी ।

धार वातरादिक रे मोहें,
जीव तदक रया दुख पाड ॥१०॥

मिगल जीवता फाडा के मोहें,
क मग्पा दवा अर्मजमि माण्ड ।

कहे जीवतो काढाँ में प्राणी,
 नहिं काढाँ पाप लेवो जाणी ॥११॥
 साधु नहिं काढे तो पापी,
 या तो ठीक तुमे पिण थापी ।
 (जो) जीव छोड़्याँ में पाप न लागे,
 दयाधर्म रो काम है सागे ॥१२॥
 तो ग्रस्ती ने पाप म केवो,
 छाँड मिथ्यामत तुम देवो ।
 साधू उपधी सूँ जीव मरजावे,
 तिणरो पाप साधू ने थावे ॥१३॥
 गेही उपधी सूँ जीव मरजावे,
 तिण रो पाप गृहस्थ पिण पावे ।
 साधु छोडे तो साधु ने धर्मो,
 गेही ने किम कहो पापकर्मो ॥१४॥
 उपकरण (पिण) दोनाँ रा सागे,
 नहिं छोड़्याँ पिण पाप लागे ।

साधु न हा बतावे धर्म,
 धस्ती मे कहे पापकर्म ॥ १५ ॥
 अनुकम्पा एक बतावे,
 साधु भावक री एक सिखाय ।
 अमृत री रूपमा दबे,
 दोनों मेर्या सम सुख केवे ॥ १६ ॥
 जा बात खरी छ धारी,
 हा यहाँ मेरु करो क्यों भारी)
 साधु न धर्म बतावो
 धस्ती मे क्या पाप लगावो ॥ १७ ॥

*—जैसा कि वे कहत हैं—

जो अनुकम्पा मानु करे तो नरान बन्धे कर्म ।
 निच मीठम भावक करे तो निजमे पिण होमी धर्म ॥ १॥
 साधु भावक बीनी लगी एक अनुकम्पा जाय ।
 अमृत राहुने मारनो निजरी म करा ताज ॥ २॥

(अनु काल २)

निज बोली रो बन्धन काँई,
 मोह मिथ्या री छाक रे माँही ।
 ज्ञान केरो अंजन आँजो,
 अब मिथ्या बोलताँ लाजो ॥ १८ ॥

२--अधिकार लाय बचाने का ।

(कहे) “अस्ती रे लागी लायो,
 घर वारे निसरयो न जायो ।
 बलताँ जीव ‘विलबिल’ बोले,
 (कोई) साधू जाय किवाँड न खोले” ॥१॥
 उत्तर--(कोई) खोले विण ने पाप बतावे,
 (बली) धर्म शरध्या मिथ्यात लगावे ।
 नर बचिया पाप कहे मोटो,
 जाँरो हिरदो हुवो घणो खोटो ॥२॥
 थीवग्वल्पी मुनि पिण खोले,
 ठाणायंग चोभंगी रे ओले ।

अनुकम्पा-विचार

हार स्योम यादर निकलखा,
धीवरकम्पी रा कल्प रो मिरखो ॥१॥

गर ही अनुकम्पा लावे,
हार स्योम्या माछित नही आवे ।

अरानी संगट्टा ग मुनि टारे,
अनुजों ने तो माधु उवाते ॥४॥

पाव तो निकल मर जावे,
दूका मरणों ही दया न आवे ।

उपन तो निमदयी जण्यो,
ठाखाबाग रा ही परमाण्यो ॥ ५ ॥

अनुकम्पा हो दण्ड न आवे
झानीजन परमाण्य पाव ।

अनुकम्पा हो कण्डकण्ठताव

३ — ईया कि ने कहने छि:-

अनुकम्पा किर्वा कण्ड जाव परमाण्य विरमा पावे ।

मिर्गाथ रा बारमा करेण्य मिन अन्व्या दया रा रसो ॥

अणहूँता ही अरथ लगावे ॥ ६ ॥

भोलों ने बहु भरमाया,

कूडा-कूडा अरथ बताया ।

अनुकम्पा मे पाप ने गायो,

हलाहल कलियुग चलि आयो ॥ ७ ॥

३—अधिकार अपराधी को निरपराधी

कहने का ।

कोई चोर अने परदारी,

हत्या कीनी मनुज री भारी ।

अपराधी राजा ठहरायो,

मारण योग्य जगत दरसायो ॥१॥

वधवा योग्य ते 'वध्या' कहावे,

“वज्रभाषाणा” पाठ में गावे ।

गुनि मध्यस्थ भावना भावे,

समभाव पापी पर लावे ॥२॥

मनुष्या-विचार

वषषा याग्य मुनी महिं केबे,

दुष्ट कम पे मन नहिं दबे ।

अनदम्य अपराधी प्राणी,

एसी मुनी कहे महिं बाणी ॥ ३ ॥

अपराधी होबे जो प्राणी

निरअपराधी कहे किम आणी ।

दोपी ने भिरवापी बाप,

राक्षनीति धर्म (ने) ब्रथापे ॥४॥

दोपी न निरदोपी बतल

बाप ही अनुमोदना पावे ।

विण इहे मुनी मौन राखे,

सुगढार्येग मूतर भाख ॥५॥

मन्त्रमयी तो ऊँचा बोल

मन्त्रपाठ द्विय महिं ताले ।

(६६) मतमार कहे उणुरा राणी

‘‘कहे कहे किम बाणी ?’’ ॥६॥

इम ऊँ धा अरथ लगावे,
 जाने ज्ञानी न्याय बतावे ।
 मतमार मुनि नित केवे,
 तेथी “माहण” पढ प्रमु ठेवे ॥७॥
 मतमार कह्यौ पाप नाहीं,
 भव्य । समझो हिरदा रे माँही ।
 ‘मतमार’ मे पाप जो केवे,
 मिथ्यामत रो पढ वो लेवे ॥ ८ ॥
 साधु थी अनेरा जो प्राणी,
 थापे हिंसक खेचाताणी ।
 वाने मत मारण नहि केणो,
 ये कुगुरु तणा छे वेणो ॥९॥
 जगजीव राखण रे काजे,
 सत-शास्त्र कह्या जिनराजे ।
 प्रश्नन्याकरण सूतार देखो,
 संवरद्वारे कह्यो जिन लेखो ॥१०॥

अनुसन्ध्या-विचार

चार मासना मुनि नित माने,

त भी संवर गुण वह आवे ।

मैत्री प्रमोद, कल्याण, आशा,

मध्यस्था चौथी बसाणा ॥११॥

मैत्रीभास समी प लाव

गुणिजन स हय बहाव ।

कल्याण दुःखिया जीवों री लाव

यथा माम्भ मिटावण आव ॥ १२ ॥

छाटा-कम कर काई जाण्ही

चोरी जारी हया मम आव्ही ।

टिसक कर-कम रा करी

हय दु रा जगल न भारी ॥ १३ ॥

पता दुःख बग मुनि पाण्ही

मध्यम्य भाव लाव गुणराजना ।

मागण काय्य लगा नहि पाव

यथाभा बग न नहि पाव ॥ १४ ॥

वधवा योग्य कहे किम जानी,

समभाव है महा सुखदानी ।

आततायी (ने) अवज्मत्य किम केवे,

लोक विरुद्ध कार्य किम सेवे ॥ १५ ॥

या मध्यस्थ भावना जाणो,

इणरो सुगढाअग बखाणो ।

दुष्ट जीवों रो यहाँ अविकारो,

अध्ययन पाँववे जानी विचारो ॥ १६ ॥

ऊँधा अरथ करी भ्रम पाडे,

नाखे मिथ्यामत री खाडे ।

कहे “साधु यी अनेरा प्राणी,

जाने हिंसक लेवो जाणी” ॥ १७ ॥

(कहे तिणने) “मतमार कहे उण रो रागी,

तीजे करणे हिंसा लागी ॥”

‘मतमार’ जीव नहिं क्रेणो,

ऐसा कुमति काढे वेणो ॥ १८ ॥

समुद्रस्वादिच्छा

धार भावना मुनि नित मात्रे

ते ची संबर गुण बड़ आप ।

मैत्री, प्रमोद, करुणा, आशु

मध्यस्था सौधी वखाणो ॥११॥

मैत्रीमात्र सभी पे लाव,

गुणिजन से रूप बढ़ाव ।

करुणा मुखिया जीवों री लावे,

बना शोम्य मित्रावण जाव ॥ १२ ॥

काटा-कर्म करे कोई जाणी,

चोरी, जारी, हत्या, मन जाणी ।

हिंसक क्रूर-कर्म ते कारी,

बड़े दुःख आणव ले मारी ॥ १३ ॥

एवा सुष्ठु बंश मुनि प्राणी,

मध्यस्थ मात्र लावे गुणव्याप्ती ।

मारण शोम्य ऐसा महि बोल,

‘अवगम्य’ बचन महि खोल ॥ १४ ॥

तिम द्रुष्ट सर्व मन जाणो,

कोई कुकर्म ने पिछाणो ।

जिम उतराध्वेन रे माई,

भद्र प्राणी कहा जिनगई ॥ २३ ॥

जम्बुक आदिक कुत्सित कहिये,

हिरणादिक भद्रक लहिये ।

निग्रथपराधी भद्रक भाखे,

सूत्र अरथ टीका री सारखे ॥ २४ ॥

जो कहे साधु श्री अन्य क्रूर प्राणी,

(तो) भद्रिक अर्थ री होवे हाणी ।

तिम हिंसक सर्व नहिं प्राणी,

अति-द्रुष्ट हिंसक लेवो जाणी ॥ २५ ॥

बध्या ने बध्या न बतावे,

निरदोषी कहा दोष आने ।

या मध्यस्थ भावना भाई,

दरगंगा री उपेक्षा बता:

हिंसे सूत्र प्रमाण पिद्वाणा,

समी जीव दुष्ट मत जाणा ।

सुत्र प्राणी रो चास्यो सेको,

‘ठाणाचंग’ सूतर में सेको ॥ १९ ॥

सुत्रिक अधम कया प्राणी

पट मेव कया क्योग नाणी ।

असनी तिर्यच पंचेन्त्री,

तठ वाठ बली विफलन्त्री ॥ २० ॥

दुमरी बाचना रे मोई

निह बाध बरग (का) दुःखदार्थ ।

दिवडा, रीछ तिरच लदिय,

पूँ कूर प्राणी इम कहिये ॥ २१ ॥

मव जीव कूर मत जाणो,

ठाणाचंग सूतर परमाणा ।

सान् भी अनरा जो प्राणी,

सेन सुत्र कहे त अनानी ॥ २२ ॥

जीवन हेतु आहार रो करणो
सूत्र मे कीनो यो निरणो ॥२॥

अवसर जाण मरण रे काजे,
तजे आहार धर्म शुद्ध साजे ।

यो जीवनो मरणो चावे,
पाप न लागे सूत्र वतावे ॥३॥

।जमती रहनेमी ने भापे,
धिक्कार नू जीवन राखे ।

मरणो तुमले श्रेयकारी,
धर्म लाम हुवे तुम भारी ॥४॥

अज्ञानी अनुकम्पा थी मागा,
ऊँधा अरथ करण यूँ लागा ।

“आपणो जीवणो माधु वळे,
(तो) पाप-कर्म रो होवे सचे” ॥५॥

छ—जैसा कि वे कहते हैं —

आपणो वळे तोहि पापो, पर नो कुण घाले सन्तापो ।
मरणो जीवणो वळे अज्ञानी, सम भाव राखे ने सुजानी॥
(अनु० हाल २ गाथा १४)

कण्ठारी बाध यहाँ नार्ह,

‘मुगडाभैंग’ टीका रे माइ ।

इणरा ऊँपो अर्प केइ ताण

‘मत्तमार’ में पाप बसाखे ॥२७॥

नाम मुगडाभैंग रो लेहै

बोली जुगस्यो मन सूँ बेहै ।

निखु हेत किया बिस्तारो,

सुख-नया भी है निम्नारो ॥ २८ ॥

४ अविहार जोषणा मरणा योषणे का

जीषयो आपखो मन में आनी,

भाजन-पान करे सुख आमी ।

उत्तराभ्येन बचीस रे मोई,

ख कारण में बाध या आइ ॥ १ ॥

जो दिन अकसर अन्न त्याग,

(तो) आत्मगदत्ता मुनि ने जाग ।

५—अधिकार शीत, तापादि चं छवा
आसरी ।

वर्षा, शीत न तापो,

राजविग्रह रो नहि सन्तापो ।

भित्त, उपद्रवनाशो,

मातों बोलों रो यो समासो ॥१॥

दुःख-सुखदायी ये जाणी,

हो-मतहो कहेणी नहीं बाणी ।

निज सुख-दुःख सम मुनि जाणे,

तेथी णवो वचन सुग्य नाणे ॥२॥

अज्ञानी तो टलटा बोले,

मोला ने नारे मत्प्रभोले ।

उपद्रव मिटण कोई चावे,

निण माँहीं वे पाप वतावे ॥३॥

अमुकम्पा-विचार

कदया भी पगझीव बचावे,

तिरुने पाप सैनाप लगावे ।

इण्मे सारु सैनाप री इवे,

ऊँघा अरय सूर् सुरगति लवे ॥६॥

पूजा-इलाया सैनाग मे इल्ली

जीवणो चावे कोड बिरोन्पी ।

अतिवार सैनाप रो मास्यो,

पिण नदि अमुकम्पा रा इल्ल्यो ॥७॥

मदिमा पूजा नदि पाव,

तथा कछ शरीर मे आवे ।

तव मरण आरंसा लवे,

संघारा मे दोष यो आवे ॥८॥

विदने-मरण रा नाम ता लव

आर्ममा (पन्नोग) अर्ब नदि केरे ।

अमुकम्पा उठाया ग कामी,

भूटा अथ करे सुम्पगामी ॥९॥

रोग रो वियोग जो चावे,

आरत-ध्यान प्रभूजी वृतावे ।

और मुनियों रो रोग मिटावे,

ते तो आरत नाहिं कहावे ॥ ८ ॥

स पर-उपद्रव रो जाणो,

पाप केवे तो कुमति पिछाणो ।

यों वन्दना मुनि नहिं चावे,

चावे तो दूषण पावे ॥ ९ ॥

यो आपणा आत्मरि जाणो,

‘सुगढायग’ मूत्र पिछाणो ।

कोई वन्दना मुनि ने केवे,

दोष तिरण में मूत्र नहिं केवे ॥ १० ॥

‘स्वैम’ निरुपद्रव तिम जाणो,

पर रो वड्या न दोष गो ठाणो ।

स्वैमकर मुनी गुण कहिये,

ते वड्या दोष किम लहिये ॥ ११ ॥

धनुकम्पा-विचार

“संचरछार’ जिमगी भास्यो

‘जेमंकर’ मुनिगुण वास्यो ।

उपद्रव मट ते खेमंकर

ते सीपों रो जाखो हिरंकर ॥४॥

भी बीर रा गुण हम भाखे,

आइर कुँवर गोरासा न दाख ।

धस-धावर (र) खेम करता

शान्ति करखरील भगवन्ता ॥५॥

पर उपद्रव मरगु चाखे

तिगु में तो पाप न भाव ।

शान नापादि उपद्रव कोइ

निज प चाखो मुनि लिवा जाइ ॥६॥

लाव-मनदावा मुनि नहिं फव

आहत-धान जाणु भीन रव ।

आहत-धान ग लाजो भेष

गग आगों कर दाइ गग ॥७॥

(कहे) “मनुज वचाया पापो,

तेथी (मुनि) जल न बतावे आपो ॥४॥

जो जीव वचाया में धमों,

(तो) मनुज वचियाँ हुवे शुभ-कमों ।

जल बताई नाँय वचावे,

(तेथी मनुष्य) वचायाँ पाप बहु थावे” ॥५॥

एवी खोटी करे कोई थापो,

जाँरे उदय हुवा महापापो ।

जो जल ने (मुनि) नाहि बतावे,

(तेथी) मनुज वचायाँ पाप में गावे ॥६॥

(उत्तर) मुनि निज नो-तो जीवणो चावे,

आहार पाणी मुनी नित खावे ।

निजनी अनुकम्पा (तो) करनी,

यातो तुम पिण मुख थी वरणी ॥७॥

तो निज अनुकम्पा लाई,

(कहो) क्यों पाणी बतावे नार्ही ?

२ - अधिकार नौका का पानी बताने का ।

छाए पैठा नावा में आइ,
 नावकिये माव बसाई ।
 नाव फूटी मौय आये पाखी
 बपर-बपरी जल सँ भरगछो ॥१॥
 आवा पानी बतवा रो नेमो
 तेधी मुनी बताने केमो ।
 अबसर बूबख केरु आवे
 जतना स निकल मुनि आवे ॥२॥
 बिधि स उतरवा नहि पाट,
 'आइगिबरियेसा' पाठ ।
 जतना सँ निकल ने जाखो
 बूबजाये रो नहि बसाखो ॥३॥
 पवा मरल अर्य ने खोकी,
 तेली हासों मूँडा सँ ओकी ।

“અનુકમ્પા કિણરી ન કરણી”❀,

એસી આચારઙ્ગે ન વરણી ।

શક્કા હોધે તો સૂતર દેલ્લો,

નાવ રો લતાયો જઠે લેલ્લો ॥૧૨॥

॥ દ્વિતીય ઢાલ સમ્પૂર્ણમ્ ॥



❀-જેમે કિ લે કહતે હે -

આપ દ્વે અનેરા ગ્રાણી,

અનુકમ્પા કિણરી નહિ આણી ॥

(અનુ૦ ઢાલ ૨ ગા૦ ૧૯)

अनुकम्पा-विचार

(कहे) “अनुकम्पा या निज नी करणी,
पापी बचावा गी (सूखर में) नार्ही बरणी ॥८॥

कस्य पापी बचावा रो नार्ही,

(पिण निज) अनुकम्पा में बाप न काई”।

तो इमहिज समझे रे मारई,

पर छे अनुकम्पा धर्म रे मारई ॥९॥

मनुजों मे बचावा में धर्मों,

बो ठाणाधर रो मर्मा ।

निज (अनुकम्पा) काज न पाणी बटावे,

(विम) परकाज पिण नाहि रित्याव ॥१०॥

पापी बचावा रो कस्य नार्ही,

मनुजरचा धर्म र मारई ।

जीव बधिया ॥ व्रत में भङ्गा,

‘विण रा सार्नी आचारजो ॥ ११ ॥

तीसरी-ढाल



१-अधिकार मेघरथ राजा का पारेवा
पर दया करने का ।

(तर्ज — विछिया नी)

इन्द्र करी परसंसिया,

मेघरथ मोटो महाराय—रे जीवाँ ।

दयावन्त दानेश्वरी,

शरणागत देवे सहाय—रे जीवाँ ॥१॥

मोह अनुकम्पा न जाणिये,

नहिं मोह तणो यह काम—रे जीवाँ ।

परकाश अँधेरा ज्यूँ जुवा,

दोयाँ रा न्यारा नाम—रे० मो० ॥२॥

॥ दोहा ॥

बांझ मरण जीवणो, धर्म क्युं ज काज ।
मृत्युवागी ते शूद्रमा, (जो) माग्था आत्मकाज ॥१॥
(पर) अनुकम्पा कीया धर्को, कट कम नो बंश ।
‘नाणार्थेण’ बौध कह्या, मोह सणो महिं भंश ॥ २॥
पर अनुकम्पा जा करे, मिट राग अणु पक्ष ।
भाग मिटे इन्ड्रियों तणा अन्तर-दृष्टि देख ॥ ३॥
जीवदया रे कारण ममरथ त्वंही काय ।
शान्तिनाथ मा जीव य, समशर्दंग रे मांय ॥४॥
मेंटा रया चन्दा नदीं कम किया थकपूर ।
ममता छौंही देह नी, दयावन्त महा-शूर ॥५॥

मौस आपो निज देह नो,

इगुरे बराबर ताल—रे जीवों ।

हथित हो राख उम कहे,

यह तो भलो कसो थें बोल-रे जीवों, मो० ॥७॥

तुरत तगज मौंड न,

राख गगडन लागो काय—रे जीवों ।

हाहाकार हृथो घणो,

अन्तवर अति विलग्याय-रे जीवों, मो० ॥८॥

उत्तर दीवो राजवी,

नहि मोह तणो यहाँ काम—रे जीवों ।

जत्रो धर्म छै माहगे,

धर्म राखे छें थारो स्वाम-रे जीवों, मो० ॥९॥

सब नममाया ज्ञान सूँ,

विलखाया सामा जोय—रे जीवों ।

उसडो धर्मी जगत में,

हुथो बली होसी कोय-रे जीवों, मो० ॥१०॥

महुक्या-विचार

विण फालि एक दयता

क्यामात्र वेत्तण रे काज—रे जीवों ।

रूप परवा बाज ना,

सिण बीमो बहिय साज—र०मो० ॥३॥

पड़िया राव ते गोद में,

भय बी लहक लछ काय—रे जीवों ।

गण्यो दियो महादयजी,

अथ मलपावा कहि बाय—रे जीवों, मो० ॥४॥

बाज कहे भल मझरे,

मुक्त मूला नो यह शिकार—रे जीवों ।

और बहू लेखूँ नहीं

मोन बापो मझरे आहार रे० मो ॥५॥

यो शरणागत माहर,

और मोंग तू बसु रयास—रे जीवों ।

जे भगि त आपछूँ,

तूँ सीबदया प्रसिपाल—रे जीवों, मो० ॥६॥

इण अनुकम्पा मे मोह कहे,

उणरे पूरो उदे मिथ्यात—रेजीवाँ ।

यह तो परतख मोह रो जीतणो,

ग्रन्थ माँहे देखो साक्षात-रे जीवाँ, मो० ॥१५॥

२—अधिकार अरणकजी की

अनुकंपा का ।

अरणक परीक्षा कारणे,

देव बोले इण पर वाय—रेजीवाँ ।

अनुव्रत पाँचों निर्मला,

दया-धर्म धारे चितचाय—रेजीवाँ, मो० ॥१॥

व्रत तोड़ हिंसा करसी नहीं,

अनुकपा न छोड़सी आज—रेजीवाँ ।

(जाव) धर्म न छोड़सी ताहरो,

तो हूँ करसूँ मोटो अकाज-रेजीवाँ, मो० ॥२॥

वचन सुणी ढरियो नहीं,

इम चिन्तवे चित्त मुभार—रेजीवाँ ।

निज मो मरखो बंदिखो

ते हो जाग्री धर्म मे काग-रे जीवों ।

प्राण कपास रा गन्धिया,

त छुख धर्म रे नाम-रे जीवों, मो० ॥११॥

तन खंखो मन खंखो नहीं,

अपूरख आख्यो बोल-रे जीवों ।

बीर रमे महाद्यमजी,

तन मेस दियो अनमोल-रे जीवों, मो० ॥१२॥

जयजयकार (तब) सुर करे,

धम ! धन ! तूँ महाद्यय—रे जीवों ।

इन्द्र किया गुण ताइय,

मैं बेज लिखा यहाँ आन्य-रे जीवों मो० ॥१३॥

कम अपराध तूँ माइयो,

हुओ सुवरण (मैं) पारस संग-रे जीवों ।

गोत तीर्थकर बाँधियो,

राय क्या तयो परसंग-रे जीवों, मो० ॥१४॥

धन-धन मुख से बोलतो,

दयाधर्मी तूँ महाशूर—रेजीवाँ, मो०॥७॥

कुमती कदाग्रही इम कहे,

जहाज में मनुज अनेक—रेजीवाँ ।

मोह-करुणा न आणी केहनी॥

मरतो नहिं राख्यो एक—रेजीवाँ, मो०॥८॥

एहवी अणहूँति वात उठायने,

अनुकम्पा मे थापे पाप—रेजीवाँ ।

ॐ—जैसा कि वे कहते हैं --

तिणसागारी अणसण कियो, धर्म ध्यान रह्यो चित्त ध्याय रे ।

सगला ने जाण्यो दृढता, मोह करुणा न आणी काय रे ।

जीवा मोह अनुकम्पा न आणिये ॥४॥

लोक विलबिल करता देखने, अरणकरो न बिगड्यो नूर रे ।

मोह करुणा न आणी केहनी, देव उपसर्ग कीधो दूर रे ।

जीवा मोह अनुकम्पा न आणिये ॥८॥

(अनुकम्पा ढाल २)

धम-पाप इणरे नहीं,

तयी पाप करण मूँकर—रेजीबों, मा०॥३॥

सुमति धत्री कुमती भजी,

तेहरी धर्म शुद्धि पाव—रेजीबों ।

मैं धर्म जाण्वा हूँ पढ़नो,

तयी धर्म जोड़यो किम जाय-रेजीबों, मा०॥४॥

पाप है पातक जगत में

हुए धर्म करे भकाज—रेजीबों ।

जगज्जल जिन-धर्म है,

सुखदाई सारे काज—रेजीबों सो० ॥५॥

अही-मीजा रम रह्यो,

जारे धर्म तणो अनुयाग—रेजीबों ।

कम गढ़े कर काकरा

रतन चिन्तामणि त्याग-रेजीबों, सो०॥ ॥

हृद रखो बलियो नहीं

धर्म कीनो उपसर्ग दूर—रेजीबों ।

एवी मूढ करे कोई कल्पना ?

के जानी केरी या थाप ?—रेजीवाँ, मो० ॥१३॥

जय जाव न आवे एहनो,

तव जानी कहे समभाय—रेजीवाँ ।

शील सती खण्डे नहीं,

तिणरे रत्ता घणी दिल माँय—रे० मो० ॥१४॥

तिम धर्म न छोडे शुभमति,

अनुकम्पा घणी घट माँय—रेजीवाँ ।

तिणने कहे कोई मूढमति,

वो अनुकम्पा लायो नाँय—रे० मो० ॥१५॥

धर्म शील न छोड़े तेहने,

नामे करे एहवी थाप—रेजीवाँ ।

“अनुकम्पा से पाप छे,

तेथी मनुष्य वचाया नाय”—रे० मो० ॥१६॥

एवी मूढ करे परूपणा,

जानी री यह नहि वाय—रेजीवाँ ।

जारे मोह ऊँ, अति भाकरो,

तइपी खाटी करे छे वाप-रखीवों, मो०॥१॥

मध्यम राखण धर्म जोइयो नही,

तइपी माह कहणा री वाप-रखीवों ।

त्यो न बुपबन्ध करे इण परे

इक हेतु रोइवो माव-रखीवों, मो०॥१०॥

‘रावण सीता ने कहे,

‘तू मुजने न करे स्वीकार-रखीवों ।

देखी मरस नर अति सामटा,

वारे नाहि वबा हूँ प्यार-रखीवों, मो०॥११॥

व्या-धर्म मुक्त मन बस्या,

हूँ ता सगला रा बाहूँ खम-रखीवों ।

वार हिरद छोटी बासना

म्हारे हिरदे सोंचो नेम-रखीवों, मो०॥१२॥

रन्धि न सीता पण्डित्यो,

देखी अनुकम्पा में पाप-रखीवों ।

एवी मूढ करे कोई कल्पना ?

के ज्ञानी केरी या थाप ?—रेजीवाँ, मो०॥१३॥

जब जाब न आवे एहनो,

तब ज्ञानी कहे समझाय—रेजीवाँ ।

शील सती खण्डे नहीं,

‘ तिणारे रक्षा घणी दिल माँय—रे० मो०॥१४॥

तिम धर्म न छोड़े शुभमति,

अनुकम्पा घणी घट माँय—रेजीवाँ ।

तिणाने कहे कोई मूढ़मति,

वो अनुकम्पा लायो नाँय—रे० मो०॥१५॥

धर्म शील न छोड़े तेहने,

नामे करे एहवी थाप—रेजीवाँ ।

“अनुकम्पा में पाप छे,

तेथी मनुष्य बचाया नाय”—रे० मो०॥१६॥

एवी मूढ करे परूपणा,

ज्ञानी री यह नहिं वाय—रेजीवाँ ।

धर्म गीन सम जायप्रो,

आइ-रक्षा धर्म रे मौय-रजीवों, मो०॥१७॥

काइ इव कइ मावक भर्षी,

नू व निन-धर्म न छोड़-रैजीवों ।

नहि न्य खापरी गुम्फा तहरी,

जारा गीलि मनन्यमू तोड़-रै० मो०॥१८॥

धर्म न छोड़ तहरी

काइ मूक अग्रे मरम-रजीवों ।

गीन बचाया में पाप है,

मिणरे इत न छाड़-पा धर्म-रै० मो०॥१९॥

(बलि) इव कइ धर्म न छाड़सी

मर बारी ग करमू पा-रैजीवों ।

तव धर्म न छाड़ तहरी

काइ मूक करे छुड़री याप-रै० मो०॥२०॥

धर्म त्याग बारी म छहावनों,

पारी मर छाड़ता में पाप-रजीवों ।

या मूर्ख री परूपणा,

इम ज्ञानी जाणे साफ-रेजीवाँ, मो०॥२१॥

इम अठाराही पाप रो,

न्याय सुद्ध हिरदे मे धार-रेजीवाँ ।

धर्म त्यागे न पाप छुडायवा,

यो सूत्र तणो निरधार-रेजीवाँ, मो०॥२२॥

कहे “पाप छोडावणो धर्म मे,

पिण धर्म तो छोडे नाँय-रेजीवाँ ।

धर्म न छोडे तेहथी,

पाप मेटण पाप न थाय”-रेजीवाँ, मो०॥२३॥

(तो) जीवरत्ता रो द्वेष छोडने,

समभाव लावो मनमाँय-रेजीवाँ ।

धर्म छोड अनुकम्पा ना करे,

अनुकम्पा गावज नाँय-रेजीवाँ, मो०॥२४॥

धर्म छोड मनुष्य नहिं राखिया,

तेथी मनुष्य वचाया पाप-रेजीवाँ ।

अनुकम्पा-विचार

या छोटी सुरघा धारिणी,
इए न्याय भी आणो साफ-रे० मो०॥२५॥

नाम सर्व आणुक्त तयो
अनुकम्पा सठावण काम-रजीवों ।

ते मूढ़ अहानी जीवका,
झाड़ी बर्म ने मेप री लाव-रे० मो०॥२६॥

६ अधिकार 'माता बचाने से सुखणी
पिया के व्रत।दि का भंग नहीं हुआ'

अरणक नी परे जाखम्पा
सुखणीपिया नी बात-रजीवों ।

पुत्र मार सूझा कर छॉन्धा,
अनुकम्पा राखी माकाव-रे जीवों, मा०॥२७॥

अपरुषो. उ. उक्ति. पररुषो,
कीध। पोसा माहीं नम-रेजीवों ।

तभी पुत्र रा मारणहास वे
अनुकम्पा राखी धर प्रेम-रजीवों, मा०॥२८॥

मूढमती उलटी कहे,

जारे दया नहिं दिल माँय-रेजीवाँ ।

करुणा न की अँगजात नी,

एवी खोटी बोले वाय-रेजीवाँ, मो० ॥३॥

जो देव इणी विध बोलतो,

थारा पुत्र वचाया में धर्म-रेजीवाँ ।

तू सरधे तो छोड़ूँ जीवता,

नहिं तो घात करूँ तज सम-रेजीवाँ, मो० ॥४॥

तदा श्रावक धर्म न श्रद्धतो,

देव करतो पुत्र री घात-रेजीवाँ ।

तो करुणा न की अँगज तणी,

या साँची होती तुम वात-रेजीवाँ, मो० ॥५॥

पिण देव तो बोल्यो इण परे,

थारे जीव दया रो व्रत-रेजीवाँ ।

ते तोड हिंसा करमी नहीं,

थारा पुत्र मारूँ इन शर्न-रेजीवाँ, मो० ॥६॥

तेथी मायक मत तोडणा नही,
 दया-धर्म हिरदा में ध्याय-रेखीवों ।
 तुम कहो करुणा आसी नही,
 सो हो मूत्रो धारो म्याय-रेखीवों, मो० ॥५॥
 दब कहे हिमा करसी नही,
 धार दब गुरू सम माय-रेखीवों ।
 विण्ण मार सुला कर धौंसू,
 दया धर्म न मुक्त सुहाय-रेखीवों, मो० ॥८॥
 इम सुण चुसणीपिया कोपियो,
 वा तो पुरुष बनारज थाय-रेखीवों ।
 पकड़ें मारें पड़न
 इम बिम्बी झारे थाय-रेखीवों मो० ॥९॥
 दब गयो आकाश में,
 इणरे धौधो आयो हाय-रेखीवों ।
 बालाहल कीधा घण्टा
 मय भाइ मठा मान-रेखीवों, मो० ॥१०॥

वच्छ । विरूप देख्यो तुमे,
 नहिं हुई पुत्राँ री घात-रेजीवाँ ।
 पुरुष मारण तुम ऊठिया,
 ब्रत-नेम भागा साक्षात-रेजीवाँ, मो० ॥११॥
 इहाँ झूठा बोला इम कहे,
 जॉरे नहिं अनुकम्पा सूँ प्रेम-रेजीवाँ ।
 “अनुकम्पा करी जननी तणी,
 ते सूँ भागा ब्रत ने नेम”-रेजीवाँ, मो० ॥१२॥
 धेटा हो इण पर कहे,
 मिथ्यात रो चढ़ियो पूर-रेजीवाँ ।
 जानी कहे हिवे साँमलो,
 होकर सतवादी शूर-रेजीवाँ, मो० ॥१३॥
 त्याग किया हिंसा तणा,
 तेथो श्रावक रे ब्रत होय-रे जीवाँ ।
 ते ब्रत भागे हिंसा किया,
 यो न्याय विचारी जोय-रेजीवाँ, मो० ॥१४॥

अनुकम्पा हिंसा नहीं,

तेन त्याग्या व्रत नहिं धाय-रे जीवों ।

ओ, अनुकम्पा त्याग द,

निरदयी कष्टो जिनकय-रे जीवों, मो० ॥ १५ ॥

अनुकम्पा भी व्रत नीपखे,

तेषी व्रत री किम हुबे पात-रेजीवों ।

अमृत भी मरखो कह,

या वो मूढ़मत्स्यों री वात-रे जीवों, मो० ॥ १६ ॥

मार त विप लायुम्पा

अमृत वो रक्षा वाय-रे जीवों ।

अनुकम्पा भी व्रत भाग नहीं

हिंसा दुषा व्रत जाय-रेजीवों मो० ॥ १७ ॥

अनुकम्पा भी व्रत भाग कहे

त वृषा काली-वार—रे जीवों ।

यत्नी माला न भगमाय न

पकड़ दपोया लार-रेजीवों मा ॥ १८ ॥

“भगवण भगानियम” रो,

बलि “भग पोषध” रो अर्थ-रे जीवाँ ।

टीका में कियो इण भाँति थी,

थें खेंच करो क्योँ व्यर्थ-रे जीवाँ, मो० ॥१९॥

कोप करी ने दोड़ियो,

पुरुष मारण रे परिणाम—रे जीवाँ ।

अनुव्रत भागो तेहथी,

करुणा न रही तिण ठाम—रे० मो० ॥२०॥

अपराधी पिण नहिं मारणो,

या पोषध री मर्याद-रे जीवाँ ।

भाव हुवा मारण तणा,

व्रत भागो तजो हठवाद-रे० मो० ॥२१॥

क्रोध करण रा त्याग था,

पूरप पर आयो कोप-रे जीवाँ ।

नियम उत्तर गुण भागियो,

जिन आणा दिवि लोप-रे जीवाँ, मो० ॥२२॥

न कस्ये पोषधे शोकणा,

ते छो शोक-या पुन्य रे सग-रे जीवों ।

दाइ-धों अजबना दुई,

पोषध रो दुष्मो अंग-रे जीवों मो० ॥२३॥

यो सत्य अर्थ सूतर तखो,

टीका भी लीखो ओय रे जीवों ।

खाना अर्थ कुरुरों तखा

मव मानजा स्याणा होय-रेजीवों, मो० ॥२४॥

शूरादब का दानला

“अनुकम्पा आखी अननी तणी,

ते सूँ मागा अत मे मेम”—रे जीवों ।

एही खोनी बाप कोई कर,

तन उत्तर दीज णम-र० मो० ॥२५॥

शूरादब भावक तणी,

धुलखीपिया सम बात-र जीवों ।

देव कष्ट दियो पुत्राँ तणो,
 तिनमें विशेष छे इण भाँत—रे० मो० ॥२६॥
 जो तूँ दया-धर्म छोड़े नहीं,
 तो थारी देह रे माँय—रे जीवाँ ।
 सोले रोग मैं घालसूँ,
 तूँ मरने दुर्गत जाय—रेजीवाँ, मो० ॥२७॥
 डम सुण कोप थी दोडियो,
 चुलणीपिया सम जाण - रे जीवाँ ।
 व्रत-नियम भागा कहा,
 ते समझ ने तज दो ताण—रेजीवाँ, मो० ॥२८॥
 पोषा सामायक में तुमे,
 ग्वी करो छो थाप—रे जीवाँ ।
 देह रक्षा किया भागे नहींॐ,
 आगार कहो तुम साफ—रे० मो० ॥२९॥

ॐ-जैसा कि वे श्रावक धर्म विचार से श्रावक
 की सामायिक व्रत की ढाल में कहते हैं—
 शरीर कपडादिक तेहना,
 जतन करे सामायिक मोयजी ।

तुम कथन शूरतुल्य र,

रुद रघु भी भागा न प्रत-र जीवों ।

दीव अनुकम्पा कियारी करी

विषु भी भागा इषुरा प्रत-र जीवों, मा० ३० ॥

स्वयं चाराधिक रा भय बड़ी

जगत् रक्षामक जगत् रा जायजी ॥२३॥

भापरा ना भागा र रागिच,

भीरा रो मही छे जागा र जी ।

भीरा न लाम्बा सामाई मई

स्वों न किरियि लाम्बाछे बहार जी ॥

मिन्दाजी जग आरचिछे ॥२४॥

स्वयं चाराधिक रा भय बड़ी,

राम्बा ने जग के जायजी ।

पाम्बनी कपडाधिक हुने पया ।

स्वों ने लो बाहर न ले जाये जायजी ॥२५॥

राम्बा न जग के जायता,

समाह रा भय न जायजी ।

इण कथने र्थे जानलो,

चुलणीपिया नी (पिण) वात-रे जीवाँ ।

जननी अनुकम्पा थकी,

नहिं हूई ब्रत री घात-रे जीवाँ, मो०॥३१॥

हिंसा करण ने दोडियो,

बली क्रोध आयो तिणवार—रे जीवाँ ।

त्यागा छे ल्याँने ले जावता,

सामायी रो ब्रत भाग जायजी० ॥२९॥

ग्यारहवें ब्रत की ढाल में भी लिखा है —

पोषा ने सामायिक ब्रत ना,

सरखा छे पच्चखाणजी ।

सामायिक तो मुहूर्त एकनी,

पोषो दिवसरात रो जाणजी ॥७॥

पोषा ने सामायिक ब्रत में,

याँ दोयाँ में सरखो छे भागारजी ॥ ८ ॥

अजनना अयोपाय धी,

त्रन नम पापघ टटी कार -रे मा० ॥१२॥

प्रथ भाग त्रिमा वकी,

षा निरवध स्त्रीनो जाण-रे जीवों !

अनुकम्पा धी रक्षा हुव

(निधी)प्रथ मागो कइ अणुजाण - २०मो०॥१३॥

४—अधिकार ' नमीराज अपि ने
अनुकम्पा नहीं की' ऐसा कहनेवालों
के लिये उत्तर !

नमीराज अपि समय लीना,

प्रत्यक्षबोधी (मोटा) अणुगार-रे जीवों !

निज हित कर्यो लठिया

पर गी नहीं करे सार समाप्त-रे मो० ॥१॥

गोसा न दब केसमे

१ दब भावक (ना) प्रथ-रे जीवों !

उपदेश पिण देवे नहीं,

पूछ्याँ उत्तर देवे सत्य-रे जीवाँ, मो० ॥२॥

(ते) अनुकम्पा करे आपनी,

पर री कल्पे तस नायें—रे जीवाँ ।

इन्द्र आयो तिण ने परखवा,

त्याँ माया विविध बनाय-रे जीवाँ, मो० ॥३॥

महल अन्तेवर ताहरा,

अगनि में बले परतख-रे जीवाँ ।

तुम स्वामी छो एहना,

ज्ञानादिक नी परे (याने) रख-रे० मो० ॥४॥

तत्र, नमीऋषिजी इम कहे,

ज्ञानादिक गुण छे भूभ—रे जीवाँ ।

पृथी बीजी वस्तु नहिं माहरे,

निश्चय-नय री बतार्ड सूभ-रे जीवाँ, मो० ॥५॥

मुभनो न तो बले नहीं,

યહ મિથિલા પલતા થઈ,

જ્ઞાનાત્મિક નારા ન હોય-ને જીર્ણો, મો० ॥૬॥

કંઈ અઘાની દમ કરે,

અનુકરણ રી કરવા પાત-ને જીર્ણો ।

‘નમીરાજ આપિ આણી નહીં

મોહ અનુકરણ મી રાત’-ને જીર્ણો, મો० ॥૭॥

(ઉત્તર) અનુકરણ તો પ્રશ્ન છે નહીં,

નહીં ઉત્તર મેં તની રાત-ને જીર્ણો ।

પાં મૂઠા ગાલ જાણિયા,

પાં રે મોહ હૃદય મિષ્ટાસ્ત-રેજીર્ણો, મો० ॥૮॥

(જા) અન્તર રજા ના કરી,

તદ્દર્પી અનુકરણ મેં પાપ-ને જીર્ણો ।

ઘડી કરે કોઈ વાપના,

તા ઉત્તર સુષ્ણ્ણો સાફ-ને જીર્ણો, મો० ॥૯॥

દિમા, મૂટ જોરી તણા

નમી (જી) ન બરાબે જાણ-ને જીર્ણો ।

वस्तर पिण राखे नही,

संग मे न रहे महाभाग - रेजीवाँ, मो०॥१०॥
निज हित में तत्पर रहे,

पर साधु रो न करे काज-रे जीवाँ ।
प्रत्येकबोधी मुनि तिके,

पर रो न बंछे साज-रे जीवाँ, मो०॥११॥
या प्रत्येकबोधी रो नाम ले

कोई मूर्ख करे एहवी थाप—रे जीवाँ ।
जो कार्य नमीश्रुषि ना करे,

तिण में मोहतणो छे पाप-रे जीवाँ, मो०॥१२॥
इण लेखे (तो) दीक्षा देण में,

बलि विविध करावण नेम-रे जीवाँ ।
ते मोह पाप में ठहरसी,

नेने ज्ञानी तो माने केम-रेजीवाँ, मो०॥१३॥
दीक्षा, त्याग, ब्यावच तणा,

याँ कार्य में दोष न कोय-रे जीवाँ ।

अनुकम्पा उठायवा,

ए नहीं ममत्प्रि रा काम - रे० मो० ॥१८॥

५—अधिकार नेमिनाथजी ने गज-
सुकुमाल की अनुकम्पा नहीं की,
ऐसा कहनेवालों को उत्तर

श्री नेमि जिनेश्वर जाणता,

मुनि गजसुकुमाल री घात-रे जीवाँ ।

ए तो खेर खीरा माये खमी,

मोक्ष जावसी इणहिज भौत-रेजीवाँ, मो० ॥१॥

तेयी जिण भिन दीक्षा आदरी,

पडिमावहण चित चाय—रे जीवाँ ।

आज्जा माँगी जिणराज री,

श्रीमुख दीवी फुरमाय-रे जीवाँ, मो० ॥२॥

शमसाणे काउसग्ग कियो,

सोसल आयो तिहाँ चाल-रे जीवाँ ।

मात्र पाल बाँधी मानी रखी,
 मोह धास्या लीग लाल-रे जीवों, मो०॥३॥
 कष्ट सदा बेदना भरी,
 मुनि मात्र गया लिखवार—रे जीवों ।
 केइ मंदमती तो इम कह,
 “नम कल्याण न करी सिंगार—रे० मो०॥४॥
 पहल अनुकम्पा आखी नहीं,
 और साथ न मेर्या साथ-रे जीवों ।

● ईसा कि व करते हैं—

कष्ट सदा बेदना भलि बची
 नेमी कल्याण न आनी सिंगार रे ॥१॥
 भी नेमि जिनबबर जायता
 होसी गजसुकुमाक सी बात रे ।
 पहिल अनुकम्पा आनी नहीं
 और साथ न मेर्या साथ रे ॥२॥
 (अनुकम्पा शब्द—१)

तेथी अनुकम्पा में पाप है”,

इस बोले भूठ मिथ्यात-रे जीवाँ, मो० ॥५॥

(उत्तर) चर्म शरीरी जीव नो,

आयु टूटे नहीं लिगार-रे जीवाँ ।

जिम बाँध्यो तिम भोगवे,

निरूपकर्मी तणो निरधार-रे० मो० ॥६॥

आगम बलिया केवली,

कल्पातीत त्रिकाल ना जाण-रे जीवाँ ।

निश्चय जाणे तिम करे,

जारो नाम लेई करे ताण-रे० मो० ॥७॥

गजसुकुमाल री ना करी,

अनुकपा श्री जिन नेम-रेजीवाँ ।

ए वचन अनुकम्पा-द्वेष रा,

ज्ञानी तो समझे एम-रे० मो० ॥८॥

सूत्र व्यवहारो मुनि तणो,

सूत्र ने जाणो धर्म-रेजीवाँ ।

अनुकम्पा आण बाब में पढ़-या,

यो हो जिन भाव्यो नहिं धर्म रे जीवों ।

ते ही उपसर्ग मेवखो पाप में,"

मदमती पाके हम मर्म—रे जीवों, मा० ॥४॥

दिवे उत्तर एनो मौमलो,

इह मर्या हो उपसर्ग आय—रे जीवों ।

अनुकम्पा रा द्वेष थी,

मदमती य दिया छिपाय—रे जीवों, मो० ॥५॥

अिय दिन दीक्षा आवरी,

कायास्सर्ग रखा बस मौय—रे जीवों ।

पशुपालन बैल र कारण,

बीर न मारख हाथ छाय—र० मो० ॥६॥

तय म्त्र आय मै राखियो,

मछिबन्त ता मछि आय—र जीवों ।

(बली) सिधारय इह भीषीर रा,

बहु उपसर्ग दीना मिटाय—र०, मो० ॥७॥

कानाँ थी खीला काढिया,

भक्तिवन्त वैद्य हुलसाय-रे जीवाँ ।

ते महाफल पायो धर्म नो,

मरणान्तिक कष्ट मिटाय—रे० मो० ॥८॥

इम बहु उपसर्ग मेटिया,

कल्पसूत्र कथा रे माँय—रे जीवाँ ।

तो पिण अनुकम्पा द्वेषी इम कहे,

कोई उपसर्ग टाल्यो नाँय—रे० मो० ॥९॥

(कहे) “कथा री बात मानाँ नहीं,”

तो संगम (देव) री मानो केम—रे जीवाँ ।

या कथा पिण “कल्पसूत्र” नी,

तुम साख देवो छो केम❀—रे० मो० ॥१०॥

❀ जैसा कि चे कहते हैं —

संगम देवता भगवान ने,

दु ख दीधा अनेक प्रकार रे ।

अनुकम्पा-विचार

अनुकम्पा आण बीब में पड़्या,

या ता जिन माय्यो नहि धर्म रे जीवों ।

त धी उपसर्ग मेदखा पाप में,"

मंदमती पाके इम मर्म—रे जीवों, मा०॥१४॥

दिवे उत्तर घना मोमलो,

दब मट्या छे उपसर्ग आय—रे जीवों ।

अनुकम्पा रा दूय धी

मदमती य बिबा बिपाय—रे जीवों, मो०॥१५॥

जिख दिन बीबा आवरी

कायात्सम रखा वन मीय—रे जीवों ।

पशुपाल बैल रे कावण

बीर न मारण हाथ उठाव—र० मो० ॥१६॥

तप इन्द्र आय न रोकियो

भक्तिवन्त ता भक्ति आय—रे जीवों ।

(कसी) सिधारथ दब भीबीर रा

पशु उपसर्ग दीना मिठाव—र०. मो० ॥१७॥

पार्श्व-प्रभु नीना ग्रही.

काउमरग कियो वन माय-रे जीवाँ ।

जव कमठ मेह बरसावियो,

उपमर्ग दीनो आय-रे जीवाँ, मो०॥१३॥

तव धरणेन्द्र पदमावती,

उपमर्ग दीनों मिटाय-रे जीवाँ ।

तुम पिण मानो। या वारता,

हिवे बांली ने बदलो काँय-रे० मो०॥१४॥

बलि कथा रे नामे तुमे,

ढालौ जोड़ी विविध प्रकार-रे जीवाँ ॥

भी वीर ना उपमगो मन्थिया,

ठाम-ठाम कथा रे मौय—रे जीवों ।

हुम कहो किगही न मेटिया †, ‡

मूठा बोलवा सरमो नाथ—र० मा०॥११॥

अब स्वाध न भावे पानो,

भावा-भगला गाल बजाय—रे जीवों ।

म्लेच्छ राक्ष सुटा थका,

बूंगर की टोल गुवाय—रे जीवों, मो०॥१२॥

अनाथ कोही भी वीर रे ।

वमानादिष कीया कर रे ॥

(अधु वा ३ गा २१)

† जिसा कि वे कहते हैं—

हुम्व देना कैली भगवान् मे,

अकगा न कीया भाव रे ।

समरहि बैव हूँ ना बला

पिच किनहीं न कीयी सादय रे ॥

(अधु वा ३ गा २२)

१००

पार्व-प्रभु नीना प्रही,

काउसग कियो वन माय-रे जीवों ।

जय कमठ मेह वरसावियों,

उपसर्ग दीनो आय-रे जीवों, मो०॥१३॥

तय धरणेन्द्र पदमावती.

उपसर्ग दीनों मिटाय-रे जीवों ।

तुम पिण मानो। या वारता,

हिचे बोली ने बदलो काँय-रे० मो०॥१४॥

बलि कथा रे नामे तुमे,

ढालों जोड़ी विविध प्रकार-रे जीवों ॥

। जैसा कि वे कहते हैं —

पार्वनाथजी घर छोड काउसग कीधो,

जय कमठ उपसर्ग कर वरसायो पाणी ।

जय पद्मावती हेठे सिंहासन कीधो,

धरणेन्द्र छत्र कियो मिर आणी ॥ ओ० मु०॥

(गाथा २७)

अनुदय-विचार

नवकार मन्त्र प्रभावः श्री,

अपसर्ग मेठरा अचिकार—२० मो० ॥१५॥

जैसे कि आराधना की दृष्टि काक में वे करते हैं -

पञ्च पुत्र की माक पर्य

नवकार प्रमाणे कीरति करें ।

सुख कीमति उन्नत प्रणे सुख

इस ज्ञान की श्री नवकार २०४

जन्म उन्नी किन्ही पैर्वा,

किन्ही कनक-सिद्धिमान उपदेवा ।

अगर अमर पुनः प्रति वेसर्भ

इस ज्ञान की श्री नवकार २०५

अच्छा बराकती किन्ही

नहीं पूर आपा गुन्नी नवकार

पुई अलार्भन सुखिता दीप बार

इस ज्ञान की श्री नवकार २०६

समुद्र में दृष्टी

नवकार गुन्नी बार विरु ज्ञान...

श्रीमती अमर कुमर बली,

भील सेठ आदिक नी बात—रे जीवों ।

देव साय करी (तुमे) मानी खरी,

विच पड़िया ये साक्षान्—रे जीवों, मो० ॥ १६ ॥

यह था सम-दृष्टि देवता,

जिन-धर्म दिपावणहार—रे जीवों ।

नवकार महिमा कारणे,

संकट भेट कियो उपकार—रे० मो० ॥ १७ ॥

तुम कहता सम-दृष्टि देवता,

बीच मे नहिं पड़िया आय—रे जीवों ।

या बात थारी भूठी हुई,

बीच पड़िया मान्या (थौं) जोड़ माँय ॥ १८ ॥

जहाज वचाई देवता,

यो तो धर्म तणो उपकार—रे जीवों ।

जो खोटा जाणे सम-दृष्टि,

देवता विच कथाय तणो—रे० मो० ॥ १९ ॥

धैं अनुकम्पा रा द्वेष थी (कष्टों),

धर्म होवो न करता बीस—२ जीवों ।

‡ उपसर्ग तुरत मित्रावध,

समदृष्टि देवों रो शीस—२० मो० ॥१७०॥

(ता) भवकारक प्रमाद थी दृष्टि,

उपसर्ग मेम्पा साक्षात्—२ जीवों ।

तुम क्यन पिछ हुबो धर्म यो

मान सबा छोड़ मिथ्यात—२० मो० ॥१७१॥

“ता सब उपसर्ग बीरता

देव केस न मेम्पा आय”—२ जीवों ।

‡ कैने कि वे क्यने हि —

धर्म हुता भाषा न काइता

धर्म बीर के गुणिपा ज्ञान—२ जीवों ।

बरीबड़ देवता आका गदुब

एव भजता बगता नाम—२ जीवों मो ॥१७२॥

(अनुकम्पा काठ २)

एवी शका कोई करे,

जॉरे सुध-बुध हिरदे नाय—रे० मो०॥२२॥

निश्चेवादी अवधिधरा,

मिटता देख्या निज ज्ञान—रे जीवाँ ।

(ते) विघन मेळ्या देवाँ हर्ष सूर्,

धर्म सेवा रो दे शुभ ध्यान—रे० मो०॥२३॥

जो होनहार टले नहीं,

ते देव न सके टार—रे जीवाँ ।

त्याँरो नाम लेई कहे मूढमती,

(उपसर्ग) मेळ्याँ पाप अपार—रे० मो०॥२४॥

सौ कोसाँ उपसर्ग ना होवे,

जिन महिमा सूतर साख—रे जीवाँ ।

होनहार गोशाले वीर पे,

तेजू-लेस्या दीनी नाख—रे० मो० ॥२५॥

उपसर्ग मिटे प्रभु तेज थी,

यह तो प्रत्यक्ष आलो काय—रे जीवाँ ।

मायी (होन्हार) बल नहीं जो करे,

(इण रो) मम्ब भाण मुख नाम—र०मो०२६॥

(तिम) बीर उपसर्ग देवों मेंटिया,

परतस्स धर्म रो काम—र जीर्ण ।

जो होन्हार मिटे नहीं

हानी नहीं सेवे विद्या रो नाम—र ॥

मोह अमुकम्पा न जाणिय ॥२७॥

७—अधिकार द्वीप-समुद्रों की हिंसा

देयता क्या नहीं मट ?—इसका

उत्तर ।

काइ मम्बमती इण पर करे,

अमुकम्पा उपावण काम—र जीर्ण ।

इम्ह मनी न हिंसा समुद्र (द्वीप) री,

अधिन वस्तु रा १६ मात्र २० मा० ॥२८॥

ज्यौं ने द्वेष घणो करुणा तणो,

उदय आयो भिग्यात रो पाप—रे जीवाँ ।

तथी अनुकंपा में पाप छे,

एवी (कोई) मंद करे छे थाप—रे० मो०॥२॥

त्यों ने ज्ञानी कहे समझायवा,

इन्द्र जे-जे न करे काम—रे जीवाँ ।

तिण में पाप कहो तो विचार लो,

केइ काम रा लेऊँ नाम—रे० मो०॥३॥

श्रीकृष्ण नरेश्वर महामती,

जाँए पड़हो दीनो फिराय—रे जीवाँ

जो दीक्षा लेवो श्री नेम पे,

मैं पिछला री करूँ सहाय—रे० मो०॥४॥

सहस्र-पुरुष संयम लियो,

यो परतख महा-उपकार—रे जीवाँ ।

पिण इन्द्र पड़हो फेरथो नहीं,

तिणरो बुधवन्त करो विचार—रे०॥५॥ —

जो इन्द्र काम कियो मर्ती,

विणसूँ कृष्ण ने कहे(काई)पाप—रजीबों ।

त जिन धर्म रा बगाराण छे,

लोटा हेतु री करे बाप—रे० मो० ॥६॥

सेणिक पकरो पेटाबियो,

साधु मे बेपो रवान—रेजीबों ।

बलि जीवहिंसा करो मर्ती,

सप्तम अङ्ग में करो ध्यान—रे० मो० ॥७॥

यो काम इन्द्र कीषा नहीं,

सणिक कीषो घर ध्यान—रेजीबों ।

वे वा सोंपो समदृष्टि हुंवा,

हुम पाये दिखे ज्ञान—रे० मो० ॥८॥

मेणिक इम न विचारियो,

यो इन्द्र करयो नहीं काम—रजीबों ।

मुक्त न धम होसी के नहीं

एवी राका न ध्याणी साम—रे० मो० ॥९॥

तो पिण (कुमति) इन्द्र रो नाम ले,

अनुकम्पा में नाखे भर्म—रेजीवाँ ।

पिण इन्द्र ज्ञान में देखे तिम करे,

अनुकम्पा तो आछो धर्म—रे० मो०॥१०॥

सावद्य ने निरवद्य वली,

अनुकंपा रा भेद दोय—रेजीवाँ ।

इन्द्र क्या नहिं तुम भणी,

थे भाखो क्यों निर्वुध होय—रे०मो०॥११॥

तब तो भटके बोल दे,

म्हारे इन्द्र सूँ काई काम—रेजीवाँ ।

म्हे सूत्र से करौं परूपणा,

म्हारा गुराँ रो राखाँ नाम—रे०मो०॥१२॥

तो समझो रे समझो जरा,

अनुकम्पा न सावद्य होय—रेजीवाँ ।

सूत्र में न भाखी केवली,

वलि इन्द्र कह्यो नहिं तोय— रे मो०॥१३॥

जो इन्द्र काम कियो नहीं,
 विष्णु कृष्ण ने कहे(कोई)पाप—रेजीवों ।
 त छिन धर्म रा अशाख से,
 छोटा हेतु री करे पाप—रे० मो० ॥६॥

संक्षिप्त पकड़ो केदारियो,
 साधु न रेपो स्वान—रेजीवों ।
 बलि जीवहिंसा करो मयी,
 सत्संग अज्ञ में परो ध्यान—रे० मो० ॥७॥

यो काम इन्द्र कीधी नहीं,
 सणिक कीभा घर ध्यान—रेजीवों ।
 त तो सोंचो समदृष्टि हूँचो,
 तुम पाये हिरवे खान—रे० मा० ॥८॥

भैरविक इम न विचारियो,
 यो इन्द्र करयो नहीं काम—रेजीवों ।
 मुक्त न धर्म होसी के जड़ी,
 एही राका न व्याखी वाम—रे० मो० ॥९॥

“वीर अनुकम्पा आणी नही,
(पोते) न गया न मेल्या साध—रे०मो०॥२॥

मानव मुआ दौय सग्राम में,
एक क्रोड ने अस्सी लाय—रेजीवाँ ॥३९॥

भगवत अनुकपा आणी नहो,
पोते न गया न मेल्या साधरे ।

याँने पहिला पिण वर्ज्या नहो,
ते तो जीवाँ री जाणी विराध—रेजीवाँ ॥४०॥

एमाँ अनुकम्पा जाणता,
तो वीर विचाले जायरे ।

सगलों ने साता उपजावता,
यह तो थोडे में देता मिटाय—रेजीवाँ ॥४१॥

कोणक भक्त भगवान रो,
चेडो वारह-ग्रत धार रे ।

इन्द्र भीड आयो ते समकिती,
ते किण विध लोपता कार—रेजीवाँ ॥४२॥

(अनुकम्पा ढाल—३)

अणुहुँधी पात पठावन,

मत् करो अनुकम्पा री पात—रंजीशों ।

इन्द्र रो नाम लेई-लेइ,

मत् कर्म बोधो साक्षात्—रे०मा०॥१४॥

द-अधिकार कोणिक-बेड़ा का संभ्राम
मिटाने में पाप कहते हैं, इसका उत्तर ।

केइक कुमठी इम करे,

संभ्राम कुड़ाया पाप—रंजीशों ।

पहली पिछ नहिं कर्जखा,

युद्ध होता आणो साफ—र० मो० ॥१॥

कुपड़ा कोणिक री साख दे,

मोलों ने सिखावे बाद—रेजीशों ।

—बिसा कि वे करने हैं—

बेड़ा के आर्थिक भी बारता

गिरपावसिद्धा भगवती साख दे ।

चवदेपूर्व चार ज्ञान ना,

गोतमादिक लब्धी धार—रे जीवाँ ।

याँने हिंसा मेटण मेल्या नहीं,

कोई कारण कहो निरधार—रे०मो०॥७॥

कोणिक भक्तो वीर नो,

चेडो वारा-व्रत नो धार—रे जीवाँ ।

(याँने) उपदेश देता वीर जाय ने,

दोनों हिंसा देता टार—रे० मो० ॥८॥

तब तो बोले पाधरा,

“होणहार न मेटी जाय—रे जीवाँ ।

(केवल) ज्ञान में देख्या थी ना गया,

वलि साधु न मेल्या साय”—रे०मो०॥९॥

तो डमहिज समजो भाव थी,

संग्राम मेटण मे धर्म—रे जीवाँ ।

न्याय रीत समभाविया,

शान्ति हुए नवन्धे कर्म—रे०मो०॥१०॥

पाने पेहला पिण्य वर्ष्मा नही,

आयुषा था संप्राम में पात—रेजीबों ।

युद्ध मिटाया पाप छे,

तेधी कही न मेन्ण पात'—रे० मो० ॥३॥

(उत्तर) मोला भरमावण तयो,

यो तो परजल मोंदियो कन्द—रेजीबों ।

दानी पूछे तेहने

तब मुकन्दो ही आबे कन्द—रे० मो० ॥४॥

ओ युद्ध मेन्ण बीर ना गया,

तेधी रण मेन्ण में पाप—रे जीबों ।

ता हिंसा मेन्ण बीर ना गया,

तेधी हिंसा मेन्ण में पाप ?—रे० मो० ॥५॥

तब ता बोले उतावला,

हिंसा मेन्णों तो होबे धर्म—रे जीबों ।

(ता) बीर मेन्ण किम ना गया,

महा हिंसा रा छोर धर्म—रे० मो० ॥६॥

६—अधिकार समुद्रपालजी ने चोर
पर अनुकम्पा नहीं करी कहते हैं,
उसके विषय में ।

पालित श्रावक गुणमणि,
प्रवचने परिष्ठित जाण—रे जीवाँ ।
समुद्रपाल सुत तेहनो,
महल माँहे वेठो सुखमाण—रे० मो०॥१॥
फाँसी-योग एक पुरुष ने,
फाँसी रो पेरायो वेप—रे जीवाँ ।
तिणने मारण ले जावताँ,
समुद्रपाल देख्यो विशेष—रे० मो०॥२॥
करुणा उपजी अति घणी,
अहो-अहो कर्म-विपाक—रे जीवाँ ।
वैरागे संजम लियो,
मोक्ष गया करम कर खाक—रे० मो०॥३॥

अनुकम्पा-विचार

मय जीव होमकर वीरजी,

“सुगहायेंग” माँय दस—रे जीवों ।

अय मेरे मय जीव रा,

अमरंकर बिरुद विशाल—रे० मो०॥११॥

अगवन्त विचार दरा में

सौ-सौ कोसों रे माँय—रे जीवों ।

अनुप्यों रे उपद्रव ना रहे,

पिण्ड होयी तो मिट नाँय—रे० मो०॥१२॥

किम बेड़ा-कोष्ठिक संग्राम में,

न्याये मिटाया मोटो-धर्म—रे जीवों ।

मिन्तो न वृक्षो ज्ञान में,

अमु ना गया समझो धर्म—रे मो०॥१३॥

अनुकम्पा लुटायना

मिथ्या माँझा बाँ परपंच—रे जीवों ।

बहुर विचारे न्याय न

त्याग देव मिथ्या संच—रे० मो०॥१४॥

जिम 'जीरण' भाई भावना,

वीर रो नहि मिलियो जोग—रे जीवाँ ।

तिरियो निर्मल भाव थी,

व्यवहारे रयो वियोग—रे० मो० ॥८॥

तिम मरता पुरुष देखने,

करुणा उपजी मन माँय—रे जीवाँ ।

गरुप जाण संसार नो,

समुद्रपाल नी धूजी काय—रे० मो० ॥९॥

चोर अपराधी राय नो,

ते राख्यो कहो किम जाय—रे जीवाँ ।

व्यवहार नहो यह जगत नो,

राखण री शक्ति नाय—रे० मो० ॥१०॥

तेहथी छोड़ाई ना सक्या,

पिण छोड़थो ससार—रे जीवाँ ।

भावौ करुणा आदरी,

तेथी पाया भव नो पार—रे० मो० ॥११॥

(कह) “अनुकम्पा न आखी बार सी”

एही कुमति काहे बाँध—रे जीवों ।

अनुकम्पा रो धर्म उधापवा,

मोला ने दिया भरमाय—रे० मो० ॥४॥

हुएनी बेक कोइ जीव ने,

करुणा अपने मन बाँध—रे जीवों ।

कामल-भाव करुणा कही

हु-समंठय भाव करुण्य—रे० मो० ॥५॥

शक्ति अबसर पाय मे,

पर-जीवों रा मटे हुक—रे जीवों ।

सफल करे निज माय न,

करुणा रे हो समुक्त—रे० मो० ॥६॥

जा शक्ति अपसर ना हुवे,

अनुकम्पा रहे मम बाँध—रे जीवों ।

त भाव करुणा जिन कही,

व्यवहार माय दिमाय—रे० मा० ॥७॥

जिम 'जीरण' भाई भावना,

वीर रो नहिं मिलियो जोग—रे जीवाँ ।

तिरियो निर्मल भाव थी,

व्यवहारे रयो वियोग—रे० मो० ॥८॥

तिम मरता पुरुष देखने,

करुणा उपजी मन माँय—रे जीवाँ ।

सरूप जाण संसार नो,

समुद्रपाल नी धूजी काय—रे० मो० ॥९॥

चोर अपराधी राय नो,

ते राख्यो कहो किम जाय—रे जीवाँ ।

व्यवहार नहीं यह जगत नो,

राखण री शक्ति नाय—रे० मो० ॥१०॥

तेहथी छोड़ाई ना सक्या,

पिण छोड़थो संसार—रे जीवाँ ।

भावौं करुणा आदरी,

तेथी पाया भव नो पार—रे० मो० ॥११॥

अनुकम्पा-विचार

समुद्रपाल नो नाम स,

करुणा उठावण काज—रे जीवों ।

त बेरी अनुकम्पा सया,

मूठ बोलण री नहिं लाज—रे० मो०॥१२॥

ममकीब हिरण में धारजो,

निश्चय करुणा रा भाव—रे जीवों ।

राकि खान्द सफ़लो करे

जब मिले व्यक़्कार रो दाब—रे मो०॥१३॥

साबु भावक होनों ठया,

करुणा रा भाव सुहाय—रे जीवों ।

परबग़ी सुइ-सुई,

हुम जाओ सूत्र रो न्याय—रे० मो०॥१४॥

जिनकस्पी बीबरकस्पी नी,

प्रवृत्ति एक न होय—रे जीवों ।

एक क़त्मा प्राप्ति हुवे

वृज नहिं करवा बी जोय—रे० मो०॥१५॥

तिम श्रावक साधू तणी,

भिन्न-भिन्न छे मर्याद—रे जीवाँ ।

गेही (गृहस्थ) न करे पापी हुवे,

ते ही करवोन कल्पे साध—रे० मो०॥१६॥

भूखा राखे भोजन ना दिये,

श्रावक होवे दया हीण—रे जीवाँ ।

साधु आहार न देवे गृहस्थ ने,

ते तो कल्प राखण परवीण—रे० मो०॥१७॥

“साधु-श्रावक दोनो तणी,

अनुकम्पा प्रवृत्ति एक”—रे जीवाँ ।

एवी (केई) करे प्ररूपणा,

उत्तर पूछ-थौं पलटता देख—रे० मो०॥१८॥

साधु उपधि में उलझिया,

उँदरादिक जीव जाण—रे जीवाँ ।

(साधु) अनुकम्पा आणी ने छोड दे,

नहि छोड़-थौं थी होवे हाण—रे० मो०॥१९॥

गद्दी (गृहस्व) रे रम्मी में ललकिया,

गायारिक माखी जाख —रे जीवों ।

गेही दया से झोक दे,

नहिं झोक यों थी होवे हस्य —रे० मो० ॥२०॥

धम बतावे साध न

गद्दी न बतावे पाप —रे जीवों ।

फर्क पड़-यो किछु कारण,

छाटी अछा वीज्य साध —रे० मो० ॥२१॥

“माधु भावक री एक गीत छे,”

मूँडा थी बालो एम —रे जीवों ।

बोनो मरोन्वा कम में,

तुम फर्क बतावो केम —रे० मो० ॥२२॥

जीव सर साधु योग थी

गदर्य बनाया धर्म —रे जीवों ।

गद्दी गद्दी न जीव बनाय द

विश्व ज ता बनाया अधर्म — रे० मा० ॥२३॥

जीव वन्या दोनो जगा,

दोनो रा दलिया पाप—रे जीवों ।

इन दोनों सरिखा काम मे,

उलट-पलट करे न्योटी थाप—रे० मो० ॥२४॥

धर्म बतावे एक मे,

दूजा में केवे पाप—रे जीवों ।

यो कुटिल-पन्थ कुगुरों तणो,

खोटी श्रद्धा दीजे साफ—रे० मो० ॥२५॥

कुगुरु कपट ओलखायवा,

जोड़ करी शुद्ध न्याय—रे जीवों ।

ज्यष्ठ कृष्ण चतुर्दशी,

उगणीशे छियासी माँय—रे० मो० ॥२६॥

तीसरी ढाल समाप्तम्

दोहा

हुस्तिपा वस्ती तावबे, जो कोई मेले दाय ।
पाप बचावे रोह ने, मन्मती री वाय ॥१॥
इस हणाय मल आणबे, तीनों करमा पाप ।
तिम रक्षा माखी कहे, (या) लोटी मझा छाफा ॥२॥
कर्म छदे बी अविदा तीम बेवना पाय ।
भारत-रुद्र प्याल घी, माथों कर्म बैषाम ॥३॥

कर्मबन्ध टालन तणो, ज्ञानी करे उपाय ।
 उपदेशे अरु साज थी, देवे कष्ट छुड़ाय ॥४॥
 साधु कल्प थी साध जी, गृहस्थ कल्प थी गृस्थ ।
 तीव्र आरत मिटाय ने, सन्तोषी करे स्वस्थ ॥५॥
 दु ख मेटण में मन्दमति, पापबन्ध बतलाय ।
 असंजती रो नाम ले, खोटा चोज लगाय ॥६॥
 मारणवालो असजती, असजती माखो जाय ।
 एक देवे महावेदना, एक (महा) दु खे घवराय ॥७॥
 आरत रुहर ध्यान थी, दोनों बाँधे पाप ।
 पाप टलावे बेहुना, ते ज्ञानी मन साफ ॥८॥
 (कहे) “हिंसक पाप छुड़ाय दौं, मरे ते भुगतो कर्म ।
 दु ख मेटे कोई तेहनो, म्हे नहि मानौं धर्म” ॥९॥
 या श्रद्धा कुगुरु तणी, मिथ्या जाणो साफ ।
 सत युक्ती माने नही, उदय मोह रो पाप ॥१०॥
 जीव बचावा ऊपरे, खोटा देवे न्याय ।
 (ते) युक्ति थी खण्डन किया, मिथ्या-तम मिटजाय ।

दोहा

दुस्निया देखी तावहे जो कोई मेले जाय ।
पाप बहावे तेह ने, सम्ममती री बाय ॥१॥
इस्य इणावे भल जाणवे, तीनों करना पाप ।
सिम रक्ता भारी कहे, (पा) सोयी मर्या साका ॥२॥
कमे छे भी जीवका, तीस्र बेदना पाय ।
आपद-रुद्र ध्यान पी, गायों कर्म बैषाय ॥३॥

भेम्प्या ते जातौं देखने,

दयावन्त दया लाय हो भ० ।

छाछ पाय सन्तोपियो,

तिरखा दिवो मिटाय हो भ० करो० ॥४॥

हिंसान लागी भेस्या भणी,

जीवाँ री दलगई घात हो भ० ।

दया शान्ति दोयाँ तणी,

धर्म तणी या वात हो भ० करो० ॥५॥

जो पाप वतावो थे एह में,

तो खोटो थारो पक्षपात हो भ० ।

(तलाई) नाड़ा भेसों री नाम ले,

थे कहणा री कर रया घात हो भ० करो० ॥६॥

(कहे) “साधु छाछ पावे नहीं,

तिण थी वतावाँ पाप हो भ० ।

जो इनमें साधु धर्म मानता,

तो झटपट करता आप हो भ०” करो० ॥७॥

चौथी-ढाल

— ❧ —

(कइ) “जाहो भरियो हो बेंडक मावला,
तिण पर मेँस्यो ब्यायो बलाय हो भविकजन ॥

तिणने ईकास्या हुख मी मरे,
नही ईकास्या मरे तखकाय हो भविकजन ॥

करो परीका सत धर्म री ॥१॥

धर्मी जोराने केहन,
कर्म कटी हुख पाय हो भविकजन ।

लाय लागी संसार मे
बीचे पदिया पाप बेंडाय हो भ०” करो० ॥२॥

(बचर) हम मोलाँ ने भरमापवा,
सोग लगाया म्याम हो भ० ।

झानी कहे दिवे सौमलो,
इण भग्म ने बर्षो मिटाव हो भ० करो० ॥३॥

इम सुलिया-धान रो नाम ले.

लटॉ, इल्याँ रो न्याय हो भ० ।

गचा-पाणी ने कन्द रो,

तीम ऊकरड़ी मुख लाय हो भ० करो० ॥१२॥

ह्रा ने विह्ली तणा,

माखी-माखा चित्राम हो भ० ।

दया काढ़ण कुगुरु किया,

खोटा जारा परिणाम हो भ० क० ॥१३॥

(उत्तर) ज्ञानी-पुरुष हुआ घणा,

सूत्र रच्या तंतसार हो भ० ।

जीवरक्षा रे कारणे,

देखो "संवरद्वार" हो भ० करो० ॥१४॥

जिण न्याय हेतु दृष्टान्त थी,

कोमल हूवे चित्त हो भ० ।

(उत्तर) साधु गद्दी रा कल्प रो,

म्यों रे पट में पार चँपार हो म० ।

तर्फी साधु रा नाम ल (गृहस्थ गी)

दया मुकाने धिक्कर हो म० क्यो० ॥८॥

मिनकल्पी आत्तरता त्यागियो,

बीबरकल्पी ने दखा आदर हा म० ।

न परिचय टासगु कागण,

मा कल्पतखा म्यवहार हो म० क्यो० ॥९॥

बीबरकल्पी बीका समय,

गृहस्थ न देखो आदर हो म० ।

त्याग्या परिचय टालवा,

मो मुनि रा आचार हो म० क्यो० ॥१०॥

तर्फी साधु म द गद्दी न

ते कल्प रा मोटी काम हो म० ।

गद्दी देव पाप मुकानेवा,

ते कल्पे सुप परिणाम हो म० क्यो० ॥११॥

[कारज करता थकाँ,

भारी टलजावे पाप हो भ० ।

पापनो परनो बेहु नो,

करमाँ ने नाखे काप हो भ०करो० ॥१८॥

ज्ञान दर्शन होवे निर्मला,

पाप टालण परिणाम हो भ० ।

संवर निरजरा दीपती,

सद्गुण रो होवे धाम हो भ०करो०॥१९॥

पेला रो पाप छुड़ावियो,

ते पिण पावे ज्ञान हो भ० ।

तो पथिक होवे ते मोक्ष रो,

गुणाँ रो ध्यावे ध्यान हो भ० करो०॥२०॥

जो ज्ञान पावण शक्ति नहीं,

तो पिण टलियो पाप हो भ० ।

तीव्र आरत रुकवा थकी,

मिटे महा सन्ताप हो भ० करो० ॥२१॥

तथा अनुकम्पा करगे,

ते सत-साक्षरही रीत हो म० करो० ॥ १५

मिथु न्याय हेतु दृष्टान्त भी,

इया माय बढ जाय हो म० ।

तं कुइद जाणजो,

(शे) सौंभो समझो न्याय हो म०-क० ॥ १६

अस्य-पाप बहु-पाप रा,

झानी बताया कर्म हो म० ।

पुष्कन्त समझ खान सूँ,

बोलके मुख परियाम हो म०-क० ॥ १७

इ—य सुखा परिवर्ज्यन्ति तं
लतिमद्विसय ॥

(४ अ ३)

अर्थात् जिसके अन्तर से रूप समाप्त और अर्द्धि-
इस गुणों की प्राप्ति हो वह सुखा प्राप्त है ।

दु ख दियौं हिंसा हुवे,

सुख अनुकम्पा जाण हो भ० ।

घूघू ने सूफे नहीं,

परगट ऊगो भान हो भ० करो० ॥२६॥

पापी ने धर्मी करे,

देइ दान सम्मान हो भ० ।

कीधो मिथ्याती रो समकित्ती,

करि बहुलो सन्मान हो भ० करो० ॥२७॥

इत्यादि पर-उपकार में,

एकान्त थापे पाप हो भ० ।

सूत्र-वचन उत्थाप ने,

या खोटी श्रद्धा साफ हो भ० करो० ॥२८॥

पिछलाँ री साल संभाल सूँ,

पुरुषौँ एक हजार हो भ० ।

कृष्ण दलाली थी हुवा,

निर्मल संजम धार हो भ० करो० ॥२९॥

अनुकम्पा-विचार

(पिण) कुटुम्ह क्यन छोटा किया,

पाप मटण में पाप हो म० ।

भोलों में भरमायवा

छोटी कर रवा जाप हो म० करो० ॥२२॥

महापाप टलाने पारका,

तन घन ममत्त छार हो म० ।

साथ करे सन्तोष दे,

विधिष करे उपकार हो म० करो० ॥२३॥

ज्ञान दया शुष भाव सँ,

गले पर रो पाप हो म० ।

तीव्र-वेदना दुःखाय दे,

अन मेरु सम्हाप हो म० करो० ॥२४॥

छलटी-मदि रा सामची

दुःख मेटण में पाप हो म० ।

धर्म चरा भरो नहीं,

सोरो जारा जाप हो म० करो० ॥२५॥

दुख दियाँ हिंसा हुवे,

सुख अनुकम्पा जाण हो भ० ।

घूघू ने सूमे नहीं,

परगट ऊगो भान हो भ० करो० ॥२६॥

पापी ने घर्मी करे,

देइ दान सम्मान हो भ० ।

कीधो मिथ्याती रो समकिती,

करि बहुलो सन्मान हो भ० करो० ॥२७॥

इत्यादि पर-उपकार में,

एकान्त थापे पाप हो भ० ।

सूत्र-वचन उत्थाप ने,

या खोटी श्रद्धा साफ हो भ० करो० ॥२८॥

पिछलाँ री साल संभाल सूँ,

पुरुषाँ एक हजार हो भ० ।

कृष्ण दलाली थी हुवा,

निर्मल सजम धार हो भ० करो० ॥२९॥

अमुक्या-विचार

येत्र कामेत्र बासी ममा,

वासा कसा जिणराज हो भ० ।

पात्र-अपात्रे दान दे,

जित्पर्म रिपाचण काम हा भ० करो ॥३०॥

शंख होवे लो देखलो

“ठाण्णायका” रे माय हो भ० ।

चौथा ठाणे जिन क्यो,

ममक सरथा पाय हो भ० करो ॥३१॥

कहि कहि ने कितनो कहूँ,

दुष-भाषे पर उपकार हो भ० ।

धर्म-पुण्य सुख उपमे,

पावे सुख भीकार हो भ० करो ॥३२॥

बीयासर माँहे मल्ली,

जोद करी पर ध्यान हो भ० ।

पुनमचन्दजी री हाट में

कयोसी साज वरम्यान हो भ० करो ॥३३॥

बीबी हाक समस्त

दोहा

अनुकम्पा उत्थापवा, देवे तीन दृष्टान्त ।

ते यथायोग खण्डन करूँ, ते सुणजो मन शान्त ॥१॥

पाँचवीं-ढाल



(तर्ज-सहेल्योँ ए आँवो मोरियो)

केई कुहेतू इम कथे,

(वली) देखाड़े हो काँकरा चित्राम ।

“एक चोर चोरे घन पारको,

एक मारे हो पंचेन्द्री ने ठाम ॥”

शुद्ध श्रद्धा ने ओलखो ॥ १ ॥

(भवि) शुद्ध श्रद्धा ने ओलखो,

किणविध री हो रची माया जाल ।

भयभङ्गा-विचार

करुणा न कथापणा,

भोला नै हो माख्या भ्रमजाल ॥भु०॥ ॥

“एक सम्पद पर-नार ना,

जो तीनों रे हो कर्म नो बन्ध होय ।

(पौ) तीनों नै मायु मिस्या,

प्रतिबोझा हो कर्म बन्ध न होय ॥बु०॥३॥

जो तीनों नै (मुनि) समझारिया,

तीनों य हो दास्या महा-पाप ।

चोर चोरै बोझा बका

बन रखा हो दास्यो घनि सम्पाप ॥बु०॥४॥

हिंसक हिंसा बोझ ही

जीव बधिया हा धर्म प्रेमधुरता ।

पर-नारी त्यागी तिण पुरुष री,

पकी कूजे हो नारणी क्यारे रग ॥बु०॥५॥

घन, जीव रया नारी मुई,

जो रे काजे हो नहीं दाँ ॐ उपदेश ।

चोर हिंसक लम्पट तणा,

पाप छोड़ावाँ हो मारी श्रद्धा री रेश"॥शु०॥६॥

ॐ जैपा कि वे कहते हैं —

चोर तीनो ही समज्याँ थकाँ,

धन रह्यो हो धनी रो कुशल क्षेम ।

हिंसक तीनों ही प्रतिबोधिया,

जीव बचिया हो किया मारण रा नेम ॥

भय-जीवाँ तुमे जिन-धर्म ओलखो ॥७॥

जे शील आदरियो तेहनी,

छी हो पढ़ी कृपा माँही जाय ।

याँरो पाप धर्म नहिं साधु ने,

रह्या मूवा हो तीनों अवत माँय ॥भ० ॥८॥

धन रो धनी राजी हुवो घन रह्यो,

जीव बचिया ते पिण हर्षित थाय ।

साधु तरण तारण नहीं तेहना,

नारी ने हो पिण नहीं दुयोई आय ॥भ० ॥९॥

(अनुकम्पा दाल—५)

इसका कुतरेतु फैलाने,

जीवरक्षा में हो बचाने पाप ।

उत्तर इष्टये सौमलो,

तेजी मिटे हो मिथ्या सन्ताप ॥ सु० ॥ ७ ॥

भोर अदृष्ट ले पारको,

ते धन मे हो दुःख-मुक्त मन्त्री कोष ।

धन रु घणी ने दुःख कपडे

इष्ट वियोगे हो आरव बहु होष ॥ सु० ॥ ८ ॥

तेजी अदृष्ट-पाप प्रसु माणियो,

धनहर ने हो मुनि बे उपदेरा ।

पर-धन परमा (वाद्य) माया है,

त हरता हो दुःख पावे विशेष ॥ सु० ॥ ९ ॥

भोर ने मुनि मतिबोष है,

स्थिर मर मा हो माठा टासन पाप ।

धन घणी ने आत्म वण्डो,

पाप दु क ना हो मेवण सन्ताप ॥ सु० ॥ १० ॥

इम पाप छुड़ावे वेहू ना,

वेहू नरना हो वलि टलिया दु ख ।

कर्मबन्ध टल्या मोटका,

दोनों रे हो हुवो शान्तिनो सुख॥शु०॥११॥

केई साहूकार रा पूत रो,

देवे हेतू हो दया काढ़न काज ।

“एक ऋण लेवे कोई पारको,

ऋण मेटे हो दूजो धरि लाज ॥शु०॥१२॥

ऋण लेवा ने बरज दे,

ऋण-मेटण हो नहिं रोके वाप ।

तिम हिंसक बकरा नित दणै,

करज करता हो बाँधे बहुपाप ॥शु०॥१३॥

बकरा रे कर्ज चुके घणो,

ऋण-मेटक हो पुत्तर सम जाण ।

साधु पिता सम तेहने,

किम बरजे हो कहो चतुरसुजान॥शु०॥१४॥

अनुकम्पा-विचार

हिंसक न बरसे सही,

करम शूल रो हो क्यों बाँधे रूँ भार ।”

इस भोला न भरमायवा,

रख दीनी हो हूँ-हूँ की डारा ॥१५॥

● जैसा कि वे करते हैं —

जैसे बकरा रो जीवणु

बाँधे नहीं किनार ।

तिन ऊपर छान्त ते

सामक्यो सुककर ॥ १ ॥

साहुकर रे दीन सुत

एक क्यूँ बन्यार ।

अन क्यही जागा ठह

माँके करे अपार ॥ २ ॥

दूँधो सुत अन दीपतो

यद्य ससार महार ।

करदी जागी रो करज

उठारे तिन बार ॥ ४ ॥

कहे ज्ञानी तुमे कुहेतु श्री,
मिथ्यापस नो हो कीनी या थाप ।

कहो केहने वरजै पिता

दोय पुत्र मे देख ।

वर्जै कर्ज करे तसु,

के ऋण-मेदत पैव ॥ ९ ॥

॥ ठाल ३२ मीं ॥

(समता रस विरला प देशी)

कर्ज माथे सुत अधिक करंतो ।

बार-बार पिता वरजंतोरे, समझ नर विरला ॥

करड़ी जागौं रा माथे काम कीजे,

प्रत्यक्ष दुख पामीजे रे ॥ सम० ॥ १ ॥

अधिक माथा रो कर्ज उतारे,

जनक तास नहिं धारे रे ॥

पिता समान साधु पिछाणो,

बकरो रजपूत वे सूत माणो रे ॥ सम० ॥ २ ॥

हिंसक न बरजे सही,

कर्म जगत् से हो क्या बाँधे तूँ मार ।”

इस मोला में भरमापका

रज दीनी हो झूठी-झूठी छे डाराछु०॥१५॥

● जैसा कि वे करते हैं —

वे कत्ता रो भीषण

बाँधे नहीं किनार ।

सिंह ऊपर दहलत से

साँसक्यों सुकड़ार ॥ १ ॥

साँसक्यों र दीव सुत

एक क्यूँ कलवार ।

जग क्यदी जगता तनु

भाँधे कने अपार ॥ २ ॥

दुखी सुत जग दीपती

जल सुखार मझार ।

क्यदी जगों से कर्म

कतार सिम बार ॥ ३ ॥

तेथी हल्का करम भारी हुवे,

मन्द-रस ना हो तीव्र-रस पहिचान ॥ शु० ॥ १७ ॥

अल्पस्थिति महास्थिति करे,

पाप भोगतौ हो बाँधे माठा कर्म ।

एवी करकश-वेदनी वेदता,

अरड़ावे हो ज्ञानी जाणे मर्म ॥ शु० ॥ १८ ॥

एवा कर्मबन्ध ना काम में,

कर्म-छूटण हो लेवे मिथ्या नाम ।

न्याय अन्याय तोले नहीं,

परतख दीखे हो माठा परिणाम ॥ १९ ॥

सो वकरा कसाई हणता थका,

मुनिवरजी हो तिहाँ दे उपदेश ।

ते घात टालण वकरा तणी,

कसाई रा हो मेटण पाप कलेश ॥ २० ॥

करकश वेदना उपज्याँ,

वकरा ध्यावे हो महा आरत-ध्यान ।

पकरो दुःख भी पकड़ने,

दुःख पावे हो वेने अति सुन्दाप ॥ छ० ॥ १६ ॥

शान्ति मात्र छ्यारे नहीं,

वीज आरत हो ध्याये रहै ध्यान ।

कर्म कय कल माये कय करतो

आगच्छ कर्म कय अपहरतो रे ॥ सुम ॥

कर्म कय रखत माये करे के

बन्दा संनिष्ठ-कर्म भोगये ॥ रे ॥ ३ ॥

छाड रखत ने बरें सुदात

कर्म करत करे कोय रे ॥ सुम ॥

कर्म बध्या बन्दा गीता छाडी

परमेश में दुःख पासी रे ॥ ४ ॥

छाड पये निज ने समझाओ

निजरी निरली बन्धो मुक्तिरानो रे ॥ सुम ॥

बन्दा बीजात्म नहीं रे उपदेश,

कही आगच्छ बुद्धिबन्त रेस रे ॥ ५ ॥

(मिथुजल रसात्मल)

पैसा ने दुख-सुख नहीं,

किम होवे हो दया चतुर सुजाण ॥२५॥

आगत-रुद्र बकरा तणो,

मुनि मेटण हो देवे उपदेश ।

पैसा रे ध्यान-लेश्या नहीं,

सुख-दुख रो हो नहि तिणरे क्लेश ॥२६॥

प्राणी-अनुकम्पा मुनि करे,

जड़-धन में हो नहि करुणा रो लेश ।

जो जीव जड़ एकसाँ गिणे,

निर्दयता हो जारा घट में विशेष ॥शु०॥२७॥

हिसक पाप मेटण कहो,

बकरा रो हो मेर्याँ कहो दोष ।

चूक पडी इण में किसी,

थारो दोखे हो बकरा पर रोपा ॥शु०॥२८॥

इम पाप छुटा वेहू तणा,

वेहू जीव ना हो बलि टलिया दु ख ।

बलि रह-भ्यान पिछा ऊपज,

“ठग्याभग” (में) हो जोबो धरम्भान ॥२१॥

पूर्व कर्म दोनों मोगमे,

नवा बोध हो दोनों बैराणुबन्ध ।

मुनि उपकारी मेहुना,

अपनेरो हो टाल केहुना छन्द ॥२२॥

(छन्द) “हिस्रक पाप मुक्त्यवा,

में तो देवाँ हो धर्म रो अपनेरा ।

बक्य, धन एक सारखा,

विखरे कारण हो नहिं वाँ अपनेरा” ॥२३॥

(उत्तर) गवी करे केई थापखा,

बिहस हुआ हो अमुकम्पा रे द्वेष ।

पाणालुकम्पा ममु बही

मई। पैसा नी हो(अमुकम्पा)अरा समझे रेसा २४।

(उन धर्मी) धनिक री अमुकम्पा हाथे,

प्राप्तधर्मी हा बक्य री विद्वान् ।

मास-खमण रे पारणे,

गोचरी आया हो मुनिजी गुणखाण ॥३३॥

कोई मूरख मन में चिन्तवे,

आहार बेराया हो निजरा बन्द होय ।

नहिं बेरायौ निजरा घणी,

तप बधसी हो मुनि ने गुण जोय ॥शु०॥३४॥

जिण सुपात्रदान न ओलख्यो,

ते मूढ़-मति हो एवो करे विचार ।

मुनि जाँचे छे आहार ने,

देवणवाला ने हो हुवे लाभ अपार ॥शु०॥३५॥

कदा आहार मुनि ने मिले नहीं,

समभावे हो निजरा बहु होय ।

त्याँने पिण आहार आपताँ,

दाता रे हो धर्म रो फल जोय ॥शु०॥३६॥

मुनि दान माँगे दाता दिये,

दोनों रे हो धर्म रो फल होय ।

कर्मबन्धन टप्पा मोटका,

दोनो रे, हो हुबो शान्ति नो सुख ॥२९॥

करा लोटी फस लोनी करो,

‘मरता (जीव) कासे हो नहिं नो उपरेरा ।

विखरे निम्बरा होती बम्ब हुबे,

म्हारी सरधारी हो या र्द्धी रेस” ॥३०॥

(उत्तर) इय लेखे तो हिंसक मणी,

उपरेरा देखो हो योरे पाप रे मौय ।

हिंसा जोद-यो बकरो बये,

तया निम्बरा हो होती रुक जाय ॥३१॥

इम अन्के मया बाहरी,

लोटी मौडी हो तुमे माया जल ।

इय मिथ्या-पल ने जोद पो,

सन्-भया रो हो मन भायो क्वाण ॥३२॥

नेत्ररा भर्म मिटापया

एक हेम हो सुयो चतुर सुजाण ।

गाम-ग्रामण रे पारणे,

गोचरी आया हो मुनिजी गुणग्राण ॥३३॥

कोई मूरख मन में चिन्तवे,

आहार बेराया हो निजरा बन्द होय ।

नहिं बेरायों निजरा घणों,

तप बधसी हो मुनि ने गुण जोय ॥शु०॥३४॥

जिण सुपात्रदान न ओलख्यो,

ते मूढ-मति हो एवो करे विचार ।

मुनि जाँचे छे आहार ने,

देवणवाला ने हो हुवे लाभ अपार ॥शु०॥३५॥

कदा आहार मुनि ने भिले नहीं,

समभावे हो निजरा बहु होय ।

त्याँने पिण आहार आपताँ,

दाता रेहो धर्म रो फल जोय ॥शु०॥३६॥

मुनि दान माँगे दाता दिये,

दोनों रे हो धर्म रो फल होय ।

कर्मपण्डन टस्या मोटका,

रोनों रे, दो दुवा शान्ति सा सुख ॥२९॥

करा स्योटी पन्प सौंभी क्यो,

“मरता (जीव) काजे हो मर्हि यों कपरेरा ।

दियरे निज्जरा होवी बन्ध हुबे,

म्हारी सरघारी हो या ऊँही रेस” ॥३०॥

(उत्तर) इण जसे वो दिसक मणी,

कपरेरा वेशो हो थोरि पाप रे सौंभ ।

दिसा छोड़-यों बकरो बचे,

सदा निज्जरा हो होवी रुक जाय ॥३१॥

इम चटके भखा बाहरी,

लाटी सौंही हो तुमे माया जाल ।

इण भिण्या-यल ने छोड़ हो,

सत्-भखा रो हो मन चाख्खा क्खाल ॥३२॥

निज्जरा मम मित्रायवा

एक इतू हो सुणो चतुर मुजाय ।

भय मेझ्यो अभयदान छे,
 समदृष्टि हो लेवे हिरदा में धार ॥शु० ॥४१॥
 (पिण) समभाव बकरा रे नही,
 तिणरे निजरा हो कहो किणविध होय ।
 आर्त्त-रुद्र परिणाम थी,
 माठा पाप रो हो बन्ध करयो सोय ॥४२॥
 तेथी तिणने बचाया गुण होवे,
 निजरा री हो अन्तराय न कोय ।
 भय मिटियो, गुण नीपज्यो,
 भेटणहारो हो अभयदाणी होय ॥४३॥
 बलि सत्य-हेतु एक सौंभलो,
 तिन वाण्या री हो चाली सूतर में बात ।
 एक लाभ लेई घर आवियो,
 बीजो लायो हो धनमूलज साथ ॥शु० ॥४४॥
 तीजे मूल गमावियो,
 ई दृष्टान्ते हो जाणो दया रो काम ।

अन्तरा नहि निम्नरा तणी

बोई म्याय हो वक्रा रा जाय ॥श्रु०॥३७॥

वक्रो चाये निम प्राण मे,

मरु-मय भी हो धोइये (मुक्त) कोय ।

जो धोइये अमयशमी कइयो,

दाता रे हो फल माटको हाय ॥श्रु०॥३८॥

(जिम) मयभ्रान्त हुओ राय खंखी,

ते ओंये हो मुनि भी कर ओइ ।

अमयदान बा मुक्त भयी,

सुप्रभारण हो अपराय भी ओइ ॥श्रु०॥३९॥

तब प्यास खोल मुनिराय जी,

अमय (दान) बीना हो मय मेणु ओय ।

विम मरता (जीव) भय पामता,

त निर्मय हो अमयदान भी होय ॥श्रु०॥४०॥

तिग अमयदान न पाय मे

ज चाये हा ता मूढ़ गिबौ ।

भय मेझ्याँ अभयदान छे,

समदृष्टि हो लेवे हिरदा मे धार ॥शु० ॥४१॥

(पिण) समभाव बकरा रे नहीं,

तिणरे निजरा हो कहो किणविध होय ।

आर्त्त-रुद्र परिणाम थी,

माठा पाप रो हो बन्ध कर रयो सोय ॥४२॥

तेशी तिणने बचाया गुण होवे,

निजरा री हो अन्तराय न कोय ।

भय मिटियो, गुण नीपज्यो,

मेटणहारो हो अभयदाणी होय ॥४३॥

बलि सत्य-हेतु एक साँभलो,

तिन वाण्या री हो चाली सूतर में बात ।

एक लाभ लेई घर आवियो,

बीजो लायो हो धन मूलज साथ ॥शु० ॥४४॥

तीजे मूल गमावियो,

ई दृष्टान्ते हो जाणो दया रो काम ।

एक जीव बचावा उपवेशो,
 साम बहुलो हो होने शुभ परिणाम ॥४५॥
 मौन रहे बोले नहीं,
 मूल-पूजी रो हो ते रत्नखहार ।
 मार कहे सीजो पापियो,
 मूल पूजी रो हो ते तो सोबखहार ॥४६॥
 केई कुतरकी हम कहे,
 जीव बधिया हो बधे पाप री बल ।
 छोटा म्याय बहुविधि कहे,
 मुमे सुखनो हो छोटी सरपाये खल ॥४७॥
 (कह) 'परमरी-पापी एक पुनपमा,
 उपदेश हा मुनि मेन्धा पाप ।
 पर-नापी जाइ कृष पपी
 तिणरा मुनि न हा नहि पाप-सम्हाप ॥४८॥
 मरना बध्या नारी मुड
 न ना समझों हा शना एक समान ।

वकरा वच्चा दया नहीं,

नारी मुआ हो नहिं हिंसा स्थान ॥शु०॥४९॥

वकरा वच्चा धर्म सरधसी,

तिणरी सरधा में हो नारी मुआ रो पाप ।”

एवा कुहेतू केलवी,

भोला आगे हो करे मत री थाप ॥शु०॥५०॥

(उत्तर) हिवे ज्ञानी कहे भवि साँभलो,

वच्चा-मरिया री हो सरखी नहीं वात ।

वकरा री रक्षा कारणे,

उपदेशे हो मुनिजी साजात् ॥शु०॥५१॥

नारी मारण (मुनि) कामी नहीं,

मारण मे हो नहिं पर-उपकार ।

आत्मघात करे (कोई) पापिणी,

महा मोहवस हो मरे ते नाग ॥शु०॥५२॥

त्याग हेते स्त्री मरे नहीं,

मोह कारण हो वा मरे मत-हीण ।

तिष्ठरी पिय धातु मुदायवा,

उपदेशो हो मुनि धर्म-अमीय ॥शुद्ध०॥१५३॥

मुख उपदेश (करा) बच गई,

तबी दलिया हो महा-मोदनीकर्म ।

आमहस्या टल गई,

गुण निरम्यो हो यो धर्म रो मर्म ॥हु ॥१५४॥

बक्यो नारी बधिया बकर,

गुण निपजे हो ठले पाप बिकार ।

स्वपत्ते गुण नहि नीपजे

सुषमव थी हो क्यो जय विचार ॥ १५५ ॥

मरणा बचावया एक है,

एतो जाणो हो विकलौ रा बेण ।

आरे भान नहीं धर्म-पाप रो,

माय फटा हो दिया रा नय ॥शुद्ध०॥१५६॥

मुनि उपकारी बेहूना

पहु ऊण ना हो मेण्या माटा कर्म ।

जो श्रद्धा पामे ते वेहू,

तो पामे हो संवर नो धर्म ॥शुद्ध०॥५७॥

आरत-रुद्र टले वेहुना,

श्रद्धा योगे हो धर्म-ध्यानी होय ।

उम तिरण-तारण मुनि वेहुना,

उपकारी हो मुनि वेहू ना जोय ॥शु०॥५८॥

कठि कर्म-उदय वेहू जणा,

संवर श्रद्धा हो पामे नहिं दोय ।

तो भारी-पाप वेहू ना टले,

आरत पिण हो हलको बहु होय ॥५९॥

(कदा) उपदेश वेहू माने नहीं,

(तो पिण) साधु रे हो उपदेश रो धर्म ।

(कदा) एक माने एक माने नहीं,

जो माने हो तिणरा टलिया कर्म ॥शु०॥६०॥

किणरी शक्ति नहीं समझण तणी,

तिणगे पिण हो मुनि चंछ्यो हित ।

अमुक्या-विचार

तेधी वन्दल बहु-काया वणा,
 परवल मोचे हो दिवकारी पित ॥शुद्ध०॥६१॥
 “सरदह वलाव” फरेकन वणा,
 त्याहा कराया हो मुनि मेण्या कर्म ।
 सरदह वलाव जीवों वणो,
 दुख दलियो हो मित माकरो धर्म ॥६२॥
 नीम्व धाम्नादिक वृष्ट ना,
 कराया हो मुनि काटण नेम ।
 त दिवकारी वेष्ट वणा,
 तरवर ने हो मुनि कीनो शेम ॥शु०॥६३॥
 उपकार समस्त राखी नही,
 विच्छेन्ना हो जीवों री जाण ।
 मुनि जाण तम वेदना,
 उपरा हो दिवकारी बजाण ॥शुद्ध०॥६४॥
 नव नई गोंब जलावता,
 उपरा हो कराया नेम ।

ते गहक ग्राम वेहू तणो,

पाप टाली हो उपजायो चेम ॥शुद्ध०॥६५॥

इम मांसादि खावा तणा,

सुस करावे हो भेटण तस पाप ।

बलि मासे मरता जीव रा,

दितकारी हो मुनि भेटे मन्ताप ॥शुद्ध०॥६६॥

सूत्र भगोती शतक सातमें,

इम भाख्यो हो श्रो दीनदयाल ।

निर्गोपण मुनि भोगवे,

द्वकाया नो हो बांछक करुणाल ॥शु०॥६७॥

जाँ जीवाँ रा शरीर रो आहार ले,

त्याँ जीवा ना मुनि बांछक होय ।

(तिम) हिंसा दृष्ट्या वच्या जीवड़ा,

उपकारी हो मुनि रक्षक जोया ॥शुद्ध०॥६८॥

जीव मारण में हिंसा कही,

नहीं मारे हो दया रा परिणाम ।

बहु कथा-विचार

मगता जीव बप्पाबिया

मनसा बाणा हो गया रा काम ॥३९॥

ॐ केरक इयमें इम पद,

‘जीवो काज हो नहिं रों उपदय ।

एक हिसक समझवन,

नहिं मटों हा पणजीवो रा डेरा” ॥४०॥

ॐ वैया कि वे कदत हिं—

केरक बगानी इमि कद

ऊ कपरा काज हो रों बर्म उपदेस ।

पण्य जीव वे समझाबियाँ

मिट जावे हा बया जीवो रा डेरा ॥

मण्य जीवो गुमे जिन बम जोकनी ॥४१॥

ऊ बाप घरे गाम्नि हुवे

परी भाये हो कण्य-तोवी बर्म ।

परी भव न पावो जिन पम रा

न ना भूया हा उरु बया बहुमण्य ॥४२॥

(अनुकथा राव—५)

सत्र जीवाँ रे शान्ति होवे,

एहवो भाखे हो दयाधर्मी धर्म ।

कुगुरु तेने पापी कहे,

(बलि) वतावे हो मिथ्यात रो भर्म ॥७१॥

हिवे सद्गुरु कहे तुम साँभलो,

सूतर सूँ हो निरणो लेवो जोय ।

छ काया रे शान्ति कारणे,

उपदेशे हो दयाधर्म ते होय ॥शुद्ध०॥७२॥

सुगडाँग श्रुतस्कन्ध दूसरे,

अध्ययन छठे हो भाख्यो पाठ रे माय ।

अस थावर (जीव) खेमंकर वीरजी,

धर्म भाखे हो मत हणो तस वाय ॥७३॥

असथावर (रे) शान्ति कारणे,

करुणा कही हो दशमा-अंग रे माँय ।

ये सहु (सूत्र) पाठ उधापने,

मिथ्यामति हो बोले मूठा वाय ॥शु०॥७४॥

अनुःशासिका

“शान्ति न हावे हँ इ काय र,”

एवा अनपक हो पकड़ने टाय ।

विप्या-उदय ल सीवर,

तन्य मुन्य भी हो एवा निहत्त कोय ॥१५॥

स्वयंहाय शान्ति परधीन मे

निरप भी हो निज री से होय ।

स्वयंहाय शान्ति ब्याग्या

निग्ये फिजु हा स्थय बग साय ॥१६॥

आग त्रिन अनन्ता हुआ

हँ काया र हो शान्ति करगत ।

॥ ईमा हि वे करने हि—

आने अहिदन्त अनन्ता हुआ

करनी ॥ हा मही जाने न्हीतो कर ।

मे आग नग्न धीत नन्दिता

नन्दिता मे हा अहिम न न्ही निहत्त ॥१७॥

(अनुपम शासिका—५)

दुःख भेटण उपदेश थी,

जगवच्छल हो जग ना सुखकार ॥शु०॥७७॥

जगनाथ, जगवन्धू कह्या,

नन्दी-सूत्रे हो गाथा प्रथम माँय ।

सत्र जीव राखण उपदेश थी,

सुख थापे हो वन्धू पद पाय ॥शुद्ध०॥७८॥

शान्तिनाथ प्रभु सोलमाँ,

शान्तिकरता हो सब लोक रे माँय ।

उत्तराध्येन मे देखलो,

गणधरजी हो गुण जारा गाथ ॥शु०॥७९॥

कही-कही ने कितना कहूँ,

छ काया रे हो शान्तिकरता रा नाम ।

जो शान्ति न होती छ काय रे,

शान्तिकरता हो किम होता श्याम ॥८०॥

मिथ्या हेतू खण्डवा,

बलि भाखूँ हो सूत्र री साख ।

सत्य-स्वल्प ने जोलसी,

मध्य जोहो हो मिथ्या रा पात्र ॥शु०॥८१॥

चञ्चलार्थी भुत केवली,

जगत्कारक हो केसी गुनराय ।

विवर्धका रा भाग में,

घमरेराना हा बीनी सुखराय शुद्ध०॥८२॥

विठ आवक सुख हर्षियो,

करे बीनती हो सुनिख गुनराय ।

परदरी अति पापियो,

पाप करन हो अति हर्षित भाय ॥शु०॥८३॥

अधर्मो यो राजसी

अधर्म मी हा कर निरादिम बाय ।

गधिर मोर एक सम गिखे,

गाढ़ा-गाढ़ा हो म्हामी कर रयो पाप ॥८४॥

या हा नर पशु पंथी न,

(मिन्न आनि की) इति भारी हो बेरी ह्वाय ।

विनय-भाव तिणमें नहीं,

तेथी गुरुजन (माता पिता आदि)

हो आदर नहिं पाय ॥ शुद्ध० ॥८५॥

देश दुखी इण राय थी,

करडा लेवे हो हासिल दुख दाय ।

लेने धर्म सुनाविया,

बहु गुणकर हो होसी मुनिराय ॥ शु० ॥८६॥

गुण होसी परदेशी राय ने,

पशु-पंखी हो नर ने गुण थाय ।

श्रमण महाण भीखारी ने,

बहु गुणतर हो होसी सुखदाय ॥ शु० ॥८७॥

देश रे बहु गुण उपजसी,

होजासी हो करडा हौंसिल दूर ।

राय१, जीव२, भिक्षु३, देश४ रे,

गुण हेते हो धर्म भाखो सनूर ॥ शु० ८८ ॥

जीव मारण परिणाम थी,

राजा रे हो माठा लागे पाप ।

वेरा न बहुगुण मिपमसी,

तुमे करो हो स्वामी धर्म कटवार ॥९७॥

चित बिनली करी शुध-भाव धी,

सुध भया री हो तुमे करो पिछाण ।

(यो) प्रतपारी-जाबक मोटको,

समकित पर हो गुण रत्नों री काण्य ॥९८॥

जो जीव, भिछारी, वेरा री,

करुणा में हो नहिं मरुतो धर्म ।

(तो) अधर्म अर्ज विण किम करी,

जिन बचनों रो हो ते तो माफता मर्म ॥९९॥

जीव बचावण करखे,

बपवेरा हो चित भरुतो पाप ।

चोनायी गुठ आगले

बिमली करता हो इयाबिध ते साफ ॥१००॥

स्वामी । हिंसा छोडावो रावरी

परदरी हो होसी गुण रो पार ।

जीव बचे मरता थकाँ,

त्याँ जीवाँ रे हो गुण नाहीं लिगाव ॥१०१॥

तिम श्रमण, भिखारी देश रे,

गुण श्रद्धा हो स्वामी लागे मिथ्यात ।

केवल राय ने तारणो,

या श्रद्धा हो स्वामी परम विख्यात ॥१०२॥

पिण चित इम नहिं भापियो,

ते तो श्रद्धतो हो जीव बचिया मे धर्म ।

तेथी विनती करी गुरुराय ने,

(मरता) जीवाँ रे हो कह्यो गुण रो मर्म ॥१०३॥

जीव बचावे ते पाप में,

या श्रद्धा हो श्रावक रो नाय ।

जीव बचे त्याँ ने गुण होवे,

या श्रद्धा हो चित री सुखदाय ॥शु०॥१०४॥

जीव बचावणो धर्म मे,

दुखिया रो हो ते तो जाणतो मर्म ।

धनुकम्पा-विचार

सगलों रे गुण रे कारणे,

कीधी बिनती हो उपदेशो धर्म ॥१०५॥

जा कसर हावी इण कम्बन में,

केसी सामी हो केसा विखबार ।

जीव, मिखायी, बेरा रे,

गुण भय्यो हो में तो माहीं सिगार ॥१०६॥

सगलों रे गुण रे कारणे,

बिनती कीधी हो समकिय गुण जाय ।

पारं भय्य में रूपण रूपनो,

आलोवो हो जिनधर्म रे न्याय ॥१०७॥

पिछ पित भावक जिम भय्यता,

तिम भय्यता हो भी केसी साम ।

नेनों री भय्य पक थी,

वधी नहिं लीनो हो निवेधरो नाम ॥१०८॥

मुनि जिय भिन्नायी बेरा रे,

गुण इत दा उपदेश धर्म ।

या श्रद्धा चित्त शुध जाणता,

विनती कीधी हो जैनधर्म रे मर्म ॥१०९॥

केशी श्रमण गुरुराज री,

चित्तजी री हो श्रद्धा थी एक ।

(तेथी) विनती मानी भाव थी,

चार वाताँ रो हो बतायो लेख ॥शु०॥११०॥

छोडो रे छोडो मिथ्यात ने,

जीवरक्षा रो हो तुमे श्रद्धो धर्म ।

त्यागो कथन कुगुरु तणो,

खोटो घाल्यो हो अनुकम्पा मे भर्म ॥१११॥

कोई पतिव्रता सती तणो,

एक पापी हो खण्डे शील विशेष ।

देहत्याग माँढथो सती,

तीहाँ मुनिजन हो दीनो उपदेश ॥११२॥

प्रबोध पापी पामियो,

सती नार ना हो रखा शील ने प्राण ।

मुनि उपकारी बेहुना,

तुमे समझे हो समझे नि सुजाण ॥११३॥

एक मौनप्रणी मुनिराज री,

कोई पापी हो करते वो पात ।

(विष्णुने) उपदेशा बेई समझायो,

रक्षा कीधी हो मुनि जी विख्यात ॥११४॥

जो वकरो बच्चा पाप भ्रष्टी,

तिणरे लेखे हो मुनि वचिया से पाप ।

जो मुनि बच्चा कदया करो,

तो वकरो वचिया हो दया-धर्म है साफ ॥११५॥

कोटा कुहेतु कायस्थी,

हास जोकी हो राजलक्षेसर मौर्य ।

सौं ने मन सुख भ्रष्टता

भ्रष्टा नो हो निगमल शुभ पाप ॥११६॥

इति पञ्चम-हास सङ्कर्षण

दोहा

साधु जीव मारे नहीं, पर ने न कहे मार ।
भलो न जाणे मारिया, त्रिकरण शुद्ध विचार ॥१॥
हणे, हणाने, भल गणे परजीवों रा प्राण ।
तीन करण हिंसा कही, श्रीजिन वचन प्रमाण ॥२॥
घोले, घोलावे, भल कहे, मावद्य कूड़ा वेण ।
तीनों करणे मृष्ट है, गोलो अन्तर नेण ॥३॥
जिम सत घोले साधुजी, पर ने कहे तू घोल ।
भल जाणे सत बोलियों, तीनों करण अमोल ॥४॥
निम । नाधुचचावे जीव ने, पर ने कहे वचाय ।
वचिया अनुमोदन करे, त्रिकरण शुद्ध कहाय ॥५॥

अनुकम्पा-विचार

(कई) 'सात्वज-सत्य न वासना, किम न बचाव्यो जीव
अनुकम्पा सात्वज हुये,' या कुशुरों री मीव ॥६॥

(उत्तर) सात्वज-निरवध सूत्र में, सत्य रा भाव्या मेर
पिय अनुकम्पा रा महीं वज हो खोटी लेइ ॥७॥

मिण बोले परजीव ने, दुख अपज सुख मोंय ।

ते सत ने सात्वज क्यो, मुगझारेंग रे मोंय ॥८॥

पर पीडाकरी महीं, दितकारी सुखदाय ।

ते सत निरवध जाणव्यो, जिन सासन रे मोंय ॥९॥

अनुकम्पा पर-जीव ना, प्राण बचाव्यहार ।

दुख तिय भी अपज महीं, निरवध निरचे घार ॥१०॥

मय मटपा परजीव मो, दान अमय प्रमुगाय ।

तिय में पाप बचावियो जैनी मय घराय ॥११॥

अमयदान माहि बालक्यो, बीनो दया प्ठाय ।

माला न भयमायवा, कृपा भोज लगाय ॥१२॥

(कई) "जीवबचाव मुनि नहीं पर ने न कई बचाव
स्ता न जाण बचाविया, ' इम खोटा खेल दावा ॥१॥

ढाल-छठी

(तर्ज—चतुर नर छोढो कुगुरु नो सग)

इण साधौं रा भेख में जी,

बोले एहवी वाय ।

“छकाय रचा ना करौंजी,

जीव बचावौं नाय ॥”

चतुर नर समझो ज्ञान विचार ॥१॥

एहवी करे परूपणा जी,

पिण बोले बन्ध न होय ।

बदल जाय पूछ्यौं थका जी,

ते भोला ने खबर न कोय ॥ चतुर० ॥२॥

थारे पाणी रे पातरे जी,

माखौं पढ़िया आय ।

दु ख पात्रे अति तड़फड़े जी,

बूढ़ा होवे जीव काय ॥ चतुर० ॥ ३ ॥

समुद्रमन्थन

साधु देखे दिण्डि अवसरै जी,

कह्यो काहूँ के नौय ?

तब तो कहै "अष्ट कादण्याजी,

नहिँ काहूँ अनरथ पाय ॥ चतुर ॥ १४ ॥

(करा) मूर्खानी हावे मात्तियोजी,

जतना से मूर्खा जाय ।

(तो) कपटारिक में बौधने जी,

मूर्खा देखों मित्यय" ॥ चतुर ॥ ५ ॥

माछी नौय बचावयाजी,

बे कइवा एइबी बाय ।

परतल मात्त बचावियाजी,

दारी बोली में मन्वन कय ॥ चतुर ॥

कह्ये "जीव बचावौ पाप छे जी,

किञ्चित नाहीं धर्म" ।

तो भी मात्ता बचाविया,

बारी भयरा निरस्यो भर्म ॥ चतुर ॥ १५ ॥

(इम चिडिया) मूपादिक थारे पातरेजी,

पड़िया ने काढ़ो बार ।

मुख सो कहो न वचावणाजी,

यो कूडो थारो व्यवहार ॥चतुर० ॥८॥

वीर, गोसालो वचावियोजी,

तिण में बतावो पाप ।

(पोते) उदिर आदि वचायलो जी,

थारो खोटी श्रद्धा साफ ॥चतुर० ॥९॥

(जो) पाप कहो भगवान ने जी,

(तो) पोते काँ छोड़ी रीत ?

उन्दिर माखा वचाविया (जी)

थारी कूण माने परतीत ॥चतुर० ॥१०॥

गोसाला ने वचायवा में,

पाप कहो साक्षात ।

(सौ) माखाँ मरता देखने जी,

क्यो काढ़ो निज हाथ ॥चतुर० ॥११॥

तव तो कहे “म्हे साध छाँ जी,

(श्रावक) वेठो करों केम ।

म्हारे काम के ई गेही से जी”,

बोले पाधरा एम ॥ चतुर० ॥ १६ ॥

(धारा) पाटा पर श्रावक मरे जी,

तिण ने वचावो नाँय ।

ऊँदरा-चिड़िया वंचायलेजी,

पड़े जो पातर माँय ॥ चतुर० ॥ १७ ॥

उंदरा चिड़िया वंचायलेजी,

श्रावक उठावे नाँय ।

देखो (पूरो) अंधेरो एहने जी,

ए पड़िया भरम रे माँय ॥ चतुर० ॥ १८ ॥

उन्दर चिड़िया वचावतौ जी,

शके नार्हीं लिगार ।

श्रावक ने वेठो किया में,

पाप री करे पुकार ॥ चतुर० ॥ १९ ॥

इतरी समज पड़े नहीं,

स्यमें समझित पावे केम ।

इकिया मोह भिष्यात में जी,

बोल मतवाला जम ॥ चतुर० ॥ १० ॥

(कह) 'साधों न कन्दर काकुणो जी,

पाठराक्षिक धी बार ।

पाटा पर भावक मरे जी,

(तो) बेडो न करों सिगार' ॥ चतुर० ॥ ११ ॥

(उत्तर) भावक बडो ना करेजी

कँदर काड़ा जाय ।

आ लोटी भया ताहरो जी,

मिल न थाय म्याय ॥ चतुर० ॥ १२ ॥

(या) परमग्न बात मिले नहीं जी,

ताबका दोंदही जम ।

म्यापमगा भ्यों बालरग्यो जी,

व बज्जों री मान कम ॥ चतुर० ॥ १३ ॥

(कहे) “पेट दुखे सो श्रावकों जी,
जुदा होवे जीव काय ।

(थें) हाथ फेरो पेट ऊपरे जी,
सौ श्रावक बच जाय ॥ चतुर० ॥२४॥

(जो) जीव बचाया में धर्म छे तो,
साधु ने फेरणो हात ।

(जो) हाथ साधु फेरे नहीं,
तो मिथ्या थॉरी बात” ॥ चतुर० ॥२५॥

(उत्तर) साधु कहे हिवे सँभलो जी,
इण कुयुक्ति रो न्याय ।

(जो) हाथ फेरथा निज जीव बचे,
(तो) निज रोफेर बच जाय ॥ चतुर० ॥२६॥

हाथ फेरण रो साधु ने जी,
श्रावक केसी केम ।

हठवादी समझे नहीं जी,
श्रावक जाणे (धर्म रो) नेम ॥ चतुर० ॥२७॥

(कछे) “सम्पि बामोछही सापुरेजी,
फरस्यो दुःख मिटजाय” ।

(उत्तर) वा (वह) बरख मुनि रा फरससीमी,
तवछ्य बोझो धाय ॥ बहुर० ॥२८॥
बरख साधु रा फरसणा जी,
भावक रो व्यापार ।

दाय फेरख रो कछे मर्ही जी
ब मूट करे उपचार ॥ बहुर० ॥२९॥

सम्पि मुनीरी बह में जी,
ओ फरम मुनि काय ।

(दो) रोग मिट सावा होबे जी,
मुनि ने दाय न धाय ॥ बहुर० ॥ ३० ॥

(जो) बरख फरस दुःखहो मिटेजी
वा भिन व्यापार र मौय ।

मिटो दाय फेरख बरख मर्ही जी,
पारा मन न लो ममभाय ॥

(अनुकम्पा-विचार-उत्तर-॥३१॥)

कूयुक्त्याँ बहु केलवो जी,

भोलाँ दो भरमाय ।

ज्ञानी न्याय बताय दे जब,

भरम तुरत मिट जाय ॥ चतुर० ॥३२॥

(कहे) “उंदिर नाँय छोड़ावणो जी,

मिन्नी मारण धाय” ।

एवी कर-कर थापना जी,

भोला दिया फँसाय ॥ चतुर० ॥३३॥

(उत्तर) आवश्यक-सूत्र देखलो जी

ध्यान आगारा रे माँय ।

उन्दराटिक ने मारवा जी,

विह्ली भपटी आय ॥ चतुर० ॥ ३४ ॥

आगे सरक बचावताँ जी,

काउसग भागे नाय ।

(बलि) टीका ने निर्युक्ति में जी,

परगट दियो बताय ॥ चतुर० ॥ ३५ ॥

अनुकम्पा-विचार

२ ६

हजारों वर्षों तथी जी,

निर्युक्ती निरभार ।

बबदा सौ वर्षों तथी जी,

(यो) गीक्य में विस्तार ॥ चतुर० ॥३६॥

आचार्य आगे हुआ जी

ज्ञान गुरुरो रा पार ।

बंदरादिक बचायका में,

पाद न क्यो लिगार ॥ चतुर० ॥३७॥

पाद बतविस तुमे क्यो जी,

प्रमु आका रा पार ।

तेनी क्यी निर्युक्ति में जी

यो मास्थो निरभार ॥ चतुर० ॥३८॥

ध्यान में जीव बचावर्षों जी

काइसग बंग न होय ।

आचार्यक निर्युक्ति तथो जी

निर्यो छिद्यो जोय ॥ चतुर० ॥३९॥

अठारे से संवत पूरवे जी,
जीव वचावण माँय ।

कोई आचारज नहीं कह्यो जी,
पाप करम बन्धाय ॥ चतुर० ॥ ४० ॥

अपुठो इम भाषियो मिनी,
करे चुवा री घात ।

ध्यान खोल वचावताँ जी,
दोष नहीं तिलमात ॥ चतुर० ॥ ४१ ॥

(कहे) “मूसादिक ने वचायलो जी,
मिनकी ने छछकाय ।

श्रावक मरे मुख आगले जी,
तिणने वचावो के नाय” ॥ चतुर० ॥ ४२ ॥

(उत्तर) मरतो जाए वचाविया जी,
दोष मुनी ने न कोय ।

निशित्थ अर्थ में देखलो जी,
भरम हिया रो खोय ॥ चतुर० ॥ ४३ ॥

भायक बचाया धर्म ले जी,
साधु भी लेने बचाय ।

अवसर ठाम-कुठाम जो जी,
कस्य रो ध्यान लगाय ॥ चतुर० ॥ ४४ ॥

धर्म देशना (देना) धर्म में जी,
पिण्य देवे कस्यते ठाम ।

(तिम) जीव बचावयो धर्म में पिण्य,
करे कस्य भी काम ॥ चतुर० ॥ ४५ ॥

चिड़ियो मुच्यो भार स्थान में जी,
धारे अठक्यो सम्मध्य रो काम ।

परछो के परछो महीं जी,
कब उत्तर दब ताम ॥ चतुर० ॥ ४६ ॥

“चिड़ियों ने तो परछों जी,
जाणी धर्म रो साथ ।”

(तो) कुच्छे मरयो भार मान में जी,
तम परछो के नाय ? ॥ चतुर० ॥ ४७ ॥

“साधू वाजाँ म्हेँ जैन रा जी,

कुत्ता घीसाँ केम ?”

(तां) कुत्ता ने चिडिया तणो थारे,

रयो न सरखो नेम ॥ चतुर० ॥ ४८ ॥

(तिम) जीव वचावा में जाणज्यो जी,

ज्ञान से न्याय विचार ।

अवसर अण-अवसर तणो जी,

साधु तणो आचार ॥ चतुर० ॥ ४९ ॥

(कहे) “गाड़ा हटे मरे ढावडोजी,

तुमें साधू लेवो उठाय ।

श्रावक मरतो जाण ने जी,

तिण ने उठावो के नाय” ॥ चतुर० ॥ ५० ॥

(उत्तर) म्हेँ तो जीव वचायवा में,

धर्म रो श्रद्धाँ काम ।

श्रावक ने लड़का तणो जी,

म्हारे न भेद रो ठाम ॥ चतुर० ॥ ५१ ॥

(कहे) 'लट, गजायों, कातरा जी,

ढोंडा भी बीची जाय ।

त्यों ने बचावा सणो मुनि,

क्यों मर्हि करे बचाय ॥ चतुर० ॥५२॥

जो लड़का ने बचावसी जी,

सो लटादि लसी बचाय ।

(जो) लट गजार्ई रक्षा मा करे जी

तो लड़को बचावे कार्ये" ॥चतुर०॥५३॥

(उत्तर) दोनों बचाया धर्म छे जी,

ये मूठा रक्ष्या सोफन ।

मिथ्या पंथ बलायवा बी,

मूख गया छे भान ॥ चतुर० ॥ ५४ ॥

(बलि) लड़का, लट, गजाय, नो जी,

सगला जही छे ब्याप ।

लड़को सजी पंचन्त्री ते

लट सम करो किम बाब ॥चतुर०॥५५॥

शक्य होवे तो वचायले जी,

कीड़ा मकोड़ा रा प्राण ।

अशक्य वचाई ना सके,

जॉरी मूर्ख करे कोई ताण ॥चतुर०॥५६॥

द्रव्य-क्षेत्र ना अवसरे जी,

उपदेश दे मुनिराय ।

बिन अवसर तो ना दिये जी,

(तेथी) उपदेश अधर्म मे नाँय ॥चतुर०॥५७॥

(तिम) अवसर होवे साध रो जी,

जीवाँ ने लेवे वचाय ।

बिन अवसर रक्षा न हुवे तो,

रक्षा में पाप न थाय ॥ चतुर० ॥५८॥

उपदेश१, रक्षा२, धर्म में जी,

दोर्था में शुध परिणाम ।

पिण अवसर होवे जट सदे जी

अट्टे आछो काम ॥ चतुर० ॥ ५९ ॥

(कट) "लट, गजायों, कातरा जी,

होंडा थी चींथी जाय ।

ह्यों ने बचावा तपो मुनि,

क्यों नहिं करे उपाय ॥ चतुर० ॥५२॥

आ लड़का न बचावसी जी,

तो सन्तवि खसी बचाय ।

(जो) लट गजाई रक्षा ना करे जी

तो लड़को बचावे कार्ये" ॥चतुर०॥५३॥

(उत्तर) दोनों बचाया धर्म ह्वे जी,

बे मूठा रक्ष्या तोफान ।

निध्या पंथ बलायबा जी

मूल गया धे भान ॥ चतुर० ॥ ५४ ॥

(बलि) लड़का लट गजाय, नो जो,

सगलो नहीं ह्वे म्याय ।

लड़को समी पंचेम्प्री ते,

लट सम कहा किम थाय ॥चतुर०॥५५॥

(जो) जीव वचावणो पाप मे जी
गोसालो वचायो केम ।

उत्तर न आयो एहनो जी,
तब मूठ वोल्या तज नेम ॥चतुर०॥६४॥

(कहे) “गोसाला ने वचावियो जी,
चूक गया महावीर ।

पाप लागो श्री वीर ने,
म्हारी श्रद्धा बडी गँभीर” ॥चतुर० ६५॥

(बलि कहे) “साधों ने लब्धि न फोड़णी जी,
सूत्र भगोती रे माँय ।

लब्धी फोड़ वचावियो जी,
तेथी पाप कर्म बन्धाय” ॥चतुर०॥६६॥

(उत्तर) उपदेशे जीव वचायले जी,
लब्धि फोडे नाय ।

ते पिण पाप एकंत में,
थारी श्रद्धा रे माँय ॥ चतुर० ॥ ६७ ॥

अनुकम्पा-विचार

छफेरा बटावे धर्म में जी,

जीब बचावों पाप ।

(धा) छोटी भय तेहनी जी,

हानी नाख साफ ॥ चतुर० ॥ ६० ॥

सबका लट सरिला कहे जी,

(ते) मूरख, मूढ़ गवोर ।

जैनी नाम धरबने जी,

भट किया नरनार ॥ चतुर० ॥ ६१ ॥

कीका, मकोका, मनुज मी जी,

सरसी बटावे बात ।

(त) मेघ सई मारी हुवा जी,

धर्म ही कर रखा बात ॥ चतुर० ॥ ६२ ॥

बटनायी हृष संयमी जी,

वीर अगल गुह राम ।

गोमाजा म बचावियो जी,

अनुकम्पा दिला नाथ ॥ चतुर० ॥ ६३ ॥

(जो) जीव बचावणो पाप मे जी

गोसालो वचायो केम ।

उत्तर न आयो एहनो जी,

तब मूठ बोल्या तज नेम ॥चतुर०॥६४॥

(कहे) “गोसाला ने बचावियो जी,

चूक गया महावीर ।

पाप लागो श्री वीर ने,

म्हारी श्रद्धा बड़ी गँभीर” ॥चतुर० ६५॥

(बलि कहे) “साधों ने लब्धि न फोड़णी जी,

सूत्र भगोती रे माँय ।

लब्धी फोड बचावियो जी,

तेथी पाप कर्म बन्धाय” ॥चतुर०॥६६॥

(उत्तर) उपदेशे जीव वचायले जी,

लब्धि फोड़े नाय ।

ते पिण पाप एकंत में,

धारी श्रद्धा रे माँय ॥ चतुर० ॥ ६७ ॥

बहुधा-विद्या

(तेयी) मूठा बोज लगाविया जी,
सखि केरे नाम ।

अमुकपा रठायवा जी,

वा मिध्या-मत्त गे काम ॥ चतुर० ॥ ६८ ॥

(इम) सुमुख सखि रा नाम ल की,

मोनों मे व भरमाय ।

पिय सौधी कोई मठ जायग्यो जी,

मेह सुखो चित साय ॥ चतुर० ॥ ६९ ॥

शीतल लेरया सखि नो की,

दोष न सूख मॉन ।

सुखराई दुख ना होवे जी,

(एबी) लीप-दिसा नहिं जाय ॥ चतुर० ॥ ७० ॥

भंग कपाङ्ग प्रमद में इण,

सखी रो दोष न कोय ।

तो पिय पाप बतावियो जी,

यो कपट कुगुह रा मोय ॥ चतुर० ॥ ७१ ॥

दोष होवे जे लब्धि थी ते,

प्रकट बताया नाम ।

इणरो नाम न चालियो थे,

तजो कपट रो काम ॥ चतुर० ॥ ७२ ॥

(कहे) “उण्ण ने शीतल एक छेजी,

तेजू लब्धि रा भेद” ।

मद छकिया इम ऊचरे जी,

(ते) सुणताँ उपजे खेद ॥ चतुर० ॥ ७३ ॥

(उत्तर) शीतल थी शान्ती होवे जी,

जीव न विणसे कोय ।

उण्ण थी जीव मरे घणा जी,

एक किसी विध होय ॥ चतुर० ॥ ७४ ॥

(कहे) “अग्नि पाणी भेला होवे जी,

जीव घणा मर जाय ।

(तिम) तेजू शीतल लब्धि मिल्यौ जी,

घात जीवौ रो थाय” ॥ चतुर० ॥ ७५ ॥

(तिथी) मूला चोज लगाविया आी,

लम्बि केरे नाम ।

अनुकम्पा छठायवा आी,

बो मिथ्या-मत गो काम ॥चतुर०॥६८॥

(इम) समुचय लम्बि रा नाम ले आी,

मोलाँ मे दे मरमाय ।

पिण्ड सौंभी कोई मत धायग्यो आी,

मेद सुखो पित्त लाय ॥ चतुर० ॥ ६९ ॥

हीतल लेस्या लम्बि नो छी

दोष ॥ सूतर माँय ।

हुल्लरार्ह दुःख ना होवे आी,

(एषी) जीव-हिंसा नहिं बाल्य ॥चतुर०॥७०॥

अंग उपाङ्ग भन्ध में इण्ड,

सम्भी रो दोष न कोय ।

वा पिण्ड पाप बतारवियो आी,

या कपट कुगुरु रा ओय ॥चतुर०॥७१॥

दोष होवे जे लब्धि धौं तें,

प्रकट वताया नाम ।

इणरो नाम न चालियो धे,

तजो कपट रो काम ॥ चतुर० ॥ ७२ ॥

(कहे) “उण ने शीतल एक छेजी,

तेजू लब्धि रा भेद” ।

मद छकिया डम ऊचरे जी,

(ते) सुणतौं उपजे खेद ॥ चतुर० ॥ ७३ ॥

(उत्तर) शीतल श्री शान्ती होवे जी,

जीव न विणसे कोय ।

उण श्री जीव मरे घणा जी,

एक किसी विध होय ॥ चतुर० ॥ ७४ ॥

(कहे) “अग्नि पाणी भेला होवे जी,

जीव घणा मर जाय ।

(तिम) तेजू शीतल लब्धि मिल्यौं जी,

घात जीवौं री थाय” ॥ चतुर० ॥ ७५ ॥

(चत्वर) समू लेरया पुद्गल मखी जी,

अपित्त कया भिनराय ।

सूत्र भगोली में देखलो रें,

सोटा लगवो न्याय ॥चतुर०॥७६॥

हिंसारी कर्म बी जी,

सोटी-लेरया बाय ।

जीव रक्षा रा माव में जी,

भली करया सुखदाय ॥चतुर०॥७७॥

माली-लेरया में ना कया बी,

जीव रक्षा रो काम ।

छतराभ्येन बोलीस में जी,

सछख इर रे ठाम ॥चतुर०॥७८॥

मरा हुद-सरया बीर में जी,

पाप करो किम होय ।

आचारगि देखलो जी,

प्रमु पाप न कीमा होय ॥चतुर०॥७९॥

(कहे) “राग हूँतो तब वीर में जी,

लियो गोसाल बचाय ।

‘छद्मस्थपणे चूकिया’ म्हें,

पाप केवाँ इण न्याय” ॥ चतुर० ॥८०॥

(उत्तर) छद्मस्थ राग रो नाम लेने,

पड़िया पाप रे कूप ।

अरिहन्त आसातना करी जी,

हुवा मिथ्यात रा भूप ॥ चतुर० ॥८१॥

पंचम-गुणठाणा धणी जी,

(बलि) सराग सजमी जोय ।

संजम पाले राग से जी,

जामें दोष न कोय ॥ चतुर० ॥ ८२ ॥

संजम-राग न दोष में जी ।

असंजम-राग में दोष ।

धरमाचारज (रा) राग से जी,

मुनि होवे निरदोष ॥ चतुर० ॥ ८३ ॥

(छतर) तेयू लेरया पुद्गल भयी जी,

अपित कया जिनराय ।

दूध मगोली में देसलो वें,

खेदा लगावो न्याय ॥चतुर०॥७६॥

हिंसारी कूर्म भी जी,

लोटी-लेरया बाय ।

जीव रहा रु माव में जी,

भली लेरया सुखदाय ॥चतुर०॥७७॥

मापी-सरया में ना कया जी,

जीव रहा रो काम ।

धरप्येन बौलीस में जी,

सहस्र हर रे ठाम ॥चतुर०॥७८॥

सदा धुइ-सरया वीर में जी,

पाप करो किम होय ।

आचारगे देसलो जी,

प्रमु पाप न कीनो होय ॥चतुर०॥७९॥

दोष न लेश प्रभु कयोजी,
गोसाल वचाया माँय ।

वीतराग गोपे नहीं जी,
प्रकट देवे फुरमाय ॥चतुर० ॥ ८८ ॥

गोतम ने प्रभुजी कयोजी,
आनंद लेवो खमाय ।

प्राछित ले निर्मल हुवो ज्यूँ,
दोष थारो मिट जाय ॥ चतुर० ॥ ८९ ॥

गोतम दोष मिटायवाजी,
प्रकट कह्यो प्रभु आप ।

निज नो केम छिपावता जी,
(तुम) तज दो खोटी थाप ॥चतुर०॥ ९० ॥

यो प्रकट न्याय न ओलखे जी,
जारे माँय मूल मिथ्यात ।

अरिहँत वचन उथाप दे ते,
निन्हव कहा जगनाथ ॥ चतुर० ॥ ९१ ॥

धर्म-रत्ना रत्ना कया जी

भाषक रा गुण मोंथि ।

धर्म-रत्ना करता धर्मों जी,

हुक्म-लेम्बा पिण्ड पाय ॥ चतुर० ॥८४॥

व्या एक रस भाष मे खी,

लियो गोसांस्तो बचाय ।

धं राग प्रशस्त प्रमु वया जी,

धर्म लेखा रे मोंथि ॥ चतुर० ॥ ८५ ॥

गासाला ने बचावियो जी,

पाप जाणवा खाम ।

वो सर्व सार्थों ने वर्जता जी,

इसको न करजो काम ॥ चतुर० ॥८६॥

केवलज्ञान मे प्रमु कयोजी,

अमुकम्पा रो धर्म ।

गोसाला न बचावियो प्रमु,

प्रकट करवा वो मर्म ॥ चतुर० ॥८७॥

आयुष मुनि रो जाणता जो,

गोतमाङ्गि गुण धार ।

विहार मुन्याँ ने करावता जी,

(थारेपिण) जामें दोष न एक लिगार ॥१०४॥

(मुनि) निश्चे देख्यो ज्ञान में जी,

ते किम टाख्यो जाय ।

ते जाणी ज्ञानी-मुनी जी,

न सक्या त्याँ ने वचाय ॥ चतुर० ॥१०५॥

सो कोसों वेर न ऊपजे जी,

अरिहँत अतिशय विशेष ।

समवसरण में ऊपनो ते,

होणहार री रेष ॥ चतुर० ॥ १०६ ॥

निश्चय होण रा नाम से जी,

गोशाल बचाया में पाप ।

उलटा न्याय लगायने जी,

थे' कर रया खोटी थाप ॥ चतुर० ॥१०७॥

ननुकम्पाभिचार

(उत्तर) आयुष आम्हो तहनोगी,

देस्पा जी जिनराज ।

निरचय दास्वो ना टस्पा (जी),

असो सास्पा आवम कजग ॥ चतुर० ॥ १०० ॥

(कदे) 'गोवमादिक गुणधर हुँतामी,

सुचस्व लक्ष्मि ना धार ।

अवार्ये क्यो न यचाधिया जी,

शीतल लेख्यो मिधर' ॥ चतुर० ॥ १०१ ॥

(उत्तर) भिम नहिं निम समा कया जी,

गोवमादि गुणधर ।

आयु आयु सर्व भो जी,

बलि होनहार निरचार ॥ चतुर ॥ १०२ ॥

धर्मधोप-मुनि आणियो जी

धर्म रुची बिरतम्त ।

मदार्प-मिठ में बेगिणी बे

पूरधर या महम्त ॥ चतुर० ॥ १०३ ॥

अनुकम्पा-विचार

(कष्टे) "गोसाला ने बचाविया लो,

बधियो धर्या मिथ्यात ।

(विधी) पाप लागो श्री वीर ने जी,"

एही मन में रखे बात ॥ चतुर० ॥९२॥

(वृत्तर) गोसाला ने बचावियो श्री

हुबो समझिठ धार ।

श्रीमुख निरखो किन कियो श्री

लासी मोक्ष मँझार ॥ चतुर० ॥ ९३ ॥

साधू गोसाला वर्या जी,

वीर रे शरयो भाव ।

ठिरिया धर्या संसार श्री लो,

भाव्यो सुतर मॉव ॥ चतुर० ॥ ९४ ॥

भावक शरखे आवियो श्री,

गोसाला ने छोड़ ।

साधु-भावक श्री वीर रा न,

सबधो गोसालो मोक्ष ॥ चतुर० ॥९५॥

मिथ्याती मिथ्यात में जी,
 हुवा गोशाला रा शीष ।
 मिथ्यात बधियों किण तरेजी,
 खोटी थॉरी रीश ॥ चतुर० ॥ ९६ ॥

श्रावक गोसाला तणा जी,
 अस री नहिं करे घात ।
 रुन्द मूल पिण ना भखे जी,
 या सूत्र-भगोती में बात ॥ चतुर० ॥ ९७ ॥
 तप तो सराहो तेहनो तुम,
 खोटी करवा थाप ।

अनुकम्पा रा द्वेष थी (तुमे) बोलो,
 जीव बचावा में पाप ॥ चतुर० ॥ ९८ ॥

बलि कपट करी कुगुरु कहे,
 “दो साधु बचाया नाँय ।”

खोटा न्याय लगावता जी,
 कष्टा कठा लग जाय ॥ च

बभ्रुवर्मा-विचार

(उत्तर) आमुप आयो लहनाजी,
देख्यो भी भिनराज ।

निरचय दास्यो ना दस्या (जी),

ज्यों साव्या आतम काजा ॥ चतुर० ॥ १०० ॥

(धर) 'गोतमादि गणधर हुताजी,
कथित लक्षि मा धार ।

ज्यायें क्यों न बचाविया जी,

शीतल लेख्यो निकार' ॥ चतुर० ॥ १०१ ॥

(उत्तर) निन नहिं जिन समा कसरा जी,
गातमादि गुणधार ।

आण आयु सर्व म्ये जी,

बलि होतहार निरधार ॥ चतुर० ॥ १०२ ॥

पर्वभाष-मुनि जाणियो जी,

धम कर्पी बिरतन्त ।

सचार्य-गिर्य मे ररियो ॥

पूरवपर धा मदस्त ॥ चतुर० ॥ १०३ ॥

आयुष मुनि रो जाणता जो,

गोतमाङ्गि गुण धार ।

बिहार मुन्याँ ने करावता जी,

(थारेपिण) जामें दोष न एक लिगार ॥१०४॥

(मुनि) निश्चे देख्यो ज्ञान में जी,

ते किम टाख्यो जाय ।

ते जाणी ज्ञानी-मुनी जी,

न सक्या त्याँने बचाय ॥ चतुर० ॥१०५॥

सो कोसों वेर न ऊपजे जी,

अरिहँत अतिशय विशेष ।

समवसरण में उपनो ते,

होणहार री रेख ॥ चतुर० ॥१०६॥

निश्चय होण रा नाम से जी,

गोशाल बचाया में पाप ।

उलटा न्याय लगायने जी,

थे' कर रया खोटी थाप ॥ चतुर० ॥१०७॥

भयभङ्गा-विचार

सब हेतु सुख समझसी जी,

आमें ह्युख विवेक ।

पक्षपात सब पामसो जी

मिरमस समझित एक ॥ चतुर० ॥ १०८ ॥

निध्या-करुण्य मे करी जी,

ओह सुगत घर म्वाय ।

हुय माने मरुषा पका जी,

आनेइ मङ्गल भाव ॥ चतुर० ॥ १०९ ॥

संवद काशीसे तयो जी

छीयोंसी रे साल ।

आपाइ हुक्ला पंचमी जी

बगव मंगल मास ॥ चतुर० ॥ ११० ॥

छरी नाम सगुर्भम्



दोहा

सबल निबल ने मारता, देख्या दीनदयाल ।
हितकर धर्म परूपियो, जीव दया प्रतिपाल ॥१॥
निरबल जीव वचायवा, सबलों ने समझाय ।
त्यामें पाप बतावियो, केइक कुमति चलाय ॥२॥
मांसादिक छुड़ाय दे, अचित वस्तु रे साय ।
एकान्त पाप तिण में कहे, केइ कुबुद्धि उठाय ॥३॥
कहे मिश्र श्रद्धाँ नहीं, श्रद्धयाँ हो मिथ्यात ।
धर्म पाप एकान्त है, यो खोदो पखपात ॥४॥

मरु-पाप बहुत-निर्भय, सूत्र मगोवी देख ।
 मूलपाठ मगु भासियो, (तेजी) कूड़ो धारोसेछा ॥१॥
 द्वेष अनुकम्पा-दान रो, क्योंरे है घट मौख ।
 विद्यने सह-यथ लावना, छानी इय समम्भया ॥२॥
 अतु पौमासो आशियो, वर्षा वर्षे ओर ।
 छट गजाई डेंडका, उपन्दा साध किरोर ॥३॥
 एक बेरया एक साधु रा, भल्ल मो मम हुलसाय ।
 तिम बला में जीखरया बेछ गाड़ी मौख ॥४॥
 साधुमल्ल तो साधु रा, बरान केरे काम ।
 बेरया अभिलाषी ठिक्को, जावे बेरया काम ॥५॥
 गाड़ी बसवा बगदिया, जीव अनन्ता माय ।
 इतना में बिजली पड़ी, दोइ मुना ते मौख ॥६॥
 धर्मी पापी कोण छ इण दोणों रे मौख ।
 दिसा बान सारणी देखो अर्थ बताय ॥७॥
 तब तो त घट ऊपरै, मारा बरान काम ।
 आया रस्ता में मुष्ठा, तिणरा दुध परिणाम ॥८॥

धर्म लाभ तिणने हुवो, हिंसा तणो तो पाप ।
 गाड़ी आरंभ थी हुवो, यूँ बोले ते साफ ॥१३॥
 वेश्या अर्थे नीकल्यो, तिण मे धर्म न कोय ।
 एकान्त-पाप रो काम ए, यो साँचो लो जोय ॥१४॥
 वेश्या अर्थी जाणज्यो, एकान्त-पाप रे माँय ।
 दर्श(न)अर्थि गाड़ी चढ्यो, धर्म-पाप बेहुथाय ॥१५॥
 मन्दमति यों बोलिया, तब ज्ञानी कहे एम ।
 मिश्र तुमे नहिं मानता, (दिवे) बोली बदलो केम ॥१६॥
 तब पाछा ते यों कहे, दर्शन धर्म रो काम ।
 गाड़ी चढ़नो पाप में, इम जूदा बेहु ठाम ॥१७॥
 तो इमही तुम जाणलो, अनुकम्पा (धर्म)रो काम ।
 आरँभ समझो पाप मे, इम जूदा बेहु ठाम ॥१८॥
 अणसरते आरँभ हुवे, दर्शन केरे काम ।
 विन आरँभ दर्शन करे, तो चढ़ता परिणाम ॥१९॥
 अणसरते आरँभ हुवे, अनुकम्पा रे काम ।
 विन आरँभ करुणा करे, तो चढ़ता परिणाम ॥२०॥

अनुकम्पा-विचार

अस्प-पाप बहु-निर्मग, सूत्र भगोटी देन ।
 मूलापाठ प्रभु भाषियो, (तेषी) कूड़ो आरोलेखा ॥१॥
 द्वेष अनुकम्पा-ज्ञान रो, ज्योरे हे पट मौंय ।
 तियने सुत-पय लायवा, ज्ञानी इम समम्भया ॥२॥
 ज्ञातु भीमासो अप्रियो, वर्षा बरें जोर ।
 सठ गजार्ई डेंडका, कपण्या लासु कियोरे ॥३॥
 एक बेरया एक साधु रा, मऊ नो मन हुलसाय ।
 सिग बेला में जीसर-पा बठा गायी मौंय ॥४॥
 साधुमऊ तो साधु रा, बरान केरे काम ।
 बेरया अमिलापी तिको, जावे बेरया धाम ॥५॥
 गायी बलता बगदिया, जीब अन्तस्ता जाय ।
 इतना में बिजली पड़ी, दोइ मुखा त मौंय ॥६॥
 धर्मी पापी कोख स इख दोणों रे मौंय ।
 दिसा यत्न सारली, देबो अर्थ बताय ॥७॥
 तब तो ते पट ऊपर, माय बरान अम ।
 अस्ता रस्ता में मुखा, तियरा शुभ परिणाम ॥८॥

ढाल-सातवीं



(तर्ज — वीर सुणो म्हारी वीनती)

कन्दमूल भखे एक मानवी,

भूख दुखडो हो सह्यो नहि जाय ।

समभू तेने छोड़ाविया,

अचित वस्तु थी हो दीवी भूख मिटाय ॥

भवियण जिनधर्म ओलखो ॥१॥

कन्दमूल (और) भूखा पुरुष री,

करुणा में हो बतावे पाप ।

या श्रद्धा मन्दौं तणी,

खोटी दीसे हो जानी ने साफ ॥भ० ॥२॥

इम एकान्त पाप परूपता,

नहिं शक्के हो कुगुरु काला नाग ।

अमुकपा-विचार

अमुकम्पा छठाय मे, - दर्शम जाये धर्म ।
 जो पा मर्या धारसी, साक्षा वैषसी कर्म ॥२१॥
 कीदा कराया भल आशिया, दर्शम सुध परिग्राम ।
 कीदा कराया भल आशिया, करुणा आधो कर्मा ॥२२॥
 सो तो न्याय म आशियो, पढ़ण ठेक अनशाय ।
 करण ओम विगा विचार, मिथ्यामति अयात्र ॥२३॥
 कृपा हेतु लगाय मे, मिथ्यामत थापय ।
 ते संन करै गुण्य से, सुखम्यो धर मति न्यता ॥२४॥
 सात दृष्टान्त तेन दिया, मिथ्या थापण पम्प ।
 स्लेख बचनमुप आशिया नाम धरयो संत ॥२५॥
 लम्बा इपज स्लेख न, एका लोटा म्याय ।
 त वो कपता ना हका जीमी नाम धरय ॥२६॥
 ज्योरी बुधि निमली, त सुख रे धिक्तर ।
 मूरम्य सुण मादित दुभा कृपा काली धार ॥२७॥
 दिव ग्याइन माता तणा, करै बजुस विचार ।
 अविषण भावपरी सुणो, जान-दृष्टि रिसधार ॥२८॥

बली होको, मांस, मुरदा तणो,

नाम लेवे हो भ्रम घालण काम ॥भ०॥७॥

फासु-अन्न थी मरता राखिया,

तिण रो तो हो छिपावे नाम ।

जाणे खोटी-श्रद्धा चोढ़े पडे,

जद बिगड़े हो ऊँधा-पन्थ रो काम ॥भ०॥८॥

कोई जीव मारे पंचेन्दरी,

भूख दुखड़ो हो मिटावण काम ।

(तिणने) समझाय अचित अन्न से,

पाप मिटायो हो कोई शुध परिणाम ॥९॥

जीव वचायो पंचेन्दरी,

तिण रो टलियो हो दु ख आरत पाप ।

मारणवाला ने टल्यो,

हिंसाकारी हो मोटो कर्म सन्ताप ॥भ०॥१०॥

इम मरताँ ने मारणहार रे,

शान्ति करता हो सायक बुद्धिमान ।

मनुष्यादिचार

इय भठा रो मरन पूषिषा,
चर्षा में हो जाने दूर भाग ॥म०॥१॥

ओलाजन भेला कटी,
छोटा हेतु हो थोथा गाल बजाय ।

घर में घुम घुरकाय ने
इय विष धी हो रया फन्स बलाया ॥म०॥४॥

सुशो दहन्त दिने तदना,
क्रियविष बाल हो त अल-पपाय ।

पुढबन्ध मुद्द धी परल ल,
निरपुद्दी हो कैस माया जाल ॥म०॥५॥

(क) "सो मनुष्य न मरता रात्रिषा,
मूला गाजर हा जमीकन्द लवाय ।

(क) मरना रात्रिषा सा मानवी,
कापा पात्री हो स्थोन अणुगम पाय" म०॥६॥

इय भासो (न) मरमायन,
गाजर मूसो र हो मुग्य भाण जाम ।

बली होको, मास, मुग्दा तणो,
 नाम लेवे हो भ्रम घालण काम ॥भ०॥७॥
 फासु-अन्न थी मरता राखिया,
 तिण रो तो हो छिपावे नाम ।
 जाणे खोटी-श्रद्धा चोढ़े पड़े,
 जद विगड़े हो ऊँधा-पन्थ रो काम ॥भ०॥८॥
 कोई जीव मारे पचेन्दरी,
 भूख दुखड़ो हो मिटावण काम ।
 (तिणने) समभाय अचित्त अन्न से,
 पाप मिटायो हो कोई शुध परिणाम ॥९॥
 जीव वचायो पंचेन्दरी,
 तिण रो टलियो हो दुख आरत पाप ।
 मारणवाला ने टल्यो,
 हिंसाकारी हो मोटो कर्म सन्ताप ॥भ०॥१०॥
 इम मरतों ने मारणहार रे,
 शान्ति करता हो सायक बुद्धिमान ।

मनुष्य-विचार

इस भट्टा रो भरन पूषिया,

बर्बा में हो जावे दूरा भाग ॥म०॥३॥

मौलाजन भेला करी,

लोटा हेतू हो सोया गान्न बजाय ।

पर में पुस पुरखय मे,

इस बिष बी हो रया पन्थ बलाया ॥म०॥४॥

सुखो छहान्न दिवे तेहना

कियाविष बोले हो ते बाल-पवाल ।

दुखदन्त दुख बी परल ले,

निरुखी हो कैसे माया काल ॥म०॥५॥

(कले) 'सो मनुष्य ने मरता राखिया,

मूला गाजर हो अमीकन्ध कवत्य ।

(कले) मरता राखिया सो मानबी,

काचो पात्री हो ह्योने अछागल पाव ॥म०॥६॥

इम भोलो (ने) मरमायवा,

गाजर मूलो रा हो मुख चाखे नाम ।

जीव वचिया पुत्र (धर्म) माने नहीं,
 आरंभ ना हो मुख आणे बोल ॥१५॥
 जीव वचे आरंभ मिटे,
 पुन्य-धरम हो तिण मे श्रद्धे नाय ।
 आरभ थी जीव उगरे,
 एवा प्रश्न ते हो पूछे किण न्याय ॥१६॥
 अग्नि, पाणी, होका नो बली,
 घस-मांस ना हो मन्द दृष्टान्त गाय ।
 मुरदा खवाया ॐ रो नाम ले,
 नहिं लाजे हो जैनी नाम घराय ॥१७॥

ॐ जैसा कि वे कहते हैं —

पेट दु खे तड़फड़ करे,
 जीव दोरा हो करे हाय-विराय ।
 शान्ति वपराई सौ जणा,
 मरता राख्या हो त्यों ने होको पाय ॥
 भणियण जिन-धर्म ओलखो ॥७॥

अनुकम्प-विचार

एकान्त-याप तिया में कहे,

ते हो मूल्या हो शिन्धर्म हो मल ॥११॥

जीव बचे धारेंम मिटे,

विष में पिण हो कटाये पाप ।

ते जीव बचे धारेंम हूव,

(परा) मरन पूछे हो कोडी नीयत साध ॥१२॥

जो पुनम-बन्ध माने महीं

आठम बन्ध ही हो पूछे ते जात ।

चतुर चेवाये तेहने,

पुत्रपुत्र भोगो हो हूँ रहो किन्ध मोंत ॥१३॥

जा बर्यामासा मान नही,

छाया-छाया या हो पूछे शान्त कबार ।

ते मूरख हें संसार में,

मिथ्या-भापी हो तियरे नहिं विचार ॥१४॥

इय एधन्ते जानुभ्यो,

कृपाही हो मिथ्याबापी अतोला ।

(कोई) भद्रिक अनुकम्पा करे,

अल्पारंभी हो हल्लकर्मी जोय ।

महारभी महा-परिमही,

तिणरे घट मे हो करुणा किम होय ॥१९॥

मोटी हिंसा त्रस-काय नी,

थावर नी हो छोटी सूत्र में जोय ।

आवश्यक, उपासक, दशा,

भगोती में हो प्रभु भाखी मोय ॥२०॥

मोटी हिंसा मूठ चोरी री,

श्रावक रे हो व्रत री मर्याद ।

(नेथी) अल्पारंभी श्रावक कछा,

आँख खोली हो देखो संवाद ॥भवि०॥२१॥

दया भाव दिल आणने,

सो मनखाँ रा हो वचावसी प्राण ।

ते अल्पारंभी जाणज्यो,

अनुरुम्पा रो हो यो मर्म पिछ्छाण ॥२२॥

अनुपम-विचार

(बलि) नर भार मनुष्य बचाविया,
मंमार्ग जो हो एम इतु सगाय ।

पवा कूटस्थान्त मेलने,
त सुणने हो शानी लग्ग पाय ॥१८॥

सी बन्ना बुद्धिबल म
बल बिना हो मरे उवाइ मवि ।

कोइक मरे नसु कय ने
सी बर्ग ने हो मरता राख्वा कियार ॥मवि १८॥

किमहि कळे बल बिना
सी बर्ग रा हो सुवा होने जीव कय ।

उदने कळेवा सुवा पविनी
कुलके राख्वा हो लानि तेइ कुराव ॥मवि १९॥

कळे मरता देखी सी रोगक
मंमार्ग बिना हो ते साजा न पाय ।

कोइ मंमार्ग करे एक मनुष्य सी
सी बर्ग ने हो शान्ति किमि बचाय ॥मवि १९॥
(अनुपम-विचार ४)

(कोई) मदिक अनुकम्पा करे,

अल्पारभी हो हृत्कूर्मी जाग्र ।

महारंभी महा-परिग्रही,

तिणरे घट में हो करुणा किस होय ॥१९॥

मोटी हिंसा त्रस-काय नी,

थावर नी हो छोटी सूत्र में जोय ।

आवश्यक, उपासक, दशा,

भगोती में हो प्रभु भाखी सोय ॥२०॥

मोटी हिंसा मूठ चोरी री,

श्रावक रे हो व्रत री मर्याद ।

(तैथी) अल्पारंभी श्रावक कल्या,

आँख खोली हो देखो संवाद ॥भवि०॥२१॥

दया भाव दिल आणने,

सो मनखौं रा हो वचावसी प्राण ।

ते अल्पारंभी जाणज्यो,

अनुकम्पा रो हो यो मर्म पिच्छाण ॥२२॥

धनुष्मन्-विचार

अस्वारमी नर हुबे

ब्रह्मसोम ने हा से मारे कम ।

अनुष्मन् उठावण कारये

वाँ रजियो हो बोलण रो नेम ॥२३॥

एकेम्प्री पंचेम्प्री सारीला

एवा बोले हो कुगुद हुआ बोल ।

पाखी मांस सरीसो करे,

बर्बा कीया हो कुल जावे पोस ॥२४॥

पाखी अथित पीयो तुम्हे,

मांस अथित हो खायो के नौब ।

तप करे 'म्हे सावों न्हीं,

मोस आहारे हो महा कर्म वैपाय ॥२५॥

मांस आहार नरक (रो) हेसु है,

ठागाचैंग हो स्थाई रे मांस ।

म्हे साधू बाजों जैन रा

मांस खाव हो साधुवा बढ जाय" ॥ २६॥

मांस पाणी एक सरीखा,

मूँडा थी दो तुम्हें कहता एम ।

(पोते) काम पढ़थो जद बदलिया,

परतीतो हो थारी आवे केम ॥भवि०॥२७॥

पाणी, मास अचित बेहू,

पाणी पीवो दो मांस खावो नाय ।

तो सरखा हिवे ना रखा,

किम भोलौं ने हो नाख्या भर्म रे माँय ॥२८॥

पाणी पीवे सजम पले,

मास खादे हो साधू नरक में जाय ।

(तेथी) सातों दृष्टान्त सरिखा नहीं,

योग्य-अयोग्य हो त्या मे अन्तर थाय ॥२९॥

जो सम परणामी साधु रे,

पाणी माँस में हो बहुलो अन्तर होय ।

तो गृहस्थ रे सरिखा किम हूवे,

पक्ष छोडी हो ज्ञान-नयने जोय ॥३०॥

अनुष्ठा-विचार

अस्फारभी जर हुने,

त्रसर्जाव ने हा ते मारे फेम ।

अनुष्ठा ठावया कारण

जो तजियो हो बोलया तो नेम ॥२३॥

एकेन्त्री पंचेन्त्री सारीला

एवा बोल हो क्युन हा बोल ।

पाखी मांस सरीया कष्ट,

जपा कीजा हा तुल जावे बोल ॥२४॥

पाखी अथित पीबो तुम्हे

मांस अधिन हो त्वावो के तौर ।

तब कहे 'भूँ' ग्रापो नही

मांस आहारे हा महा कर्म वैपाय ॥२५॥

मांस आहार गरु (ने) देणु दे,

ठाग्यभोग हो उगई रे मांस ।

गृह ग्राधू पाजई अन्न रा

मांस ग्राध हा ग्राधुण ठट जाय" ॥ २६॥

मांस न खावे साधुजी,

फासुक पिण हो जाणे नरक रो स्थान ।

अन्न, मांस सरीखो नहीं,

साधु श्रावक हो करे अन्न-जल पान ॥३५॥

जो श्रावक मांस खावे नहीं,

दूजा न हो खावे केम ।

अनुकम्पा उठायवा,

अणहूँतो हो यो घाल्यो बेम । ३६ ॥

अचित तो बेहू सारखा,

मांस खाधा हो होवे संजम री घात ।

पाणी पीधा संजम पले,

(तो) उत्थप गई हो सातो हेतु री घात ॥३७॥

ए खोटा दृष्टान्त कुगुरु तणा,

ते दीधा हो मेटण दया धर्म ।

ते समदृष्टि श्रद्धे नहीं,

चोढ़े जाणे हो खोटी श्रद्धा रो मर्म ॥३८॥

अनुबन्ध-विचार

जो मांस पाणी सरिजा कहे,

(तो) चेष्टा जाया हो होसी मुनि रे धर्म ॥

(बारे) बहु अभिष्ट एक सारजा,

बारे लेले हा नहीं राखणो धर्म ॥ ३१ ॥

जो साधु र सरिजा कहे सही,

(तो) कोन मान हो तब वचन मचीत ।

आप पापी आप कथाप ही,

बारी भला हा परतत्र विपरीत ॥ ३२ ॥

जो साधु रे बहु सगिगा कहे,

ता सोचों में हो पुर-पुर बहु जाय ।

तब मांस-पाणी मुदा कहे,

मृदा वाला रीदा कुण पक्ष बंधाय म० ॥ ३३ ॥

मांस-पाणी सरीगा कहे,

साधों र हा केता लाभ मूढ़ ।

एकदा अलटो-पर्व ता आसिया,

त्यार कहे दो बूढ़ कल-कल मूढ़ ॥ ३४ ॥

मांस न खावे साधुजी,

फासुक पिण हो जाणे नरक रो स्थान ।

अन्न, मांस सरीखो नहीं,

साधु श्रावक हो करे अन्न-जल पान ॥३५॥

जो श्रावक मांस खावे नहीं,

दूजा न हो खवावे केम ।

अनुकम्पा उठायवा,

अणहूँतो हो यो घाल्यो बेम । ३६ ॥

अचित तो बेहू सारखा,

मांस खाधा हो होवे संजम री घात ।

पाणी पीधा संजम पले,

(तो) उत्थप गई हो सातो हेतु री बात ॥३७॥

ए खोटा दृष्टान्त कुगुरु तणा,

ते दीधा हो मेदण दया धर्म ।

ते समदृष्टि श्रद्धे नहीं,

चोड़े जाणे हो खोटी श्रद्धा रो मर्म ॥३८॥

धनुस्त्वामिषात्

जीवों की रक्षा जा करे,

मिट जाने हो तेना राग ने द्वेष ।

श्री गुरु प्रभु शम भाक्षियो

शंका होवे तो हो बरामों भग दत्त ॥३९॥

रत्न अमोलक वेष्ट ने

मूर्ख नर हो जाये तब बर्ष ।

जबरी मिस्या तेने पारखू,

अमोलक हो तब जाण्या खोप ॥४०॥

धर्म है जीव बचाविया

या बड़ा हा शुभ रत्न अमाल ।

इन्द्रुन कोष सरणी बद्ध

श्याम न सुज हो मिथ्या उद्य अतोत्त ॥४१॥

सम बोध न जीव बचाय ले

बारी तज न हा बर जीव बचाय ।

बलि करे सुहाग्र नृप

जीव बचाव हा अधिपार दुहाय ॥४२॥

धन तज राखे पर-प्राण ने,

(इस) क्रोधादिक हो अठारा ही त्याग ।

छोड़े छोड़ावे भल जाण ने,

परजीवों ने हो मरता राखे सुभाग ॥४३॥

भूख मरतो हणे पंचेन्दरी,

करुणा कर हो तेने दे समझाय ।

फासुक सूँ खडी देय ने,

जीव-रक्षा हो इणविध पिण थाय ॥४४॥

माहण माहण उपदेश थी,

बचाया हो पर-जीवों रा प्राण ।

या सत्य-वचन आराधना,

जीवरक्षा हो हुई परधान ॥ भवि० ॥४५॥

चोर लूटे धन पारको,

धन धणी हो मरणे-मारणे धाय ।

समझाय चोरी छोड़ाय दी,

दोनों री हो रक्षा हुई इण न्याय ॥४६॥

अनुकम्पा-विचार

जीवों की रक्षा जा कर,

मिट जावे हो तेना राग मे ह्वे ।

श्री मुक्त प्रभु हम भाक्तियो,

राका होने वो हो बरामों अग देख ॥३९॥

रत्न अमोलक देख मे,

मूरख भर हो आणे तस कौच ।

जबरी मिस्त्रा तेमे पारख,

अमोलक हो तब जाख्यो सौच ॥४०॥

धर्म है जीव बचाविया,

धा म्हा दा शुध रतन अमोल ।

गुरु कौच सरगी कर,

म्याय म सूज हो मिथ्या उदय अवान ॥४१॥

मन मान न जीव बचाय ले

पारी तज न हो पर जीव बचाय ।

बलि करे सुपागज गुहा

जीव बचाय दा म्यभिषाग दुहाय ॥४२॥

बिन हिंसा जीव बचाविया,

तिण में श्रद्धो हो तुम पाप-एकान्त ।

(तो) सत्यादिक थी छोड़ाविया,

सगले ठामे हो थॉरे पाप रो पन्थ ॥५१॥

हिंसा तजी, मूठ छोड़ने,

चोरी तज ने हो परजीव बचाय ।

मरता राख्या मैथुन तजी,

ते अनुकम्पा हो थारे पाप रे माय ॥५२॥

भूठ चोरी व्यभिचार॰रो,

नाम लेकर हो तुमे घालो भर्म ।

भूठा हेतु लगाय ने,

छोड़ दीनी हो तुमे लाज रु शर्म ॥५३॥

ऐसा किवे कहते है —

मूठ धोलने, चोरी करने हो परजीव बचाय ।

२९६, मरता राखे हो मैथुन मेवाय ॥२१॥

(अनुकम्पा हाल—७)

अनुकम्पा-विचार

शील रखे एक लम्पटी,
 शीलवती हो करुण लागी कम्य ।
 सम्यद ने समझावियो,
 प्राण बचाया हो सुती रा धर्म र साथ ॥४७॥
 धन धर्म हये एक सेठ ने
 धन धर्यी हा दीनों परिमहो त्याग ।
 प्राण बचाया परिमह हुत्या
 रक्षा हुई हो सतमाराग साथ ॥मवि० ॥४८॥
 क्षात्रवसे हये जीव ने,
 क्षोभ बोकायो हो जीवरक्षा रे काम ।
 इम मान, मायावी पाप ने,
 बोकाया हो जीवरक्षा रे काम ॥म०॥४९॥
 यों सगला में जीवरक्षा हुई,
 स्व-परना हो बली हुया पाप ।
 रग्य मौठी जीव बचाविया,
 मोह अनुकम्पा हो रही भवानी साफ ॥५०॥

पहेली कुकर्म कीधो आकरो,

दूजी रे हो आरम्भ आश्रव साय ।

दर्शन कीधा बेहू जणी,

दान दीधो हो धानें अति हर्षाय ॥५८॥

यामें उत्तम अधम कोण है,

अथवा सरीखो हो थारी श्रद्धा रे माँय ।

न्याय विचारी ने कहो,

विवेके हो हिरदा रे माँय ॥भवि०॥५९॥

(कहे)“पेली नारी महा-पापिणी,

दान दर्शन हो तिणरा लेखा में नाय ।

पन्थ लजायो हम तणो,

कुकर्मी हो धक्का जगत मे खाय ॥६०॥

दूजी विवेको गुण भरी,

दर्शन दान रो हो तिणरे धर्म रो धाम ।

घट्टी आरंभ आश्रव सही,

तिण बिना हो तिणरो किम चले काम”॥६१॥

पुष्पा-विचार

जीवन्मृत्यो-देवी कहे,

मरता राखे हो मैकुन सेनाय ।

विषयो उत्तर दीने सौमला,

मिट जाने हो बौरी बकनाय ॥५४॥

एक विषया थाप पम्प री,

मिज पूसजी ॥ हो दरान री बाय ।

बीरा पूस्य रहा परगाम में

छापी बिन हो परान नहि पाय ॥५५॥

व्यभिचार की पैसी जोड़ने,

दरान कासे हो आई पूसजी रे पास ।

भाबना भाई (माज) बराबियो

कारज निपट्या हो व्यभिचार की छासा ॥५६॥

(बीजी) विधवा गरीब लयमबती,

पट्टी पीस हो पैसा जोड़न कास ।

दरान कर (आहार) बराबियो,

कारज निपट्या हो पट्टी र सास ॥५७॥

जीवरक्षा जिन धर्म है,

सूत्तर में हो श्री जिनजी रा वयन ।

तिण में पाप बतावियो,

शुद्ध-बुद्ध नहीं हो फूटा अन्तर-नयन ॥६६॥

कोई क्रूर कसाई समझाय ने,

मरता राख्या हो दीन-जीव अनेक ।

तिण में पाप बतावता,

त्याँरा विगड़या हो श्रद्धा ने विवेक ॥६७॥

पहेला ने उपदेश दे,

पाप छोड़ाया हो धर्म रो फल जोय ।

तो पाप मिट्या मरता जीव रा,

धर्म तेहमें हो कहो किम नहीं होय ॥६८॥

कहे “पाप छोड़ाया धर्म है,

मरता जीवाँ राहो आरत(रुद्र)मेटण पाप ।”

खिण थापे खिण मे फिरे,

खोटी श्रद्धा हो या तो दीखे साफ ॥६९॥

अनुकम्पा-विचार

‘अन्तर’ तो समझी इया दृष्टान्त थी,
मैथुन सने हो जीवरक्षा रे काज ।

परबम नारी सारथी,
नहिं विवेक हो नहिं विषय रे लाज ॥६२॥
कोई जीव बचावे गुण भरी
पट्टी व्यापक हो मेतल रे साथ ।

अनुकम्पा वस मिरमली
कारम तो हो अणुचरते कणाय ॥६३॥
अविचार पट्टी सरीसो मूर्खी
इस समझे हो सब कर्म कुकर्म ।

समझे विवेकी विवेक में,
अणुसमझू रे हा अपने अतिमर्म ॥६४॥
शील सख्त दरीय कहो कुण्ड करे,
तो जीव बचावे हो कुण्ड मैथुन सेव ।

अस्तु अस्तु रा कान्हा,
अपनय जोड़यो हो मेतल कुण्ड ॥६५॥

हृणता जीव ने रोकता,

तिणमाए हो मन्द पाप वताय ॥७२॥

पहला संवरद्वार में,

अमाघाओ हो दया रो नाम ।

वीर प्रभू उपदेशियो,

श्रेणिक राजादि हो सुणियो सुखधाम ॥७३॥

दया-भाव दिल उपज्यो,

‘अमाघाए’ हो घोपणा दी सुनाय ।

जीव कोई हणो मती,

सप्तम अंगे हो मूलपाठ रे माँय ॥७४॥

सप्तम दशम अंग रो.

एक सारीखो हो पाठ सूतर माँय ।

जे कारज वीर वखाणियो,

श्रेणिक नृप हो दियो सवने सुनाय ॥७५॥

(निज) श्रद्धा उठती जाण ने,

सूतर रा हो दीना पाठ उठाय ।

अनुकम्पा-विचार

देवलस्यस तेहमी परे,

फिर आवे हो न रही एक ठाम ।

दया-धर्म सत्पाप ने,

मलाहो मरुखो हो नहिं बचा रो काम ॥७७॥

झिंझिह कछार्ये रो माम ले

राख्या मार-पा रो हो मूठ रज परपथ ।

बिन मार-पा जीव बचाविया

पाप अछे हो मूढ़ कर-कर लप ॥७८॥

जीव बचावा रा द्वीप थी

दया अछे हो एषी बाल बाव ।

७ बैसा ॥ वे कथत है:—

कोई नमर कछार्ये न मारये

मरना राख्या हो धया जीव अयेक ।

अ गिने दोषों ने सारणा

मौं ॥ दिगाही हो अहा बान विवेक ॥७९॥

(अनुकम्पा वाक्य—७)

पाप कहे श्रेणिक भणी,

ते तो बोले हो चोड़े भूठ मिथ्यात ॥७९॥

“अमारी” धर्म जिन भाषियो,

नृप पाल्यो हो पलायो जग (देश) माँय ।

तेमाँ पाप कहे ते पापिया,

भोलाँ ने हो नाख्यौं फन्द रे माँय ॥८०॥

(कहे) “वीरजी नाय सिखावियो,

पड़हो फेरजे हो थारा राज रे माँय ।

तो श्रेणिक सीख्यो किण कने”,

(इम) भ्रम घाले हो कुगुरु मन माय ॥८१॥

(कहे) “आज्ञा न दीनी वीरजी,

उद्घोषणा हो करो राज रे माँय ।

भगवन्त न सराह्यो तेहमे,

तो किमि आवे हो तिण री प्रतीत ॥ ३७ ॥

(अनुकम्पा ढाल—७)

बहुकथा-विचार

(क) "पाप इसी के लिए भरी,"
 अभी बोले हो भयान्ती का ॥७१॥
 बेधिक समझी हूँ तो
 हिंसा रोखी हो सूख र मौँष ।
 मादखो मादखो प्रभु कहे
 सब माये हो बेधिक रियो सुखाय ॥७२॥
 हिंसा पुहार्य राज्यी
 सम्मति हो गुल में डुल पाय ।
 जीव क्या ए बेपिमा
 ई पी मति भी हो गुराज में जाय ॥७८॥
 गतिभारो ॥ घाटा राय (बेधिक) ही
 का मागी हो गुराज में बाल ।

७ प्रेता कि है करने हैं —
 ४ मिथ्याच बढ़ा चिर्यवरो
 बढ़ लो जग का मोटा तारों की रीत ।

यो हुक्म राजा श्रेणिक तणो,
 आज्ञाकारी हो सुणायो जाय ॥८६॥
 श्रेणिक ने प्रभु ना कह्यो,
 घोषण करजे हो म्हारा स्थान रे काज ।
 तो पाप हुवो तुम कथन थी,
 सेजा रो हो वीर ने दीनो साज ॥८७॥
 बलि मोटा होता राजवी,
 स्थान घोषणा (री) हो नहीं चाली बात ।
 तो श्रेणिक घोषणा किम करी,
 न्याय तोलो हो हिरदे साजात ॥८८॥
 श्रीकृष्ण करी उद्घोषणा,
 दीक्षा लेवो हो श्री नेम रे पास ।
 साय करूँ पिछला तणी,
 ज्ञाता में हो यो पाठ है खास ॥८९॥
 आज्ञा न दीवी श्री नेमजी,
 उद्घोषणा हो करो नगरी मँभार ।

भयु रोग-विचार

तो धर्म श्रेष्ठिक र किम हुये,

पाप भयो हो नैं ता मन रे सोच ॥८२॥

माट-माटा हुँता यजवी,

समदष्टि हो जिन-धर्म रा जाय ।

त्यो हिमा छोडावण कारण,

नहि पापणा दाबीची सुख प्रमासु ॥८३॥

(४४) एहि तक कर केई मन्त्रमती,

महि सुने हो पृथा अन्तर-जगत ।

जीव रचावण होष थी

अलहना हो मुक्त काँडे वपन ॥८४॥

स्वाय गुणो दिवे माय भू

श्रेष्ठिक री हा सूनर मे बान ।

निज माकर पुनाय म

आता बीनी हा इगविष माणस ॥८५॥

पान-धर्मी न अन्नाय हो

जगा बीजा हा बीर-धनु जब आय ।

यो हुक्म राजा श्रेणिक तणो,
 आज्ञाकारी हो सुणायो जाय ॥८६॥
 श्रेणिक ने प्रभु ना कह्यो,
 घोषण करजे हो म्हारा स्थान रे काज ।
 तो पाप हुवो तुम कथन थी,
 सेजा रो हो वीर ने दीनो साज ॥८७॥
 बलि मोटा होता राजवी,
 स्थान घोषणा (री) हो नहीं चाली बात ।
 तो श्रेणिक घोषणा किम करी,
 न्याय तोलो हो हिरदे साक्षात ॥८८॥
 श्रीकृष्ण करी उद्घोषणा,
 दीक्षा लेवो हो श्री नेम रे पास ।
 साय करूँ पिछला तणी,
 ज्ञाता में हो यो पाठ है खास ॥८९॥
 आज्ञा न दीवी श्री नेमजी,
 उद्घोषणा हो करो नगरी मँभार ।

बहुधन्य-विचार

- (तो) धारे लेख पाप हुको चणो,
वीर बजासी(में) हो गही धर्म सिंगार ॥९०॥
अम्भ भूप री चाली गही,
अभोपणा हो वीर के सहाय ।
इय कारन भीकण्य ने,
पाप कइयो हा भारी भया रे माँय ॥९१॥
कोणिक अगो बीर से
नित्यप्रये हो कुराक-बात मैगाव ।
मेन घरी सुये भाव हँ
इय कज हो देवे भर ने साथ ॥९२॥
वीरजी नाव सिखामियो,
सुन बारा हो मित लीजे मैगाव ।
(तो) प्रसु नाम सोत्र सुखवा कयो
पाप लागे हो भारी भया रे माँय ॥९३॥
तब वो कुशु इय पर कहे,
'स्नान पोपणा हो करी मेणिक राव ।

दीक्षा घोषणा थी कृष्णजी,

प्रभु वारता हो कोणिकजी मँगाय ॥९४॥

श्रेणिक अरु श्रीकृष्णजी,

धर्मदलाली हो कीधी शुध-भाव ।

कोणिक भक्ती रस पियो,

धर्म भाव रो हो चितमें अतिचाव ॥९५॥

श्रेणिक ने प्रभु नहि कह्यो,

घोषण कीजे हो म्हारे स्थान रे काम ।

आव-जाव कार्य करण रो,

गृहस्थी ने हो केणो बज्यो श्याम ॥९६॥

समदृष्टि निर्मल भाव थी,

स्थान-दलाली हो कीधी श्रेणिक राय ।

तिणरे विवेक अति निरमलो,

कारण काज हो समके मन माँथ ॥९७॥

उद्घोषण आज्ञा में नहीं,

दीक्षा-दलाली हो निर्मल परिणाम ।

बहुभार-विचार

धर्म-दलालो मीपजी,

समष्टी हो करे एहका काम ॥९८॥

नाम गोत्र सुण साधु रो,

अति पत्र कछो हो सुख रे माँय ।

कोयिक सुणवो (प्रमु) बरदा,

मच्छी रो हो पल मोठो पाव ॥९९॥

वीरकी नाय छिन्ताविणो

सुम्ह बार्ता हो निव लीजे सैगाव ।

बली न अयाई काममा,

वे ता समझे हा निजबुद्धि लगाव ॥१००॥

बीजा राजा री बाली न्ही,

छूषोपण हो स्वान बीछा रे काज ।

पिख निपेध बीसे नही

कीधी होब हो माये अिन राज ॥१०१॥

(आमपिण) पत्र मेसण साधु करै नही,

मायक मेजे हो वन्दणा विविध प्रकार ।

वन्दना रो तिण ने लाभ छे,

पत्र प्रेषण हो आरम्भ निरधार ॥१०२॥

पत्र प्रेषण साधु न सीखवे,

श्रावक भेजे हो निज ज्ञान विचार ।

वन्दन-भाव तो निर्मला,

साधु रो हो नहीं कहण आचार" ॥१०३॥

इम सूधा ते बोलिया,

तब ज्ञानी हो तेने कहे समभाय ।

इणहिज विध तुम श्रद्ध लो,

उद्घोषण हो मति मारया रो न्याय ॥१०४॥

घोषणाकर प्रभु ना कहे,

पूछया थी हो कदा न देवे ज्वाब ।

‘स्थान’ ‘दीक्षा’ ‘अमरी’ तणी,

सरखी घोषण हो तुम्हें समझो सिताव ॥१०५॥

‘स्थान’ ‘दीक्षा’ ‘अमरी’ तणा,

कारज चोखा हो प्रभु दीना बताय ।

अनुकम्पा-विचार

समझिए कैना भाव सँ,
धर्म दहाली हो धर्म सो फल पाया ॥१०९॥
अमावासी नाम क्या तथो
बीर माय्यो हो प्रथम संहरहार ।
ते घोषणा नेणिक करी,
महिमारो हो घोषणा से सार ॥१०७॥
पर न क्यो स्थान देवजो
दीख संघा हो पर न क्यो ताम ।
महिमारो तिम पर न क्यो,
एक सरिला हो तीनों से काम ॥१०८॥
हो में धर्म केनो तुम्ह
तीजा में हा बतावो पाप ।
छोटी भट्टा छ तुम तथी
मिथ्यावादी हो तुमे दीसो हो मान ॥१०९॥
(कहे) "महिमा भी नरक नही मही",
(तो) स्थान दसाजी भी नही महि केम

(यदि कहो) आगे एना फल पामसी,

मतिमार रा हो तुम्हे जाणो एम ॥११०॥

जो नरक जावा रा नाम थी,

मतिमार में हो बताओ पाप ।

तो श्रेणिक भक्ती बहु करी,

थारे लेखे हो ते सगली कलाप ॥१११॥

जो भक्ति आदि किया थीकी,

तीर्थकर हो होसी श्रेणिकराय ।

(तो) मतमार दलाली धर्म री,

पद तीर्थकर हो अभयदान रे साय ॥११२॥

मतिमार घोषणा राय री,

थें बतावो हो मोटा राजा री रीत॥

ॐ जैसा कि वे कहते हैं —

श्रेणिकराय पटहो फिरावियो,

यह तो जाणो हो मोटा राजा री रीति ॥३०॥

(अनुकम्पा ढाल—७)

अनुकम्पान्वित

समदृष्टि कीना भाव सँ,

धर्म दलाही हो धर्मनो फल पाया ॥१०६॥

‘अमापायो’ नाम क्या तथो

बीर भाव्यो हो प्रथम संबरकार ।

ते घोषणा भेषिक कपी,

महिमाते हो घोषणा रो सार ॥१०७॥

पर ने क्यो स्थान देबखो

वीर्य लेयो हो पर ने क्यो नाम ।

महिमाते विम पर ने क्यो,

एक सरिखा हो तीनों बे काम ॥१०८॥

वो में धर्म केबो तुम्हें,

सीखा में हो बतावो पाप ।

सोटी भया बे तुम तथी,

मिथ्याबाही हो तुमे बीसो ओ साफ ॥१०९॥

(कहे) “महिमार बी नरक रुकी मर्ति”,

(तो) स्थान दलाही बी रुकी नहि केम ।

(पिण) निषेध नहीं इण वात रो,
 करी होसी हो कोई समदृष्टि राय॥११७॥
 ब्रह्मदत्त चक्री भणी,
 चित मुनि हो समभावण आय ।
 आरज कर्म ने आदरो,
 परजा री हो अनुकम्पा लाय ॥११८॥
 पिण भारी-कर्मि रायजी,
 जीवरक्षा रो हो नहीं कीनो उपाय ।
 तुमे अनुकम्पा रा द्वेष थी,
 मतिमार में हो(श्रेणिक ने)देवो पाप बताय॥११९॥
 लाज तजी वके भाँड ज्यूँ,
 वेश्या रा हो देवे दृष्टान्त कूढ़ ।
 कुकर्मि अनुकम्पा किम करे,
 तो पिण खोटी हो कुगुरु ताणे रूढ़॥१२०॥
 (कहे) “दो वेश्या कसाइवाड़े गई,
 करता देखी हो जीवों रा संहार ।

शाम्र विरुद्ध तुम या कथा,

कृष्ण मामें ही थोड़ा परतलत ॥१८॥

तीधकर चक्की मोन्दना

ग्योरे नाम हो थोड़िया परतलत ।

मतिमार घोपणा नहीं करी,

बारु मुख भी हो (धारी) अथवा गरु वात ॥१९॥

जो रीत मांदा राजा तथी,

ता चक्की हो पाली नहीं केस ।

अमुकन्या का द्वेष थी

नहिं सूजे हा निम वास्या रो नम ॥२०॥

‘मतिमारो’ ने ‘वीणा’ ही घोपणा,

राम-रीती हो केवल स नाथ ।

समदही राजा तथी,

कृष्ण, मोक्षिक हा कीधी सूय रे मोंथ ॥२१॥

वीणा ही अघोपणा,

कृष्ण कोही हो वृजा राजा ही नाथ ।

(उत्तर) भोला ने भडकाविया,

दृष्टान्त नी हो रची मायाजाल ।

(हिवे) करड़ो उत्तर विन दिया,

नही कटे हो यॉरी जाल कराल ॥१२४॥

काँटा थी काँटो काड़णो,

तेथी सुणने हो मत करज्यो रीस ।

कुहेतु शल्य उधारवा,

करड़ा दृष्टान्त हो देऊँ विश्वा वीस ॥१२५॥

दो बायौँ अनुरागण तुम तणी,

पूज्य दर्शण हो गई रेल रे माँय ।

किणविध आई बायौँ तुम्हे,

पूज्य पूछ्या हो बायौँ कह्यो सुणाय ॥१२६॥

(एक) गेणो बेच्यो म्हेँ आपणो,

रोक रुपैया हो कीना दर्शन काज ।

खरची गाँठे बाँध ने,

तुम दर्शन हो आई महाराज ॥१२७॥

अनुष्ठा-दिचार

दोनों जगती मवा करी

मरता रह्यो हो जीव दाय हजार ॥१११॥

एक गदयो वर आपणा,

विण छोड़्या हो जीव एक हजार ।

दुनी छोड़्या इय विवे

एक होय सँ हो बोभो आत्मर सबाइ । १२२॥

इम कही पूव साव मे

कर्म पाप हो कही किय न होय ।

जीव केह छोड़ाविया

छोड़्या सरली हो करक नहिं कोय ॥१२३॥

● जैसा कि वे कहते हैं—

पुनः देखतो आधम पंचमी

तो उय दुनी हो बोभो आधम सेवाव ।

केर पदयो तोई ते इम पाप मे

कर्म होसी ही ते तो सरिको पाप इम ॥५४॥

(अनु शास्त्र—७)

सेव्यो आश्रव एक पाँचमो,

तो दूजी आई हो चोथो आश्रव सेव ।

दोयाँ रो भेद बताय दो,

आश्रव सरखा हो थारे केवा री टेव ॥१३२॥

सुण घबराया पूज्यजी,

उत्तर देता हो ऊठे श्रद्धा री टेक ।

(दोनों) सरीखी कहाँ शोभे नहीं,

लोक निन्दे हो (लागे) कलंक री रेख ॥१३३॥

डरता इणविध बोलिया,

गेणा बेंची हो कीधा दर्शन सार ।

तिणरी बुद्धि तो निरमली,

तेने हुवो हो धर्मफल अपार ॥१३४॥

बीजी कुलक्षणी नार है,

दर्शन काजे हो चोथो आश्रवद्वार ।

सेव्यो ते महापापणी,

(विवेक) विकलणी रे हो धर्म नार्हा लिगार १३५

बहुधन्य-विधा।

(दि मदिना) मेवा करसूँ वाहरी,

करची खासूँ हो बाने बेरास्यूँ मास ।

हूजी कहे मुझ सौमलो

हयबिच मे होम आई पास ॥१२८॥

करची नहीं भी मुझ कले,

आवय री हो तुम पास आव ।

एक वीथ सेठ री जाय मे,

करची लीची हो बोबो आवय खेवाय ॥१२९॥

तुम बराम करची आवयो

बोबो आवय हो (स्वामी) सेव्यो चित वाय ।

खासूँ न माझ वरावस्यूँ,

इम वाली हो पूज्य (री) मगठा वाय ॥१३०॥

(एक) समदटी सुणियो तिराँ,

वोंर (बायोँर) पूज्यने हो पूज्यो प्ररत एक ।

(पमो) धर्मणी पापणी काय बं,

बतायो हो बीरी मया ने बेज ॥१३१॥

(बलि) लोभ छोड्यो सिणगार रो,

समता मारी हो समता दिल धार ।

(तेथी) पेली हुवे धर्मात्मा,

ज्ञानदृष्टि हो डम करणो विचार ॥१४०॥

दूजी दुरगुण थी भरी,

दर्शन रा हो भाव क्रिणविध होय ।

वात असम्भवती दिसे,

दृष्टान्ते हो कदा मानाँ मोय ॥१४१॥

तो मति खोटी तेहनी,

कुकर्मिणी हो मोटो कीनो अन्याय ।

पाप सेव्यो अति मोटको,

फिट-फिट हो हुवे जगत रे साय ॥१४२॥

(बलि) लोभ मिट्यो नहिं तेहनो,

तीव्र वधियो हो तिणरे मोह जंजाल ।

तेथी पापणी दूजी नार है,

दर्शन रो हो थोथो आल-पंपाल” ॥१४३॥

अनुकम्पा-विचार

तब बोझो पिहों समझिणी,

धारी मझा हो धारे कथन कृइ ।

आमन सेम्या बिहुअणी,

फरक माझ्यो हो तुम तज ने रुइ ॥१३६॥

हरौन सेवा, बौरी सारीजी,

केर पड़ियो हो क्यों धौरे मौंथ ।

एक मर्मी एक पापिणी,

किम होवे हो आर मव रे मौंथ ॥१३७॥

एक सेम्यो आमन पाँचमो

बौयो आमन हो वृजी सबी त आय ।

हर पड़यो इछ पाव में,

धर्म होसी हा व सो सरिका अम्या ॥१३८॥

तब सिद्धा त बालिया,

धानों ही हो मवि एक सी नाथ ।

गणा देम्या प्रव आर नही

पाप माझा हा त नाथ गिझाय ॥१३९॥

(तिम) वेश्या दयालू थाप ने,

जीव वचाया हो दोनों रे हात ।

लोकाँ ने भड़कायवा,

अणहोती हो थाँ थापी बात ॥१४८॥

(रुदा) गणिका हलुकर्मी होवे,

धर्मीजन री हो वा संगत पाय ।

छोड़े कुकर्म आपणा,

दया प्रकटे हो वीरा दिलरे माँय ॥१४९॥

तदा गेणा ममता उतार ने,

वकरा रा हो देवे प्राण वचाय ।

आरजकर्म रा साय से,

हिंसक नीहो दीनी हिंसाछोडाय ॥१५०॥

तिण रे विवेक अति निरमलो,

जीवरक्षा हो तिणरे घट माँय ।

लोभ छोड-यो सिणगार नो,

धन री तो हो दीनी ममता घटाय ॥१५१॥

अनुकम्पा-विचार

म्यापपणी तब बोलियो,

सेवाते हो भार नीके राग ।

तेही सिखा बोलिया,

(फिण) कीबरहा में हो कीनो सस्य नेत्या ॥१४४॥

कजन विचारो तुम वणा

रो बेरवा रो हो बों लीनो नाम ।

गेया मे व्यमिचार की

कीबरहा रो हो ल्यों कीरो कत्म ॥१४५॥

वेरवा रवा किम कटे,

अनुकम्पा हो तेने किम होय ।

हुकुमी महापापिणी,

दयाहेपणी हा नरकगाभिणी ओय ॥१४६॥

शोचाचारी 'कागजो',

घनरक्त हो कहे 'थोर' ने कोय ।

पतिव्रता व्यमिचारिणी

ओ माम्हे हो मूरख जर सोय ॥१४७॥

विपरीत-मति थी जे करे,

तेनी करणी हो विपरीत ही जोय ।

तिणरा पक्ष री थापना,

जे करे हो ते मिथ्याती होय ॥१५६॥

मिथ्यातणी व्यभिचारणी,

तेनी करणी हो नही धर्म रे माँय ।

कर्मबन्ध फल जेहने,

तेनो प्रश्न हो पूछो किण न्याय ॥१५७॥

हाथी ना स्नान सारखी,

मिथ्यामति री हो करणी शुध नाँय ।

अल्प सो पाप उतार ने,

महापाप ने हो ते तो बाँधे प्राय ॥१५८॥

मिथ्यामति व्यभिचारणी,

तेनी करणी हो श्रद्धे धर्म रे माँय ।

ते उत्तर तुमने दिये,

मे तो श्रद्धाँ हो तेने धर्म मे नाय ॥१५९॥

अनुकम्पा-विचार

- (८) प्रथम बार सग आगयी,
 धर्मकर्ता हो तं गुण री लाय ।
 धर्म लाभ विण ने दुखो
 गुण निपग्यो हो अनुकम्पा प्रमाय ॥१५२॥
- दूजी बेरवा दुष्टणी
 निरादिम आवे हा व्यभिचार रे मॉय ।
 विण रे अनुकम्पा किम हुवे
 अग्नि में हो किम कमल आव ॥१५३॥
- गणिका बक्य बचानिया
 व्यभिचार मे हो सेव्यो रक्षा रे काय ।
 ॥ परतल मूठी बाव है,
 बनि बोसण हो नही आवे लाय ॥१५४॥
- कषा हेतू मानों तुम पणो,
 कषा कषर हो तुम्हें समझी एम ।
 बेरवा हुवे व्यभिचारणी,
 मोटीमति री हो करणी छुट केम ॥१५५॥

होवे कथन हमारो साँभलो,

में (तो) नहीं करौं हो धर्म-पाप री थाप ।

मिथ्याहेतु मिथ्यामति कथे,

तेने उत्तर हो म्हे देवाँ साफ ॥१६४॥

(एक) नारी कुकर्म सेव ने,

सहस्र नाणो हो लाई घर माँय ।

दूजी सेवी व्यभिचार ने,

द्रव्य खरचे हो साधु सेवा रे माँय ॥१६५॥

धन आणो खोटा कृत करी,

तिण रे लाग्या हो दोनो विध कर्म ।

तो दूजी सेवा करी थाहिरी,

थारे लेखे हो हुवो पाप ने धर्म ॥१६६॥

पाप गिणे व्यभिचार में,

उणरी सेवा में हो ते न गिणे धर्म ।

पोते श्रद्धा री खवर पोते नहीं,

द्रव्या उठावा हो चाँवे भारी-कर्म ॥१६७॥

अकुरगा-विचार

बेरया-बेरया मुन्न बसी,

लखा छोड़ी हो बेचे छयाना कूह ।

जीबों री रखा कठाम्पा,

छोटी कमनी री हा मॉडी अति ह्व ॥१६०॥

(कहे) 'पड़ बेरया साम्रज कृत (काम) करी,

सहस्र नाचो हो से बलि घर मॉय ।

दूजी कलाम्ब करी आपयो

मरया सक्या हो सहस्र जीव ओकाय ॥१६१॥

पन आपयो छोटा कर्त्तव्य करी

विष रे छाम्बा हो दोनों विष कर्म ।

तो दूजो दुकाया ठेहने,

उणु लले हा दुबो पाप न धर्म ॥१६२॥

एबो छोटी न्याय जगाय न

आप मन हा कर लांजी याप ।

विहु विष पाप पेसी कियो,

दूजी रे हा करो धर्म मे पाप ॥१६३॥

(बलि) त्रसथावर नहीं मारखा,

जॉरा प्राणों में हो क्यो फरक अपार ।

तेथी हिंसा माहीं फरक छे,

स्थूल सूक्ष्म हो सूत्तर निरधार ॥१७२॥

तिम शक्य अशक्य रा भेद ने,

हिंसा रक्षा में हो समझो चतुर सुजाण ।

(केह) समुच्चय नाम बताय ने,

शक्य छोडने हो करे अशक्य(री)ताण ॥१७३॥

थावर रक्षा करी ना सके,

त्रस जीवों री हो करे देह ने साय ।

रण में पाप रो भर्म घुसावियो,

रक्षा रो हो द्वेष घणो घट माय ॥१७४॥

बंध जीव रक्षा करे,

जो ममता ने हटाय ।

रो नाम ले,

कुबुद्धि चलाय ॥१७५॥

इस कथा ज्ञान न छपजे,

बर्षा में हो अठके ठमोठम ।

तो पिछ मिथ्य ना करे,

जीवरक्षा में हो लेवे पापरा नाम ॥१६८॥

जीव, ब्रह्म अनादी शास्त्रो

प्राण-प्रजा हो पलटे बारंबार ।

त प्राणों से पाव हिंसा कही,

रक्षा न हो रक्षा कही सुखकार ॥१६९॥

ते रक्षा करे समभाव ही

समदृष्टि हो संवर गुण पाय ।

मोक्षमार्ग रक्षा कही,

मोक्ष-अर्थी हो करे अति हर्षाय ॥१७०॥

पृथ्व्यादिक जड़काय ना,

प्राणरक्षा में हो करे पाप अजाय ।

गो हिंसा-रक्षा जायसी नहीं,

जोनी कर रखा हो निजमत सी ताय ॥१७१॥

दान, शीयल, तपभावना,

मोक्षमार्ग हो चारो सुखकार ।

अभयदान भय मेटे कह्यो,

जो देवे हो पावे भवपार ॥१८०॥

अनुकम्पा अर्थ प्रकाशिनी,

ढाल जोडी हो चूरु शहर मँजार ।

उगणीमे छियौंसो तणे,

श्रावण सप्तमी हो सुखदायी वार ॥१८१॥

सातवी ढाल सम्पूर्णम्



अनुकम्पा-विचार

समता बताइयों धर्म (हुबे) मोलरो,

इस बोले हो लेने पूछणो एम ।

बस समता परिमाद गृह्य रो

छाधु (ने) दियो हो धर्म होवे केम ॥१७६॥

(कहे) समता बताइयों धर्म है,

अमोलक हो मोल रो नहिं बाध ।

तो जीवरक्षा र काग्यो

(परिमाद) धन समता हो मेटे मोल में लीया ॥१७७॥

मगधवी जठारवे रावके

परिमाद उपधि रो मिष्ट-मिष्ट म एक ।

समता भी परिमाद क्यो

उपकारे हो उपधि मे लेख ॥१७८॥

उपकार समता एक है,

इस बोले हो कुगुन निर्माक ।

एत पथन उत्पाप मे

मिथ्यात रा हो मारे माठा-टक ॥१७९॥

हाल—आठवीं



(तर्ज—अनुकम्पा सावज मत जाणो)

द्रव्यलाय मे बले जद प्राणी,

आरत-ध्यान पावे दुख भारी ।

विल-विलता रुद्रध्यान जो ध्यावे,

अनन्त संसार बधे दुखकारी ॥

चतुर घरम रो निर्णय कीजे ॥१॥

कोई दयावन्त दया दिल धारी,

अग्नि में बलता ने जो बचावे ।

द्रव्य भाव दया तिणरे हुई,

विवरो सुणो तिणरो शुद्ध भावे ॥च०॥२॥

द्रव्ये तो उणरा प्राण री रक्षा,

भावे खोटा ध्यान घटाया ।

दोहा

न हयो हयात्मे जीव(वृक्षाय)मे, लक्ष्म्या कही जिनराम
 औरों टी रक्षा करे, ते पर-दया कदाय ॥१॥

न हयै तेने दया कहा रक्षा ने कहे पाप ।

एह बचन कुगुन ठखा, वी पर दया छत्राप ॥२॥

म्व दया पर-दया मिहु कही, ठाखाभंग रे मौय ।

बोये ठाये देकलो मिध्या विभिर मिटाव ॥३॥

बेपकारी भर्मा धखा, मिध्या लक्ष्म्य विरोप ।

मालों ने भरमात्रिया, काह दया री रेप ॥४॥

पर-दया उठापवा, पदपेच रक्ष्या अनेक ।

सूत्र-न्याय(सू) लाएन करें, सुणयो ज्ञान विवेक ५

पड़त संसार करे तिण अवसर,
 अभयदान देवे शुद्ध भावे ॥चतुर०॥७॥
 दव बलता जीव शरणे आया,
 हाथी अनुकम्पा दिल लायो ।
 संसार पड़त अरु समकित पायो,
 ज्ञातासूत्र में पाठ बतायो ॥चतुर०॥८॥
 शून्यचित्त सूत्र वाँचे मिथ्याती,
 द्रव्य, भाव रो नहीं निवेरो ।
 दयाहीन कुपन्थ चलायो,
 त्याँ कूगति सन्मुख दियो डेरो ॥च०॥९॥
 स्वारथत्यागी परउपकारी,
 दुखी दर्दी रो दर्द मिटावे ।
 ते पिण माठा-ध्यान मिटावण,
 तिण में पाप मिथ्यातीवतावे ॥च०॥१०॥
 (कहे) “साधु गृहस्थ ने ओपध देने,
 दुख आरत तिणरो न मिटावे ।

अनुकम्पा-विधा

यह स्वकार इणभव परभव रो,

विशेष विकल यों भेद न पाया ॥च०॥१॥

द्रव्य आग से बलवा रुद्धा,

आव आग विण्टी टल जाये ।

आरव रुद्र ध्यान पन्था हूँ

राम्निभाष विखरे मन बसि ॥च०॥४॥

समष्टी शुद्ध धाम से आये

लाप बले छोड़ो ध्याम ते ध्याये ।

तपी अनुकम्पा लाभ बचाने

समक्षित लक्ष्य धान्ती बचाने ॥च०॥५॥

भावदा विखर शुद्ध भावे,

द्रव्यदा भी भाव ते आव ।

ते भी अनुकम्पा जीव बचाया,

पङ्क-संसार सूत्र बचाने ॥चतु०॥६॥

केएक जीव, जीवों ने बचाया,

अणुलाभो समक्षित शुण पात्र ।

चौमासे दर्शन अर्थ न जाणो,

इणविध त्याग क्योन करावो॥चतु०॥१५॥

राते बखाण सुणावण काजे,

आतरो पाड़ण त्याग करावो ।

वर्षते पाणी वह सुणवा ने आवे,

तिण सुणवा में धर्म बतावो॥चतु०॥१६॥

गेही रो आणो जाणो सावज,

त्रिविध-त्रिविध भलो नहीं जाणो ।

(तो) बखाणादिक ने पाप मे केणा,

आया विना किम सुणे बखाणो॥चतु०॥१७॥

जो बखाणादिक सुणवा में धर्म है,

आवा-जावा रो साधु न केवे ।

तो आरतध्याण मेटरण में धर्म है,

औषधादिक साधू नहिं देवे ॥चतुर०॥१८॥

वाहरण चढ़ बखाण में आवे,

औषधादि देई आरत मिटावे ।

बहुकम्पा-विचार

तेजी पाप में गृहस्थ ने केवों,

साधु न करे ते पाप में आवे ॥ च० ॥ ११ ॥

(उपर) चौमासे उत्पत्ति लीयों री आम्ही,

गामसुगम सिद्धि न करायो ।

त्रिबिधे (त्रिबिधे) साधू त्यागज कीया,

सुख में साधु ने वलायो निरखो ॥ च० ॥ १२ ॥

साधु न करे त पाप में गयो

तो चौमासे (में) साधु ने आखो न आयो ।

गद्दी चौमासा में वन्द्य जावे,

(तो) सिद्धमें एकम्ब-पाप बहायो ॥ च० ॥ १३ ॥

बन्धु का ता कम्हा करायो,

चौमास सेवा ॥ मात्र बढ़ावे ।

पन्थी, पन्थ बढ़ावण कारण,

धर्म गद्दी-गद्दी न लक्षपावे ॥ चतु० ॥ १४ ॥

जा साधु न करे ते पाप में आवे,

तो गृहस्थ न पाप में क्यों न वलायो ।

भेषधारी कहं म्हे हिंसा छोडावाँ,
 (तो) उपदेश देवा नेक्यों नहि जावे ॥२३॥
 ठोड़ (घर) वेठा उपदेश देवे तो,
 दस-बीस जीवाँ ने दोरा समजावे ।
 (जो) उद्यम करे चार महिना रे माहीं,
 तो लाखौं जीवाँ री हिंसा टलावे ॥२४॥
 सौ घरों अन्तर तपस्या करावण,
 आलस तज उपदेशाण जावे ।
 सौ पग गया (लाखौं कीड़ा री) हिंसा छुटे छे,
 तो हिंसा छुड़ावण क्यो न सिधावे ॥२५॥
 शीचा लेतो जाणे सौ कोस ऊपर,
 (तो) भेषधारी भेष पेरावा जावे ।
 एक कोस पर (कीड़ा री) हिंसा छुटे छे,
 कोड़ा री हिंसा क्यो न छुड़ावे ॥२६॥
 जब तो कहे "वकरादि पँचेन्द्री,
 विना ही विना लोभाना जावाँ ।

भगवत्पाद-विचार

दोनों का राज सरीखा आयो,
 छुट भावों गो वेहु कल पाने ॥च०॥१९॥
 पक्ष में भाव हो धर्म बचाने,
 धीमा में पाप ही जाने बाणी ।
 मोला ने भ्रम में पाव बिगोया,
 तेपिण बूजे छे कर-कर ताणी ॥च०॥२०॥
 (कहे) "कपड़े-ए वेई भई दिशा पुकार्यो,
 आहार छोड़ी कपड़े-ए न आव्यो ।
 कोरा आवरे हिंसा छूट हो
 आलस छोड़ भूत-तुल ही बाणी" ॥च०॥ १॥
 (उत्तर) धर्म नाम धरमण काजे,
 भोला आपो दमस्तुष्ट ताणी ।
 हिंसा छोड़ायो मुण स मोल,
 पिण काम पड़-या मोले फिरती बाणी ॥२॥
 चिरि-बो, माता, लटा, गजायों,
 गद्दी रे पा हेट चोप्या जाव ।

हिंसक थी मरता जाणी ने,

उपदेश देई जीव छुड़ावे ॥चतुर०॥३१॥

हिंसादि अकृत्य करता देखी,

भेषधारी कहे भट समझावाँ ।

गृहस्थ पग हटे जीव आवे तो,

तिण ने तो कहे म्हे नाय बतावाँ ॥३२॥

श्रद्धा जौरी पग-पग अटके,

न्याय सुणो ज्ञानी चितलाई ।

दोनों पक्ष री सुण ने बातों,

सत्य ग्रहो तो है चतुराई ॥चतुर०॥३३॥

बकरा री हिंसा छुड़ावण काजे,

(कहे कसाई ने) “पापी ने उपदेश देवा ने जावाँ”

भोला भरमावण इणविध बोले,

चतुर पूछे तव ज्वात्र न पावाँ ॥च०॥३४॥

श्रावक पग तले चिड़ियो मरे छे,

हिंसा हुवे छे थारे सामे ।

अमुकस्या-विचार

कीदा-मकोदा तो हण धणार्ह,

(त्योरी) दिमा छाकावा कर्हो-कर्हो पाषो ॥

कीदा-मकोदादि हिसक री हिसा,

छोदावा में म्हें धर्म तो आषो ।

(पिय) सगले ठिकाण आस ने हिसा,

छोदावा रा कथम किम ठाषो ॥१॥

तो इमहिज समझे रे अर्ह,

कीदादि रक्षा धर्म में आषो ।

मत्तादिक में सगले ठिकाणे,

बपावण रो कथम किम ठाषो ॥२॥

हिसा छुदावा सगले न आषो,

तिम ही जीव बपावा रो आणा ।

जीवरक्षा रो ह्येय चरी मे,

मिप्यामति क्योर्हू धी लाखो ॥३॥

आपमा प्रत री रक्षा करे और,

परजीवो रा प्राण बचावे ।

काम पड़्या से मट नट जावो ।

गृहस्थी रा पग हेटे जीव मरे जब,

हिंसा छोड़ावण तुम नहीं चावो ॥३९॥

तेल दुलण दृष्टान्त रे न्याय,

पगनल जीव यतावणो खोटो ।

ते दृष्टान्त श्री आगी श्रद्धा मे,

हिंसा छुड़ावण में होसी तोटो ॥४०॥

युक्ति पे युक्ति सुणो चित लाई,

जीव बचावणो धर्म रे माई ।

जो जीव बचावा में-पाप बतावे,

बाने उत्तर (यो) दो समजाई ॥ ४१ ॥

ॐ गृहस्थ रे घर साधु गोचरी पहुँच्या,

ॐ जैसा कि वे कहते हैं—

गृहस्थ रे तेरु जाय मृण फट्याँ,

कीड़ियाँ रा दल माँहि रेला आत्रे ।

घोष में जीव आवे तेल सूँ पड़ता,

उपवेश वेई न क्या न पुकारो,
भावक उपवेश वत्क्षण पावे ॥चतु०॥३५॥

तब ता कह हूँ मौनज साधो,
मत्तमार क्या म्होंन पापज लाग ।

वे केता हूँ तो हिंसा पुकारो,

बाल ने बल गया क्यों खाने ॥चतु०॥३६॥

करी करी हूँ हिंसा पुकारो,

करी मत्तमार क्या पाप केने ।

देवलजज क्यों फिरे भावानी

बोल बल मिथ्यामव सेवे ॥चतु०॥३७॥

(कह) 'हिंसावि अकृत्य करता वकी

उपवेश वेई में हिंसा पुकारो ।

अकृत्य करता रा पाप मेठख में,

फुरती करों में वेर न लावो ॥" चतु०॥३८॥

ॐ बपुरेसस क्यों पाव या धारी,

● भी करते हैं पर करते नहीं उन्हें बपुरेसस
क्या जाता है ।—समाप्त ।

जो अग्नि उठे तो लाय लांग छे,

(तब) गृहस्थ ने अनरथ रो पाप थावे ॥४३॥

तिणने वर्ज ने पाप छुड़ावो,

अनरथ होता ने अटकावो ।

जो तिणने तुमे वर्जो नहीं तो,

हिंसा छुड़ावाँ यूँ मूठ सुणावो ॥४४॥

हिंसा छुड़ावाँ यूँ मुख से बोले,

तेल सूँ होती हिंसा न छुड़ावे ।

यह खोटी श्रद्धा उघाड़ी दीसे,

अन्तर अँधारो नजर न आवे ॥४५॥

(कहे) “पग से मरता जीव तुमे बतावो,

तेल से मरता तो थें न बतावो” ।

(उत्तर) खोटा बोलो मन रे मते थें,

म्हारे तेल पगाँ रो सरीखो दावो ॥४६॥

पग से मरता ने तेल से मरता,

मुनि जीवाँ री रक्षा में धर्म बतावे ।

गृहस्थ ने ब्रह्मस्थ बन्यो देखो ।

तल पदा न छोड़े ने छोरे,

कीकियों रा पर मोड़ी जाने निरोखे ॥४९॥

(बीच में) जीव ज्ञान से तल से बहता,

तल बहो-बहो जग्मि में जावे ।

तल बहो-बहो जग्मि में जावे ॥

देवदासी भूखी से निरोख कीकें ॥ १८ ॥

जो जग्मि रुके तो काव करो के,

ब्रह्मदासी जीव मारता जावे ।

गृहस्थ रा बग हरे जीव बतावे,

तो तल हुके से वासुध क्यों न बतावे ॥१९॥

पग सूँ मरता जीव बतावे

तल सूँ मरता जीव नहीं बतावे ।

बह लायी ज्ञान उपायी जीव

पग वासुधर भेदासी नजर न अपने ॥२०॥

(जमुकण्डा कांड—८)

(उत्तर) वाँ पिण में तो जीव बतारवाँ,

मूठी बातों क्यो थे उठावो ॥ चतु० ॥ ४९ ॥

थौरा हेतु थी थारी श्रद्धा में,

दूषण आवे विचारी देखो ।

सिध्या-ज्ञान मिटावण काजे,

थारा हेतु रो भाखू लेखो ॥ चतुर० ॥ ५० ॥

करता विहार मारग में थारा,

श्रावक सामा मिलवा आवे ।

मार्ग छोड़ी ने ऊजड़ जावे,

त्रसथावर री हिंसा थावे ॥ चतुर० ॥ ५१ ॥

श्रावक ने उपटपंथ जाता,

त्रसथावर (री) हिंसा करता देखे ।

(जो) हिंसा छुड़ावा में धर्म थे मानो,

तो श्रावक ने वर्जणो इण लेखे ॥ ५२ ॥

हिंसा छोड़ावणो मुख से बोले,

धोथा वादल जिम ते गाजे ।

महारी तो मर्या कठेइ न भटके, ।
 : , यों बखसैलाख पर ते कलंक बढ़ावे ॥४७॥
 कठे कहे "हिसक (नि) समझावों,"
 तेल की हिसा करण न बरजा । -
 बलि सुमारा हेतु रा कुर, - - - ।
 वरुं ते। सुण ने रीस म करजो ॥४८॥
 (कहे) "जायक रा पग तस बरगी से,
 जीव भर त्याने क्यों न बचाबोछे" ? ।

● प्रैसा कि ये कहने ही —

एक पगहेंडे जीव बताये

त्यो मैं बोधा सा जीवो ने बचता जाली ।

आवकीं ने उभाइ सीं मार्ग बाल्या

बना जीव बने असुयावर जाली ॥ १३ ॥

बोधी दूर बजार्नी बोधी बने कुने

तो यमी दूर बजार्नी बनो बने जाली ।

बनी दूर रो नाम किर्ना बक बक

ते बंटी भडा रो बहिनाजो ॥ १४ ॥ २५ ॥

(भयङ्करा वास—४)

घणा पग छुड़ाया घणो धर्म जाणो ।

घणा (पगाँ) रो नाम लिया बक उठे,

तो खोटी श्रद्धा रो अहिनाणो ॥ ५७ ॥

‡ अन्धा पुरुष रो हेतु देने,

घणी दूर रो नाम लियाँ बक उठे,

ते खोटी श्रद्धा रो अहिनाणो ॥वेश०॥ २५॥

(अनुकम्पा ढाल—८)

‡ जैसा कि वे कहते हैं —

कोई अन्धा पुरुष गामान्तर जातौ,

आँख बिना जीव क्रिणविधि जोवे ।

कीढी माकादिक चीथतो जावे,

त्रस थावर जीवौ रा बमसाण होवे ॥वेश०॥ २६॥

वेपधारी सहजे साथे हो जाता,

अधा रा पग सूँ मरता जीवौ ने देखे ।

यह पग पग जीवौ ने नहीं बतावे,

तो खोटी श्रद्धा जाणज्यो इन लेखे ॥वेश०॥ २७॥

(अनुकम्पा ढाल—८)

तबक वन (बजाइ) में खीब ने खीब,
 मोन साक बजैता क्यों कामे ॥चतुर०॥५३॥
 क्हो बक्य इणता ने सममझौ,
 (क्हो तो कसाई) समम निअय नहि जायी ।
 मावक ने वन में हिंसा की न बजै,
 क्हो हूट हिंसा असबावर मायी ॥चतुर०॥५४॥
 कसाई देखो माने न मान,
 मावक तो माय अनुगामी ।
 जो ये बजौ हिंसा नहीं होवे
 नहि बजौ यारी मझ मायी ॥चतुर०॥५५॥
 हिंसा बाकाबसी जो ये माना,
 धर्म रो कम यु मुक्त से बसायो ।
 (ना) मावक पग री हिंसा सुहाया,
 धर्म हुवा रो क्यों नहि मानो ॥चतुर०॥५६॥
 ३ शोपा (हिंसा) बाकाया थोको परम हुवे,
 * इसा कि ने कहेते हैं। —
 १) की दूर बतार्थ थोको धर्म हुवे
 २) की दूर बतार्थ बन्धे धर्म बायो ।

❀ आटा री ईल्यौं रो नाम लेई ने,
 जीव वचावा में दोषण केवे ।
 तेइज हेतु थी त्यारी श्रद्धा में,
 हिंसा छुड़ाया में दूषण रेवे ॥चतुर०॥६२॥
 ईल्यौं दि जीवौं सहित आटो छे,
 गृहस्थ ढोले छे मारग माँयो ।

❀ जैसा कि वे कहते हैं —
 इट्पाँ सुलसुलियाँ सहित आटो छे,
 गृहस्थ सँ ढुले मार्ग माँयो ।
 यह तपती रेत उन्हाले री तिण में,
 पढ़त प्रमाण होत जुदा जीव काया ॥वेश०॥२०॥
 गृहस्थ नहीं देखे आटो ढुलतो,
 ते वेपधारियाँ री नजरौं आवे ।
 यह पग हेठे जीव वतावे तो,
 आटो ढुलता जीव क्यों न वचावे ॥वेश०॥३०॥

जीव बचाया में पाप बचाये ।

ठा तेहिज हेतु थी हिंसा बुझाया में,
तेनी भया में रूपय भाव ॥ चतुर० ॥ ५८ ॥

(कोइ) अन्धा पुण्य गामांशर जाओ,
असि बिना हिंसा किम टाले ।

कीड़ी, राजाया मारता आये,
प्रसन्नवर (जीव) पर पग देह चाल ॥ ५९ ॥

बे पिय सहज साथे ही जायो
अन्धा ने हिंसा करता देखो ।

पग-पग हिंसा बे ॥ बुझाया,
(सेमी) छोटा बोलस्य से दूम लको ॥ ६० ॥

(स्वा अन्धा ने) अताय-अताय न हिंसा बुझायी,
पापबन्ध थी करखा दूरा ।

इस कार्य किया थी पोष ओ लाओ,
धो जीव बचाया में दोष बे दूरा ॥ ६१ ॥

किणहिक ठौर हिंसा छुड़ावे,

किणहिक ठौर शंका मन आणे ।

मिथ्या उदय थी समझ पड़े नहीं,

अज्ञानी जन तो ऊँधी ताणे ॥चतुर०॥६६॥

गृहस्थ विविध प्रकार की वस्तु थी,

(त्रसथावर) जीवों की हिंसा किधी ने करसी ।

(जो) हिंसा देखी छोड़ावणी केवे,

तो सगलेई ठोड छोड़ावणि पड़सी ॥६७॥

पग-पग ज्वाव अटकता देखो,

तो पिण खोटी रूढ न छोड़े ।

मोह मिथ्यात मे डूब रह्या छे,

जीवरत्ता रा धर्म ने तोड़े ॥चतुर०॥६८॥

हिंसा छोड़ावणो जीव बचावणो,

दोनो ही काम धर्म में जाणो ।

अवसर ज्ञानी जन आदरता,

कर्म निर्जरा ठाण पिछाणो ॥

या श्रद्धा श्री जिनवर भाखी ॥चतुर०॥६९॥

वरदी रोष जनसारी सिध में,

पड़त मरे हिंसा बहुत पायो ॥चतुर०॥६३॥

गृहस्थ रे छान न पाप लाग्य रो,

ते करा बारे समझ में आयो ।

वै हिंसा बेसी जोड़ायपी केजो,

(तो) आस्यो बुरा हिंसा बी क्यों न मुकायो ।६४।

(कहे) “गृहस्थ री उपधी हूँ जीव मरे बे,

सब ठोड़ बतावा ने क्यों नहिं जाया ॥” ।

तो चर सिधो बारा हेतुये

हिंसा बुझान न वै (क्यों) नहिं पायो ॥६५॥

‡ असा कि वे कहने हैं—

इत्यारिक एकरा रे अनक उपधि हूँ

प्रसन्नपर जीव मुझ ने भरसी ।

एक पग टंडे जीव बतावे

तो ने समझी ही कीर बताववा बहसी ॥ ३१ ॥

(अनुकम्पा वास—४)

(कहे) "समवसरण जन आता ने जाता,

केई रा पग से जीव मर जाया ।

जो जीव बचाया से धर्म होवे तो,

भगवन्त कटेही न दोमे बताया ॥ ७४ ॥

नन्दण मनिहार डेढको होय ने,

वीर वन्दण जाता मारग माँयो ।

तिणने चीथ माखो श्रेणिक ना बछेरे,

वीर साधु सामाँ भेल क्यों न बचायो" ॥ ७५ ॥

"तेथी जीव बताया में पाप बतावौ",

एवी कुगुरु कुतर्क उठावे ।

न्याय से उत्तर जानी देवे,

तव चुप होवे ज्वाव न आवे ॥ चतुर ० ॥ ७६ ॥

जो जीव बचावा साधु न मेल्या,

तिण थी जीव बचाया में पापो ।

तो राजगिरी सी नगरी रे माँये,

(महा) हिंसादि कुकर्म होता संतापो ॥ ७७ ॥

भद्रकल्या-विचार

हिंसा छुड़ाया में धर्म बतावे,
जीव बचाया में पाप को केवे ।

हँसा बोझों से पाप करीमे,
लोग हनु बहुविधि दव ॥चतुर० ॥७०॥

(मुनि) सब ठामे हिंसा छुड़ाया न आवे ।

सब ठामे जीव बचाया न पावे ।

अबसर की हिंसा छुड़ावे

अबसर जीव बचाया आवे ॥ चतुर० ॥७१॥

जीव बचावयो हिंसा छुड़लणी,

होमों से एक ही समझो लेना ।

एक में धर्म रूखा में पाते

इस मन्त्रे से मिथ्यामति देखो ॥चतुर० ॥७२॥

गृहस्थी रा पग हेट जीव आवे तो,

साधु बतावें तो पाप न आव्यो ।

मंपकारी तिरुमें पाप बतावे

परतल पोचो इगुराँ वास्या ॥ ७३ ॥

श्रावक रो नाम तौ अलगा मेली,

साधौँ रा कर्तव मुख लावे ।

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रे अवसर,

साधू कार्य किया गुण पावे ॥चतुर०॥८२॥

सज्ज्मा, ध्यान, तप विहार विचरणो,

व्याख्यान, व्यावच धर्म रो कामो ।

बल बुद्धि और क्षेत्र काल रे,

विवेके करे साधु गुण धामो ॥चतुर०॥८३॥

बिना अवसर ये नांय करे तो,

सज्ज्मा ध्यान न पाप में आवे ।

(तिम) विन अवसर जीव नाय छुड़ाया,

(तेथी) जीव छुडावणो पाप न थावे ॥८४॥

कदा केई एम परूपे,

साधु-श्रावक (री) अनुकम्पा एको ।

साधु श्रावक ने करणी,

पड़े जब फिरता ही देखो॥८५॥

अनुष्ठान-विचार

मगबन्ध ते कुर्मं बोद्धावा,

साधों ने मेझ्या कठेई म वीसे ।

तो थारे लेखे उपदेश वेई मे,

कुर्मं बोद्धावा जें पाप विरोधे ॥चतु०॥७८॥

ओ कुर्मं बोद्धावा धर्म रे मोंई,

(पिय) उपदेश साधु अबसर की हवे ।

तो जीव बोद्धावा धर्म रे मोंई,

अबसर स्थान विचारी लेवे ॥चतु०॥७९॥

कोई गृहस्थ उपदेश वेई म,

सब ठामे खार्ई (मझा) हिंसा दुकाने ।

कोई पंचेन्द्रिय जीव बचाने,

वे होमो ई धर्म वसो पक्ष पावे ॥चतु०॥८०॥

हिंसा बोद्धावा ता धर्म बचाने,

जीव बचाय पाप ओ कवे ।

ऊँची भ्रष्टा या पग-पग कटके,

पाप करी-करी दुर्गति लेवे ॥चतु०॥८१॥

जद कहे म्हारी हिंसा टलाई,

(तेथी) धर्म रो काम कियो सुखदाई ।

(तो) श्रावक श्रावक ने (मरता) जीव बतावे,

(तो) यो पिण धर्म मानो क्यों न भाई॥९०॥

साधू थी मरता जीव वचाया,

श्रावक थी मरता तिम ही वचाया ।

एक में धर्म ने दुजा में पापो,

ई झगड़ा थारी श्रद्धा में मचिया ।च०॥९१॥

वारा प्रकार रा संभोग भाख्या,

सूत्र समायंग माई देखो ।

जीव बताया संभोग लागे,

इमा नाही मूत्तर में लेखां ॥चतु०॥९२॥

श्रावक, श्रावक ने जीव बताया,

पाप लागे यो मत काढ्यो कूरो ।

तिण लेखे जीवाँ रा भेद सिखाया,

थौरी श्रद्धा मे (होसी) पाप रो पूरो॥९३॥

साधु, साधु भी मरता जीव बतावे, ।
 पाप दल अनुकम्पा गावे ।
 भावक भावक भी मरता जीव बतावे,
 मृदुपद तेने पाप बतावे ।।चतुर० ।।८६।।
 भावक भावक न (मरता) जीव बतावे,
 (हो) किसो पाप लागे किसो ब्रत मागे ।
 विष्णु रो हो उत्तर मूल न बतावे
 बोधा गाल बजावा लागे ।।चतुर०।।८७।।
 सिद्धान्त (र) बल बिना बोले अज्ञानी
 संभोग (रो) नाम अनुकम्पा मं कही ।
 गान्धो रा गोवा गुल न पलावे,
 त म्याय मुक्ता भवियलु पित चाव ।।८८।।
 साधु रे संभोग भावक न नाहीं
 (तृपी) जीव बतावा में पाप बतावा ।
 ता) भावक साधु न जीव बतावे
 विष्णु में ता धर्म गुम क्या गावो ।।८९।।

गृहस्थ रा पग हेठे उन्दिर वताया,

परतख पाप गृहस्थ रो टलियो ।

उन्दिर रे आरत रुद्धर रो,

महाक्लेश टलवा रो फल मिलियो ॥९८॥

जो विन संभोगी रो पाप टालण में,

पाप लागे यूँ थें कदा भाखो ।

(तो) उपदेशे गृहस्थ रा पाप टालण में,

थारी श्रद्धा में पाप ने राखो ॥चतु०॥९९॥

इण श्रद्धा रो निर्णय न काढ़े अज्ञानी,

दया मेटण लियो संभोग शरणो ।

पाप छुड़ाणो संभोग मे नाहीं,

शक्का हो तो करो भवि निरणो ॥च०॥१००॥

नहीं मारण ने जीव बताया,

संभोग लागे ऐसो बतावे ।

तो पाप छुड़ावण परतख बतावो,

भागलपणो थारी श्रद्धा में आवे च०॥१०१॥

श्रीगुरुदेव-विचार

(कहे) "जीवों रु भेद तो ज्ञान रे छाविर,
(बली) क्या रे छाविर में पिय बतवाई।

भूत भविष्य में जीव बतवाया,

धर्म रो काम में कहि समझवाई॥१४॥१५॥

वर्तमान (काल) पग बैठे बतवाया,

पाप हुबे म्हारी बसा रे मोई ।"

तो भूल्या रे भूल्या में मूल स भूल्या,

धर्म तो करयो ठिहुँकल धर्यारि॥१६॥१७॥

पापस्याग अठ धर्म रो रूपम

ठिहुँकाले किया हुबे छुलर्यारि ।

भूत-भविष्य में धर्म हुबे तो

वर्तमाने पाप कवापि न बार्ह ॥१८॥

(जो) वर्तमान (में) जीव बतवाया पापो,

तो भूत भविष्य में (बारे) पाप सँतापो ।

(जो) परोक्ष बतवाया (परोक्ष में) भली दया करसी,

प्रत्यक्ष (बतवाया) में मिटे प्रत्यक्ष पापो॥१९॥

- (कहे) “जीवों रा भेद तो ज्ञान रे स्थाविर,
 (बली) दया रे स्थाविर भैं पिण्य बतार्यों ।
 मूत भविष्य में जीव बतया,
 धर्म रो काम भैं कहि समझार्यों ॥१४॥
- वर्तमान (काल) पग हेने जाया बतया,
 पाप हुवे म्हारी अछा रे मौर्य ।”
 तो मूल्या रे मूल्या में मूल से मूल्या,
 धर्म तो करणो तिहुँकाल सदाई ॥१५॥
- पापत्याग अरु धर्म रो लयम,
 तिहुँकाले किया हुवे सुखदाई ।
 मूत-भविष्य में धर्म हुवे तो,
 वर्तमाने पाप कदापि न जाई ॥१६॥
- (को) वर्तमान (में) जीव बतया पापो,
 तो मूत भविष्य में (धारे) पाप सँतापो ।
 (जो) परोक्ष बतया (परोक्ष में) भावी दया करमी,
 प्रत्यक्ष (बतया) में मिटे प्रत्यक्ष पापो ॥१७॥

गृहस्थ रा पग हेठे उन्दिर वताया,

परतय पाप गृहस्थ रो दलियो ।

उन्दिर रे आरत रुद्धर रो,

महाछेश दलवा रो फल मिलियो ॥९८॥

जो बिन संभोगी रो पाप टालण में,

पाप लागे यूँ थें कदा भाखो ।

(तो) उपदेशे गृहस्थ रा पाप टालण मे,

थारी श्रद्धा में पाप नेराखो ॥चतु०॥९९॥

इण श्रद्धा रो निर्णय न काढ़े अछानी,

दया मेदण लियो संभोग शरणो ।

पाप छुड़ाणो संभोग मे नाहीं,

शङ्का हो तो करो भवि निरणो ॥च०॥१००॥

नहीं भारण ने जीव वताया,

संभोग लागे ऐसो वतावे ।

तो पाप छुड़ावण परतख वतावो,

भागलपणो थारी श्रद्धा मे आवे च०॥१०१॥

लाय लागी गृहस्थी जब देख, । ।

(तो) तुर्त मुग्धवे रछा मन पारी ।

गण ग्या गो काम गृहस्थ पर ल,

लिख में एकान्त पाप कहे सोंगिपारी ॥१०२॥

(कहे) 'लाय में पसे जारे करज चुके है,

(बोझा) कर्म पुटण री निर्जण भारी ।

विष पड़ क्योंने ओ कोइ काहे, । । । ।

वह होवे पाप कछो अधिकारी" ॥१०३॥

इम बलता रे कर्म कटता बतावे,

कन्दणबाला ने पाप बतावे ।

स्योरी तो कब परवीसी आवे । । ।

ओ लाय से निखर बाहर न आवे ॥१०४॥

(कहे) 'बलता परिणाम सेंठ पड़ी रेवे (तो)

अकाम मरण की दुर्गति आवे ।

(तेजी) विवरकस्पी ने बाहर निकलणवे, । ।

(गहारे) उपसर्गमिथ्या मन निर्मल आवे" ॥१०५॥

रे तुम्हें कहता बलसा जीयों रा,

कर्म छुटे निर्जग बहु थावे ।

निज बलवा री बात आई जद,

बाल मरण री तुम याद आवे ॥च०॥१०६॥

(जो) साधु नामधारी पिण बलता,

परिणाम विगड़धा दुर्गति जावे ।

(तो) गृहस्थी बलतो बिलबिल बोले,

ते लाय बल्या कर्म केम चुकावे ।च०॥१०७॥

ते तो महाआरत रे बस थी,

लाय बल्या संसार बधावे ।

ते अनन्त संसार रा पाप मुकावा,

दयावन्त त्याँने बाहिर लावे ॥च०॥१०८॥

ज्याँ-ज्याँ गृहस्थ रा गुण रो वर्णन,

त्याँ-त्याँ अल्पारम्भी भाख्या ।

बली हलुकर्मीपणो गुणाँ मे,

तुमे कहो थारा ग्रन्थ में दाख्या ।च०॥१०९॥

अस्वारम्भी गुण भावक केरो,
ज्याइ सुगुणार्थेंग में देखो ।

महारम्भी भावक नहीं होवे -

(तेरी) अस्वारम्भी भावक ते देखो ॥ ११० ॥

साध लगावे ते महा अवगुण में,
सूत्र मूर्खी विम इणविष भाव्यो ।

(अत्यन्त) ज्ञानावर्णी आदि कर्म रो कर्ता,
तेरी महाकर्मी प्रभु वाक्यो ॥ १११ ॥

महा क्रियाबन्ध तेने जाणो,
महा आश्रय कर्मबन्ध मो करवा ।

परसीब ने महा बेबमवाया,
पदबाहुगु यो तो ते परवा ॥ ११२ ॥

साध बुद्धिब तना गुण तो
भगवती मूर्खी इणविष बोझ ।

अस्पृकर्म ज्ञानावर्ण्यादि
त भी इहकर्म इण ताल ॥ ११३ ॥

अल्पक्रिया अल्प आश्रवी ते छे,

तेथी माठा-कर्म न बाँधे ।

जीवाँ ने बहु वेदना नहिं देवे,

(तेथी) अल्प वेदना गुण ते साधे ॥११४॥

सूत्र रो न्याय विचारी जोवो,

अग्नि लगावे महारंभी (महा) पापी ।

तिणने बुझावे ते अल्पारम्भी,

हलुकर्मी यूँ वीरजी थापी ॥च०॥११५॥

(सहजे) लाय बुझावे वो अल्पारम्भी,

तो बलता नर बचिया (महा)गुण कहिये ।

अभयदान रो पिण ते दाता,

शुद्ध परिणामी ते धर्म में लहिये ॥११६॥

(कहे) “लाय बुझावे ते अल्पारम्भी,

तो पिण पापी-धर्मी तो नाहीं ।

थोड़ा आरम्भ ने गुण में न श्रद्धाँ,

आरंभ सगला पाप रे माहीं” ॥च०॥११७॥

अस्वारम्भी गुण आवक केरो,

ज्याइ सुगदाभोग में दत्ता ।

गद्दारम्भी आवक मदी होवे, -

(तेषी) अस्वारम्भी आवक रो लेख्यो ॥११०॥

लाय सगावे तं महा अवगुण्य में,

सूत्र मीदीं मिन इयविष भस्वरो ।

(अत्यन्त) ज्ञानावरणी आदि कर्म रो कर्ष्य

तेषी महाकर्मो धनु राख्यो ॥१११॥

महा क्रियाबन्ध तने जाण्यो

महा आत्मन कर्मबन्ध नी करता ।

परजीव ने महा बेधमदाता,

पद्माशुर्गुंखनो ते भरता ॥ ११२ ॥

साव सुमध्यने तेमा गुण तो,

मगावटी मीदीं इयविष बोले ।

अस्पृक्ष कर्म ज्ञानावरणीवि,

ते नी इच्छुकर्मो इय तोले ॥ ११३ ॥

अग्नि थी मरता जीव वच्या रा,

द्वेष थी तुम इहाँ अवला बोलो ।

“अल्पारंभ तो गुण में नाहीं”,

(यो) सत्य छोड़्यो तुम हिरदा में तोलो ॥ १२० ॥

अल्पारंभ श्रावक (रा) गुण बोले,

निरारंभी साधु (रा) गुण जाणो ।

तेथी साधु-श्रावक रो धर्म है जुदो,

दो विध धर्म(इम) सूत्र बखाणो ॥ च० ॥ १२१ ॥

(कहे) “अल्पारंभ गुण लाय बुझाया,

साधु बुझावा ने क्यो नहिं जावे ।”

मन्दमती एवी तर्क ठावे,

ज्ञानी उत्तर इण विध देवे ॥ चतुर० ॥ १२२ ॥

अल्पारंभ गुण लाय बुझाया,

निरारंभ गुण साधु रो जाणो ।

अग्नि आरंभ रा त्याग न तोडे,

मिथ्या तर्क थी न करो ताणो ॥ १२३ ॥

(पुनः) हम बोले ता आखो अहामी,
 अस्प-महारम्भ (रो) भेद न पाया ।
 अस्वारंभी तो स्वर्ग में जावे,
 (लेखी) अस्वारंभी ने गुण में बसतया ॥११८॥
 आरा धर्म-विष्वसुन मारही,
 अस्वार मी ने स्वर्ग छे बसतयो ।
 अस्वारंभे महारम्भ मारही
 वो पिय गुण है वटे इनि गत्यो ॥च०॥११९॥

● कैसा कि ने कहते हैं —

अब इहाँ तो मात्रकालिक बन्त गुण कहा । लहके
 मोक्ष मान माया कोम बलका, अस्प इच्छा अस्प
 आरम्भ अस्प सुमारम्भ, कुर्या गुणा करी देवता हुवे छे ॥
 (अम-विष्वसुन-पृ ३८)

† कैसा कि ने कहते हैं—

परम अस्प आरम्भ, अस्प सुमारम्भ, अस्प इच्छा
 कहो । निचारे हम आदिने नै बणी इच्छा महीं
 प गुण छे ॥

(अम-विष्वसुन-पृ ३८)

अग्नि थी मरता जीव बच्यो रा,

द्वेष थी तुम इहाँ अवला बोलो ।

“अल्पारंभ तो गुण में नहीं”,

(यो) सत्य छोड़यो तुम हिरदा में तोलो ॥१२०॥

अल्पारंभ श्रावक (रा) गुण बोले,

निरारंभी साधु (रा) गुण जाणो ।

तेथी साधु-श्रावक रो धर्म है जुदो,

दो विध धर्म(इम) सूत्र बखाणो ॥च०॥१२१॥

(कहे) “अल्पारंभ गुण लाय बुझाया,

साधु बुझावा ने क्यों नहीं जावे ।”

मन्दमती एवी तर्क उठावे,

ज्ञानी उत्तर इण विध देवे ॥चतुर०॥१२२॥

अल्पारंभ गुण लाय बुझाया,

निरारंभ गुण साधु रो जाणो ।

अग्नि आरंभ रा त्याग न तोडे,

मिथ्या तर्क थी न करो ताणो ॥१२३॥

(उत्तर) हम धाल लो माणो अहानी,
 अस्प-महारंभ (रो) भेद न पाया ।
 अस्पारंभी लो मर्ग में जाये,
 (तेषी)अस्पारंभी ने मुख्य में बतलाया ॥११८॥
 मारा भ्रम-विष्वसन्न मारीं,
 अस्पारंभी ने मर्ग ॥ बतलायो ।
 अस्पारंभे महारम्भ मारीं,
 पो पिण्ड मुख्य है बडे इति गाथो ॥ ११९ ॥

॥ मैसा कि वे कहते हैं —

मय इहाँ लो भ्रम-विष्वसन्न मारीं, अस्पारंभी ने मर्ग ॥ बतलायो ।
 अस्पारंभे महारम्भ मारीं, पो पिण्ड मुख्य है बडे इति गाथो ॥ ११९ ॥
 (अम-विष्वसन्न मारीं—पृ १८)

† मैसा कि वे कहते हैं—

परम अस्पारंभे महारम्भ मारीं, पो पिण्ड मुख्य है बडे इति गाथो ॥ ११९ ॥
 (अम-विष्वसन्न मारीं—पृ १८)

(अम-विष्वसन्न मारीं—पृ १८)

गृहस्थी, गृहस्थी री थापण नहिं देवे,

दूजो तीजो व्रत तिण रो भागे ।

थापण देदे साधु न केवे,

पिण गृहस्थ दिया व्रत रेवे सागे ॥च०॥ १२८॥

इम अनेक बोल साधु रे दूषण,

ते गृहस्थी रे व्रत रक्षा रा ठामो ।

(तेथी) गृहस्थ ने साधु रो आचार जुदो,

एक कहे ते मिथ्यात रा धामो ॥ १२९ ॥

सुरे (वखाण) धर्म आई पढते पाणी,

एकान्त-पाप तो तिणने न केवे ।

लाय से काढ मनुष्य वचाया,

एकान्त-पापी रो पद देवे ॥चतु०॥ १३०॥

(इम) जलटी कथनी कथी-कथी ने,

भोला ने कुपन्थ चढ़ाया ।

परशण पूछ्या वाव न आवे,

शर्म छोड़ी ने भेष लजाया ॥चतु०॥ १३१॥

अविचार ठग ने ब्रह्म पले ज्ञ,
 ते काम-भावक रा धर्म मार्ली ।
 साधु करे नहीं त्यो कामो ने,
 ते काम साधु रे कल्प में नार्ली ॥च०॥१२४॥
 "जो साधु न करे ते गृहस्थ रे पाप"
 यूँ मोक्षा ने भरमाया काठा ।
 जो बहुर होय ने व्याप पूजे सब,
 न ठिके मिथ्यादि जावे नाठा ॥च० ॥१२५॥
 (जो) नर, पशु भावक मूखा रह्ये,
 तो हिंसा लागे वेको ब्रह्म भाग ।
 अन्न दिया कइया नहि जावे,
 अविचार ठगवा रो धर्म है लागे ॥१२६॥
 साधु रा मातृपितादि गृहस्थी,
 (जाने) साधु मिमावे तो वृषख लागे ।
 गृहस्थी (अपना) मनुष्यों ने भूखा रह्ये तो,
 वृषख लागे फेको ब्रह्म भागे ॥चतुर०॥१२७॥

गृहस्थी, गृहस्थी री थापण नहिं देवे,

दूजो तीजो व्रत तिण रो भागे ।

थापण देदे साधु न केवे,

पिण गृहस्थ द्रिया व्रत रेवे सागे ॥च०॥ १२८॥

इम अनेक बोल साधु रे दूषण,

ते गृहस्थी रे व्रत रक्षा रा ठामो ।

(तेथी) गृहस्थ ने साधु रो आचार जुदो,

एक कहे ते मिथ्यात रा धामो ॥ १२९ ॥

सुरे (वखाण) धर्म आई पड़ते पाणी,

एकान्त पाप तो तिणने न केवे ।

लाय से काढ़ मनुष्य बचाया,

एकन्त-पापी रो पद देवे ॥चतु०॥ १३०॥

(इम) उलटी कथनी कथी-कथी ने,

भोला ने कुपन्थ चढ़ाया ।

परशण पूछ्या उवाब न आवे,

शर्म छोड़ी ने भेष लजाया ॥चतु०॥ १३१॥

अग्नि की कज्जला ममुष्य बचाया,
अग्नि री हिंसा विष में बाधे ।

जो इच्छविष धर्म ममुष्य बचाया,
लिता पर छोटा न्याय बसावे ॥च०॥१३२॥

(कवे) “यौंच सौ निरय-मिष्य जीवों न मारे,
कर कम्ताई अनारज कर्मों ।

जा मिष-धर्म होवे अग्नि बुद्ध्यर्थों,
तो इच्छने ही मारणों हुवे मिम धर्मों ॥१३३॥

जो लाय बुद्ध्यया जीव बचे तो,
कस्ताई (ने) मारया बचे बणा प्राणी ।

लाय बुद्ध्यया कस्ताई ने मारया,
होवों रा सेन्बो खरीखो जाणी” ॥च०॥१३४॥

(उत्तर) छोटा न्याय इस देवी अज्ञानी,
परवन्त वाले अनारज वाणी ।

अग्नि बुद्ध्यर्थो ममत्र ने मारणो,
सगिछा बह मदाअधम-प्राणी ॥च०॥१३५॥

मनुष्य मार बकरा ने बचावे,

अग्नि थी बलता मनुष्य निकाले ।

दोयों रो एक ही लेखो बतावे,

वे अन्याय रे मारग चाले ॥चतुर०॥१३६॥

कुगुरु रा मत रा श्रावक श्राविका,

अग्नि तो नित ही लगावे बुभावे ।

(ते) मनुष्य रा मारण जेसा महापापी,

थारी श्रद्धा रे लेखे थावे ॥चतुर०॥१३७॥

मोटी में मोटी मनुष्य री हिंसा,

अग्नि री हिंसा सूक्ष्म भाखी ।

लाय बुभावे ते अल्पारंभी,

भगवती सूत्र छे तिण रो साखी ॥१३८॥

बकरा बचावण मनुष्य ने मारे,

अग्नि थी बलता मनुष्य बचावे ।

दोयों ने सरीखा कुगुरु केवे,

ते महा मिथ्याति चोड़े दावे ॥च० ॥१३९॥

बकरा बजावण मनुष्य न मार,
ते तो पावस्य हे कुकर्मी ।

अग्नि धी बलवा मनुष्य बचावे,
अस्पादमी न दया धर्मी ॥चतुर०॥१४०॥

विन आरंभ नर मळा बचावे,
निष्ठ में आ एकात्म-याप बचाव ।

ह अग्नि रा आरंभ रा नाम सद् न,
प्रेम माना ने मरमावे ॥चतु०॥१४१॥

आवदया रा द्वेपी बेवा
आगदूनाई बीज सगावे ।

पुष्टिवन्त न्याय सूनर रा दधे
पा-पा कुगु न अटकावे ॥चतुर०॥१४२॥

आखीम दीवामी मग्गन,
आवण दादशी मुग्गशाह ।

दान रमान कुमनि मन बराहण,
बुर रादर में हवे बजाह ॥चतुर०॥१४३॥

इति आरंभी वाक्य समाप्तम्

दोहा

जीवहिंसा छे अति बुरी, तिण मे दोष अनेक ।
जीवरक्षा में गुण घणा, सुणजो आणिविवेक ॥ १

ढाल-नवमी



(तर्ज—यो भव, रतनचिन्तामणि सरिखो)

रक्षा देवी सब (ने) सुखदाई,

या मुक्तिपुरी नी साई जी ।

साठे नामे दया कही जिन,

दशमाँ अग रे माई जी ॥

रक्षा धरम श्री जिनजी री वाणी ॥ १ ॥

असथावर रे खेम री कर्ता,

अहिंसा दु खहर्ता जी ।

द्वीप तणी परे त्राण शरण या,

गंगाधर गंग लक्ष्मणाजी ॥ रक्षा ॥ २ ॥ ॥

‘निर्वोद’ ‘निर्वृत्ति’ नाम से द्यारो,

‘समाधि’ ‘शक्ति’ स्वरूपो जी ।

‘जीति’ जग प्रमिद (री) कटा

‘अन्ति’ अमृत रूपो जी ॥ अ० ॥ ३ ॥

‘रति’ आनन्द रे हेतुपया थी,

‘विरति’ पाप निवर्त्ती जी ।

मुवादा भवदान थी उपनी,

रत करे से ‘वृत्ति’ जी ॥ अ० ॥ ४ ॥

ददी से रक्षा थी ‘दया’ कदीज,

‘मुक्ति’ अर्थात् ‘जाति’ (दम्ती या चमा) उदागे जी

‘समष्टि’ ‘समष्टि’ आरपना सौंपी,

भयभीत दिखत से पायेगी ॥ अ० ॥ ५ ॥

सर्व धर्म अनुष्ठान बढ़ावे,

‘महन्ती’ इणरो नामो जी ।

बीजा व्रत इण रक्षा रे काजे,

जिन भाखे अभिरामो जी ॥रक्षा०॥६॥

जिन धर्म पावे इण परतापे,

तेथी ‘बोधि’ कहिये जी ।

‘बुद्धि’ ‘धृति’ ‘समृद्धि’ ‘ऋद्धि’ ‘वृद्धि’,

‘स्थिति’ शाश्वती एथी लहिये जी ॥र०॥७॥

‘पुष्टि’ पुण्य रो उपचय इण थी,

समृद्धि लावे ‘नन्दा’ जी ।

जीवों रे कल्याण री कर्ता,

‘भद्रा’ भणे मुनिन्दा जी ॥रक्षा०॥ ८ ॥

‘विशुद्धि’ निर्मलता दाता,

लब्धि री ‘दाता’ ‘लद्धि’ जी ।

‘निर्वाण’ ‘निर्मुचि’ नाम छे इखरो,

‘समाधि’ ‘शक्ति’ स्वरूपो जी ।

‘क्षीति’ जग प्रमिद्ध (गी) कथा,

‘कान्ति’ अद्भुत रूपोजी ॥ अथा० ॥ ३ ॥

‘रति’ आनन्द रे देखुपणा भी,

‘विरति’ पाप निवहती जी ।

‘सुवादा’ भुवमान भी उपनी,

दृष्ट करे ते ‘सुमि’ जी ॥ अथा० ॥ ४ ॥

देही री रक्षा भी ‘वयो’ कदीज,

‘सुनि’ अरु ‘शक्ति’ (सम्पत्ति या कमा) उदारो जी

‘समधिष्ठि’ आराधना सौधी,

मयमौवा हिरदा में धारोजी ॥ अथा० ॥

अन्तर आँख हिया री फूटी,

ते सूअर नामो नहीं देखे जी ॥ रक्षा० ॥ १३ ॥

‘सिद्धिआवास’ अरु ‘अनाशवा’,

‘केवली कैरो स्थानी’ जी ।

‘शिव’ ‘समिति’ मन्थक पर वृत्ति,

‘शील’ मन समाधानो जी ॥ रक्षा० ॥ १४ ॥

हिंसा उपरति ‘संयम’ कहिये,

‘शीलपरीघर’ जाणो जी ।

‘संवर’ ‘गुप्ति’ ‘व्यवसाय’ नामे,

निश्चय स्वस्व श्री जाणो जी ॥ रक्षा० ॥ १५ ॥

‘उच्छय’ भाव उन्नतता समझो,

‘यज्ञ’ भाव पूजा देवाँ री जी ।

गुण आश्रय री स्थानक निर्मल,

‘आयत्तन’ नाम छे भारी जी ॥ रक्षा० ॥ १६ ॥

सब मय में प्रधानता इयरी,

‘विशिष्टरूपि’ प्रसिद्धी जी ॥रक्षा०॥९॥

‘कन्याया’ कन्याएँ ही रक्षा,

॥

‘मंगलिक’ विघ्न मित्रों जी ।

हर्ष करे तेही यह ‘प्रमोदा’

‘विमूर्त’ इयरी आवे जी ॥रक्षा०॥१०॥

जीव बचावों जीवों ही रक्षा

‘रक्षा’ इयरी रो नामो जी ।

जानी होवे समझे खान में,

रक्षा बर्म रा कमो जी ॥रक्षा०॥११॥

माटीकर्मों लोगों ने भ्रष्ट करण ने,

(जीव) रक्षा में पाप बचवे जी ।

होने कुगुरु से मर्याद काथो

ते दीर्घ संसार बचावे जी ॥रक्षा०॥१२॥

जीवरक्षा सूचर ही बाखी,

जो पाप कदो किय लेते जी ।

अन्तर अखि हिया री फूटी,

ते सूत्र सामो नहीं देखे जी ॥ रक्षा० ॥१३॥

‘सिद्धिआवास’ अरु ‘अनाश्वा’,

‘केवली केरो स्थानी’ जी ।

‘शिव’ ‘समिति’ सम्यक पर वृत्ति,

‘शील’ मन समाधानो जी ॥ रक्षा० ॥१४॥

हिंसा उपरति ‘संयम’ कहिये,

‘शीलपरीधर’ जाणो जी ।

‘सवर’ ‘गुप्ति’ ‘व्यवसाय’ नामे,

निश्चय स्वस्व श्रो जाणो जी ॥ रक्षा० ॥१५॥

‘उच्छय’ भाव उन्नतता समझो,

‘यज्ञ’ भाव पूजा देवाँ री जी ।

गुण आश्रय री स्थानक ‘निर्मल’,

‘आयत्तन’ नाम छे भारी जी ॥ रक्षा० ॥१६॥

सब मत्त में प्रधानता इत्युरी,

‘विरिण्टट्टि’ प्रसिद्धी जी ॥रक्षा०॥९॥

‘कस्याप्या’ कस्याप्य री वाता,

मंगलिक’ विष्ण मित्रावे जी ।

दुर्प कदे सेधी यह ‘ममोदा’

‘विमूर्ति’ इत्युरी जावे जी ॥रक्षा०॥१०॥

जीव बचावों जीवों री रक्षा,

‘रक्षा’ इत्य-रो नामा जी ।

खानी होवे समझे खान में,

रक्षा धर्म री कामो जी ॥रक्षा०॥११॥

भारीकमा लोगों ने भ्रष्ट करख मे,

(जीव) रक्षा में पाप बचावे जी ।

स्त्रों ने दुःख में प्रत्यक्ष जाणो,

ते दीर्घ संसार बधाव जी ॥रक्षा०॥१२॥

जीवरक्षा सूचर री बाणी,

तो पाप कदो किय सेने जी ।

५३

‘अमाघात’ ते अमारी कहिये,

(इण रो) श्रेणिक पड़ह पिढायो जी ।

दयाहीण तो पाप वतावे,

सूत्र रो पाठ उठायो जी ॥रक्षा०॥२१॥

‘चोखा’ ‘पवित्रा’ अति ही पावन,

दोनों रो अर्थ एको जी ।

‘भावशुचि’ सर्व भूत दया थो,

पवित्र ‘पूता’ देखो जी ॥ रक्षा० ॥२२॥

अथवा पूजा अर्थ अणी रो,

भाव से देव पूजिजे जी ।

द्रव्य सावज पूजा हिंसा में,

ते इहाँ नाय गणीजे जी ॥रक्षा०॥२३॥

‘विमल’ ‘प्रभासा’ अरु ‘निर्मलतर’,

साठ नाम प्रभु भाख्या जी ।

'यज्ञम अभयशम वी जाणो,
 जीवरचा रो लपायो जी ।
 तेही पतना इष्ट ने कहिये,
 पर्याय नाम कहायो जी ॥८३॥१७॥
 जीव लब्ध्या में पाप बतावे,
 ते कुपन्धे पदिया जी ।
 परतक पाछ देखे जही मोला,
 हिरण मिथ्यात से जहिया जी ॥८०॥१८॥
 प्रसाद अमोघ' इयी ने कहिये,
 भारत धीर बैधाने जी ।
 'आचार्यन से नाम इयी रो
 सूत्र में गणवर गावे जी ॥८३॥१९॥
 'विद्यास पावे अन्य ते देवे,
 दया भगौली जाणो जी ।
 मयभीत प्राणी स अमर को देवे
 त 'अमोघ' नाम परमाणो जी ॥८०॥२०॥

^{५३}
 'अमाघात' ते अमारी कहिये,
 (इण रो) श्रेणिक पड़ह पिटायो जी ।
 दयाहीण तो पाप बतावे,
 सूत्र रो पाठ उठायो जी ॥रक्षा०॥२१॥
^{५४} ^{५५}
 'चोखा' 'पवित्रा' अति ही पावन,
 दोनाँ रो अर्थ एको जी ।
^{५६}
 'भावशुचि' सर्व भूत दया थी,
^{५७}
 पवित्र 'पूता' देखो जी ॥ रक्षा० ॥२२॥
 अथवा पूजा अर्थ अणी रो,
 भाव से देव पूजिजे जी ।
 द्रव्य सावज पूजा हिंसा में,
 ते इहाँ नाय गणीजे जी ॥रक्षा०॥२३॥
^{५८} ^{५९} ^{६०}
 'विमल' 'प्रभासा' अरु 'निर्मलतर',
 साठ नाम प्रभु भाख्या जी ।

‘यजन’ अमयशाम थी जाणो,
जीवरक्षा रो कपायो जी ।

तेही यतना इच्छ ने कहिये —

पर्याय नाम कदाचो जी ॥रक्षा०॥१५॥

जीव धनः या में पाप बतावे,
ते कुपन्ने पड़िया जी ।

परतस्त पाठ देखे नहीं भोला,
हिरदा मिथ्यात से अड़िया जी ॥र०॥१८॥

प्रसाद अमात्र इच्छी ने कहिये,
भारते धीर वैधाने जी ।

‘आस्थासने’ छ नाम इच्छी रो,
सूत्र में गणधर गावे जी ॥रक्षा०॥१९॥

‘विद्याम’ पावे अमय ने देखे,
इया भगोती जाणो जी ।
अयभीत प्राणी न अमय को देखे,

त ‘अमय’ नाम परमाचो जी ॥र०॥२०॥

सातावेदनी कर्म ते वोधे,

पुण्यश्री ते वरसी जी ॥ रक्षा० ॥ २८ ॥

भय पाया ने शरणो^१ दंव,

दया जीव विश्रामो जी ।

पंखीगगन^२ तिसिया^३ ने पाणी,

भूखो^४ भोजन रे ठामो जी ॥ रक्षा० ॥ २९ ॥

जहाज समुद्र तिरण उपकारी,

चोपद^५ आश्रम धानो जी ।

रोगी^६ औषध बल सुख पावे,

अटवी^७ साथ (सु) प्रमाणो जी ॥ रक्षा० ॥ ३० ॥

(इण) आठों थी अधकी अहिंसा,

सूत्तरपाठ पिछाणो जी ।

थोडो-थोडो गुण आठ में दाख्यो,

सम्पूर्ण रक्षा में जाणो जी ॥ रक्षा० ॥ ३१ ॥

प्रभुनि और निवृत्ति ग योग,

मिन्न-मिन्न नाम ये वाक्या जी ॥२०॥२४॥

नहिं इखनो निवृत्ति छाछा,

परब्रह्म गुरु गका जी ।

प्रभुनि निवृत्ति दोनों ओलकात्या,

बों (साठ) नामों री रीनी शिखा जी ॥२५॥

त्रिविध-त्रिविध क कव न इखनी,

इखन तो धर्म बतावे जी ।

त्रिविध-त्रिविध जीवगका करण में

पाप कठि धर्म कमावे जी ॥२६॥ ६॥

नहिं इखनो न रका करणी,

व प्रभु वाक्या भाराधी जी ।

पाणी पात समा में पश्य

(बोंमे)भार कका म्यायवासी जी ॥२७॥२७॥

प्राणी भूत, जीव, सत्व री,

अनुकम्पा काइ करसी जी ।

(कहे) “रक्षा करताँ प्राणी मर जावे,
 (तेथी) रक्षा में पाप बतावाँ जी ।
 जो धर्मकारज में हिंसा होवे,
 ते धर्म ने पाप में गावाँ जी” ॥
 चतुर सत्य रो निर्णय कीजे ॥३६॥
 जिण रक्षा में जीव मरे नहीं,
 केवल जीवाँ रो रक्षा जी ।
 तिण में भी थें पाप बतावो,
 तो छोटी थौरी शिखा जी ॥चतु०॥३७॥
 श्रावक वन्दणा ने नित आवे,
 जीव घणा नित मारे जी ।
 ते वन्दणा ने पाप में केणो,
 तुम श्रद्धा निरधारे जी ॥चतुर०॥ ३८ ॥
 (कहे) “आवण-जावण में जीव मरे छे
 ते तो आरंभ माँई जी ।
 वन्दणा ने म्हें धर्म में मानाँ,
 भाव अच्छा सुखदाई जी” ॥च०॥३९॥

भरा तो रक्षा आठों में होय,

ते एक बेरा क्या जाया जी ।

सब भरा रक्षा सब क्या में,

(तिथी) अष्टम इजन पिछाये जी ॥२०॥३२॥

सबसीख लेमकरी कही इयने

मूलपाठ रे माई जी ।

रक्षा लेम रो जर्मे ही परगट,

तेही रक्षा-यर्ममूलदार्द जी ॥रक्षा०॥३३॥

जीवरक्षा य छेपी बेपी,

रक्षा में पाप बतावे जी ।

कपा-कपा तो मुक्त स बोले,

देही-रक्षा क्या कटाव जी ॥रक्षा०॥३४॥

माइख-माइख कयो भरिईया,

(तिथी) मतमार कया मई पापो जी ।

पन्तर मयन दिया रा कूटा

(कटे) मतमार में पाप री बाबो जी ॥३५॥

(कहे) “रक्षा करतौ प्राणी मर जावे,
(तेथी) रक्षा में पाप बतवाँ जी ।

जो धर्मकारज में हिसा होवे,
ते धर्म ने पाप मे गावाँ जी” ॥

चतुर सत्य रो निर्णय कीजे ॥३६॥

जिण रक्षा मे जीव मरे नहीं,
केवल जीवाँ री रक्षा जी ।

तिण में भी थें पाप बतावो,
तो छोटी थॉरी शिक्षा जी ॥चतु०॥३७॥

श्रावक वन्दण ने नित आवे,
जीव घणा नित मारे जी ।

ते वन्दणा ने पाप में केणो,
तुम श्रद्धा निरधारे जी ॥चतुर०॥ ३८ ॥

(कहे) “आवण-जावण में जीव मरे छे
ते तो आरंभ माँई जी ।

वन्दणा ने म्हेँ धर्म में मानाँ,
भाव अच्छा सुखदाई जी” ॥च०॥३९॥

(उत्तर) तो इमहि मुँस समझें चतुरनर,
 रक्षाहि धर्म रे माँई जी ।
 हलख-बलख धी जीब मरे ता,
 अरुंसे समझे माँई जी ॥चतुर०॥४०॥
 आरम ने अगवाणी करने,
 रक्षा में पाप न आला जी
 परिणाम आका है धर्म र माँई,
 ये बड़ा सूफी राजो जी ॥चतुर०॥४१॥
 बाबर-अस हिंसा सूक्त में,
 अल्प-अधरम बोले जी ।
 बाबर सूक्त-हिंसा कहिये,
 अस ही मोटी लात जी ॥चतुर०॥४२॥
 अस में स-अपराधी री छोनी,
 निर-अपराधी री मोटी जी ।
 काटी रा योग जी माँगी छुट रो,
 छूनी व किम हुवे छोनी जी ॥च०॥४३॥

(हम) छोटी ग जोग थी मोटी हिंसा,
छोड़े छोड़ावे भल जाणो जी ।

निजनी, परनी, हरकोई नी,
(तेने) झानो तो शुद्ध बखाणो जी ॥च०॥४४॥

हम मोटी-हिंसा छोड़े छोड़ावे,
ते (तो) धर्म रो मारग जाणो जी,

तिण माँही जे पाप बतावे,
ते पूरा मन्द अयाणो जी ॥चतु०॥४५॥

(हम) पंचेन्द्रिय मारे साँस रे अर्थे,
तेनी हिंसा छोड़ावे अनेको जी ।

(तेने) अचित दिया में पाप परूपे,
ते हूवे छे विना विवेको जी ॥च०॥४६॥

जीव बचाया में पाप कहे छे,
क्युक्ति लगावे खोटी जी ।

ते रक्षा रा द्वेपी अनार्य यूँ बोले,
राखण आपनी रोटी जी ॥चतुर०॥४७॥

(कोई) मनुकम्पा-दान में पाप परहूये,
 त्योरी जीम पड़े तरवारो जी ।

पेहरण सोंग साधों रो राखे,
 धिक् त्योरी जमवारो जी ॥अतुर०॥४८॥

माधु रा बिदव धराने लोखों में,
 वाजे भगवान्त-भरख जी ।

जीवरक्षा में पाप बचावे,
 (त्योरी) तीन जत मागे लगवा जी ॥ब०॥४९॥

जीव बचाया में पाप परहूये
 ते जीव-दया मे त्यागे जी ।

तीन-काल री रक्षा ने निम्नरी,
 (विणसूँ) पहिलो महराजत मागे जी ॥५०॥

रक्षा में पाप वो भिनजी कछो मर्हीं
 (रक्षा में) पाप कछा मूठ लागे जी ।

इसका मूठ निरन्तर बोले
 त्योरी दूजो महराजत मागे ॥अतुर०॥५१॥

जीव बचाया पाप जो केवे,
 वाँ जीवाँ री चोरी लागे जी ।
 बले आज्ञा लोपी श्री अरिहंत नी,
 तीजो महाव्रत भागे जी ॥चतुर०॥५२॥
 जीव बचावा में पाप बतावे,
 जाँरी श्रद्धा घणी छे गन्धी जी ।
 ते मोह मिथ्यात में जड़िया अज्ञानी,
 त्याँने श्रद्धान सूमे सूँधीजी ॥च०॥५३॥
 (त्याँने) पूछवा कहे म्हे दयाधर्मी छाँ,
 दया तो देही री रक्षा जी ।
 तिण रक्षा में पाप बतावो,
 र्ये दया री न पाया शिक्षा जी ॥च०॥५४॥
 जीव-रक्षा ने दया नहीं माने,
 ते निश्चय दया रा घाती जी ।
 त्याँ दयाहीन ने साधू श्रद्धे,
 ते पिण निश्चय मिथ्याती जी ॥च०॥५५॥

(घोई) अनुकम्पा-दान में पाप परूपे,
 त्योरी जीम नई तरवारो जी ।

पेहरय सोंग सार्पो रो रक्त,
 पिछ् त्योरो समचारो जी ॥चतुर०॥४८॥

साधु रो बिहद बरख सोच्यें में,
 वाजे भगवन्त-मच्छ जी ।

जीवरक्षा में पाप बचाने,
 (त्योरी) चीन प्रत भागे सगत्ता जी ॥च०॥४९॥

जीव बचाया में पाप परूपे,
 त जीव-दया ने त्यागे जी ।

तीन-कल री रक्षा ने निन्दी,
 (विण्कर्) पहिलो म्हाप्रत भागे जी ॥५॥

रक्षा में पाप तो भिमजी क्यो नारी,
 (रक्षा में) पाप कथा मूठ लागे जी ।

रक्षका मूठ निरन्तर बोसे,
 त्योरी दूजो म्हाप्रत भागे जी ॥च०॥५१॥

હિમ્મક (રી) કરુણા મે ધર્મ વ્રતાયે,

મરણવાલા રી મે પાપો જી ।

યા યોટી શ્રદ્ધા પરત્ત્વ દોસે,

” જે થાપે તે પામે સુન્તાપો જી ॥ચ૦॥૬૦॥

(કહે) “છકાયા રો શસ્ત્ર જીવ અવ્રતી,

(ત્યારો) જીવેણો-મરણો ન 'ચાવે જી ।”

તો પાણી થી ડન્દિર માણા કાઢો,

(તેથી) થારો શ્રદ્ધા યોટી થાવે જી ॥૬૧॥

(કહે) “મ્હે તો જીવણો મરણો ન ચાવો,

પાપ ટાલણો ચાવો જી ।”

(ઉત્તર) તો જીવરક્ષા પિણ પાપ ટાલણ મે,

સ્વ-પર નો પાપ વચાવો જી ॥ચ૦॥૬૨॥

મારણ ને મરણવાલા રો,

પાપ છોડાયા વચાવો જી ।

મરણવાલા રી દયા કિયા સૂ,

ધોતક-રા પાપ છુડાવો જી ॥ચ૦॥૬૩॥

- (कहे) "साधु म जीब बचावयो नार्ही,
 (जीब) रक्षा न मछी म जाण्ये जी ।
- (कतार) ते रक्षापत्रे रा बजाण अहानी,
 इसही चरणा आये जी ॥चतुर०॥५६॥
- (कहे) "साधु ता जीबों न क्यने बचावे,
 ते तो पच रक्षा मित्र-कर्मों जी ।"
- यौरे लान् ब्री जीब-दमा रो,
 अपराधों मछि बर्मों जी ॥चतुर०॥५७॥
- जीव मार व कर्म पचे हो,
 (विष्णु म) उपहरा कम दुहायो जी ।
- जर कहे कम-बन्ध टलावो,
 तो मर वना क्यों न टलावो जी ॥च०॥५८॥
- टिमक न) पाप कम करता धी बचावे,
 मिष्ट में तो (बे) कल्याण बचावो जी ।
- नो) मरगुवालो पिछ पाप धी बचियो
 तत्ती बग्या में पाप क्यों गावो जी ॥च०॥५९॥

हिसक (री) करुणा मे धर्म बतावे,

मरणेवाला री में पापो जी ।

या खोटी श्रद्धा परतख दीसे,

जे थापे ते पामे सन्तापो जी ॥च०॥६०॥

(कहे) “छकाया रा शस्त्र जीव अव्रती,

(त्यारो) जीवणो मरणो न चावे जी ।”

तो पाणी थी उन्दिर भाखा काढो,

(तेथी) थारी श्रद्धा खोटी थावे जी ॥६१॥

(कहे) “म्हे तो जीवणो मरणो न चावों,

पाप टालणो चावों जी ।”

(उत्तर) तो जीवरक्षा पिण पाप टालण में,

स्व-पर नो पाप बचावों जी ॥च०॥६२॥

मारण ने मरणेवाला री,

पाप छोड़ावा बचावों जी ।

मरणेवाला री दया किया सूँ,

घातके रा पाप छुड़ावों जी ॥च०॥६३॥

बहुकम्पा-विचार

जीव गरीब असाव, दुःखी री,
बहुकम्पा जिनजी बतार्ह जी ।

त्योंने बचावा में पाप बताने,
या बड़ा दुःखदार्ह जी ॥चतुर०॥६४॥

जीवों री हिंसा असंजम जीतब,
त तो मुनि मर्हि जाने जी ।

जीवों री रक्षा संजम जीतब,
हे (तो) जाने गुण पारे जी ॥च०॥६५॥

जीवों री हिंसा असंजम जीतब,
(विष्णु) त्याग सूत्र में आया जी ।

जीवरक्षा रा त्याग न बाम्या,
(ब्रह्म) जीवरक्षा रा शुख गायाजी ॥च०॥६६॥

जीवों री रक्षा में पाप होता तो,
रक्षा रा त्याग करता जी ।

(विष्णु) रक्षा में तो बहु धर्म बतायो

जीवरक्षा जिन पता जी ॥चतुर०॥६७॥

त्रिविधे-त्रिविधे मुनि त्राता कहिये,
त्राता रक्षक जाणो जी ।

(तेथी) छकाया रा पीयर साधु,
रक्षा रो गुण पिछाणो जी ॥च०॥६८॥
मरता जीव ने कोई बचावे,
जामें पाप बतावे जी ।

ते पाप बताया समकित नासे,
जौरा मूल-उत्तर प्रत जावेजी ॥च०॥६९॥

(जोकहे) “त्रिविधे-त्रिविधे जीव-रक्षान करणी,”
(उत्तर) तो हिंसक री हिंसा छोड़ाया जी ।

मरता जीवाँ री रक्षा होसी,
थारी श्रद्धा सुँ पाप कमायाजी ॥च०॥७०॥

‘बीच में पड़ पाप नाय छोड़ावणो,”
इसड़ो थें धर्म बतावो जी ।

तो हिंसक पाप करे तिण बीच में,
उपदेश देगा क्यौँ जावो जी ॥च०॥७१॥

अनुकम्पा-विचार

हे कारण जीव-हिंसा करे कोई,

अहित अदोष तं पार्थे जी ।

जीवरक्षा ही समर्पित पावे

अहितं प्रियं न पावे जी ॥च०॥७०॥

जीवहिंसा प्रभु कोटी-बर्षाई,

(आठ) कमा री गठे बैपावे जी ।

जीवरक्षा प्रभु आशी माखी

कर्म-बन्ध लपावे ही ॥चतुर०॥७१॥

हिंसा माहीं धर्म भये वा

दोष-बीज रो भासा जी ।

जीवरक्षा में पाप बताव

मिथ्यात में हत्व वामा जी ॥च०॥७२॥

प्राणी जीव न दुःख जो दब

न दुःख पामं मसारे जी ।

अनुकम्पा कर दुःख मुकावे,

मुक्त पात्रा रो (सूत्र) विस्तार जी ॥च०॥७३॥

केई साधू नाम धराय करे छे,

जीवरक्षा मे पाप री थापो जी ।

(कहे) “प्राण, भूत, जीव ने सत्तव,

रक्षा मे एकंत-पापो जी” ॥चतुर०॥७६॥

(एवी) ऊँधी परूपणा करे अज्ञानी,

(त्याँने) ब्रानी बोल्या धर प्रेमो जी ।

थाँ भूँडो ठीठो भूँडो साँभलियो,

भूँडो जाण्यो एमो जी ॥चतुर०॥७७॥

जीव वचाया पाप परूपे,

या मूरख नर री वाणी जी ।

ने भारीकर्मो जीव मिथ्याती,

(त्याँ) शुद्धबुद्धि नाहिं पिछाणीजी ।च०॥७८॥

त्याँ निरदयी ने आरज पूछथो,

थाँने वचाया धर्म के पापो जी ।

तव कहे “म्हौंने वचाया धरम छे,”

साँचबोल ने किधी(शुद्ध) थापोजी ।च०॥७९॥

अनुकम्पा विचार

बे कारण जीव-हिंसा करे कोई,

अहित अवोध ते पावे जी ।

जीवरक्षा की समर्पित पावे

अहित त्रिकाल में पावे जी ॥च०॥७०॥

जीवहिंसा अनु लोटी बतार्ह,

(काठ) कमा री गोट बँबावे जी ।

जीवरक्षा अनु काखी मोली

कर्म-बन्ध कापावे जी ॥चतुर०॥७१॥

हिंसा मार्गी धर्म भूदे ता

बोध-बीज रो मासा जी ।

जीवरक्षा में पाप बताव

मिथ्यात में बावे वासा जी ॥च०॥७४॥

प्राणी जीव ने दुःख आ नष्ट,

त दुःख पाप भँसारो जी ।

अनुकम्पा कर दुःख दुहावे,

सुख पावा गो (सूत्र) विम्वार जी ॥च०॥७५॥

(कहे) “धर्म रे काज आरम्भ करे तो,
समकित-रत्न गमावे जी ।”

(उत्तर) तो साधुवन्दण ने आरंभ करता,
हृष्या-हृष्या क्यों जावे जी ॥च०॥८४॥

साधु रो वन्दण धर्म रो कारज,
ते आरम्भ धर्म रे काजे जी ।

वन्दणकाज आरम्भ करे त्योंने,
‘मिथ्याती’ कहता क्यों लाजे जी ॥च०॥८५॥

(कहे) “वन्दन (दर्शन) काजे आरंभ कीधो,
ते आरंभ खोटो जाणो जी ।

आरंभ करने दर्शन कीदा,
ते दर्शन धर्म पिछाणो जी ॥चतु०॥८६॥

जो आरंभ ने धर्म में जाने,
तिण री श्रद्धा खोटी जी ।

आरंभ ने आरम्भ पिछाणे,
दर्शन शुद्ध कसोटी जी” ॥चतु०॥८७॥

मनुष्य-मित्रः।

(कली कहे) धौने बचाया में परम जो मसीह,
तो सर्वजीवों से हम जान्यो की ।

जीवों ने बचाया पाप परमो
वै कोली क्यों कहे लानो की ॥ब०॥८०॥

रहा में पाप बचाये लाने
कीया परमै छू म्हाय की ।

मोग क्यों रा मूलपद में,
गन्धर्वकी मित्रता की ॥बदुर०॥८१॥

पर ने बचाया पाप परमै
निम ने बचाया में परमों की ।

वा क्का किन्तों री डं धी,
नहिं जाये पूरे मर्मों की ॥बदुर०॥८२॥

अथ अनर्थ परम रे काये,
दिसा ने दिसा जाये की ।

स्वने छुब समदहि कहिये,
निम-आगम बों बजाये की ॥ब०॥८३॥

(कहे) “धर्म रे काज आरम्भ करे तो,
समकित-रत्न गमावे जी ।”

(उत्तर) तो साधुवन्दण ने आरंभ करता,
हृष्या-हृष्या क्यों जावे जी ॥च०॥८४॥

साधु रो वन्दण धर्म रो कारज,
ते आरम्भ धर्म रे काजे जी ।

वन्दणकाज आरम्भ करे त्याँने,
‘मिथ्याती’ कहता क्यों लाजे जी ॥च०॥८५॥

(कहे) “वन्दन (दर्शन) काजे आरंभ कीधो,
ते आरंभ खोटो जाणो जी ।

आरंभ करने दर्शन कीदा,
ते दर्शन धर्म पिछाणो जी ॥चतु०॥८६॥

जो आरम्भ ने धर्म में जाने,
तिण रो श्रद्धा खोटी जी ।

आरंभ ने आरंभ पिछाणे,
दर्शन शुद्ध कसोटी जी” ॥चतु०॥८७॥

अधुना-विचार

पोता मैं मन्ना गुं लाभ पछ न,

भाला मैं यों परमात्मा जी ।

भावक वत्सलता न छूटा,

बे इसकी गाथा क्यों गावो जी ॥ ८८ ॥

(कहे) “ब्रह्मा जीवों से परमात्मा करने,

भावक न जीमावे जी ।

अधुना मन्त्रपुष्टि कर दियो भगवन्त,

लिखने धर्म किसी विषय बाबे जी” ॥ ८९ ॥

(उत्तर) जो ब्रह्मा जीवों से परमात्मा करने,

साधु न बन्धन बाबे जी ।

उत्तर मन्त्रपुष्टि बें माना ?

घारे धर्म किसी विषय बाब जी ॥ ९० ॥

(कहे) “आरम्भ करत मन्त्रपुष्टि में,

बन्धन भाव हा बाधा जी’ ।

(ग) भावक वत्सलता की जिमावे,

लिखने उत्तर दियो मोखा जी ॥ ९१ ॥

(कहे) “साधमी वत्सलता जाणौ,
 श्रावक ने जिमावे जी ।

तिण में एकान्त पाप बतावाँ,

‘ धर्मे श्रद्धे तो समकित जावे जी” ॥९२॥

(उतर) या श्रद्धा थोरी प्रत्यक्ष खोटी,

वन्दन रा थें भूखा जी ।

तिण हेते आरम्भ करे जद,

भाव बतावो चोखा जी ॥चतुर०॥९३॥

साधमी-वत्सलता मोटी,

समकित रो आचारो जी ।

तिण में एकान्त-पाप बतावो,

मिथ्या थारो व्यवहारो जी ॥चतु०॥९४॥

वन्दन आरम्भ (श्रावक) वत्सल आरम्भ,

दोनों सरिखा जाणो जी।

वन्दन भाव निर्मल भाखो,

थें वत्सल खोटा मानो जी ॥चतु०॥९५॥

अनुष्ठा-विचार

शानी तो दोनों ही खरिवा जाय,

धोमे ज्वाब न आवे जी ।

एक न धाये मे एक कथाये,

त मूरख मे भरमाये जी ॥चतुर०॥९६॥

काइ ता जीर्णो ने मरता बचाये,

कोई करे सत्ता साधनी जी ।

तिण में एकान्त पाप बताये

ते एकान्त मिथ्याकर्मी जी ॥चतु०॥९७॥

कोई जीर्णो छ हुक मेरपा में,

एकान्त-पाप बताये जी ।

होने जाण मिले भिन धर्म रो,

(तब) किण बिष मारग साजे जी ॥च०॥९८॥

लोहन्ते गोसो अग्नि तपायो,

ते अग्निवर्य कर तातो जी ।

(ते) पकड़ सैंडामो छापो तिण पासे

(कहे) बलवो गोसो मेसो हाथो जी ॥९९॥

(जब) दयाहीण हाथ पाछो खेंच्यो,

तब जाण पुरुष कहे त्याँने जी ।

यें हाथ पाछो खींचो किन कारण,

थारी श्रद्धा मत राखो छाने जी ॥च०॥१००॥

जद कहे गोलो म्हे हाथ में त्याँ तो,

(म्हारे) हाथ बले दुःख पावों जी ।

(तो थारा) हाथ बालता ने जो म्हे वरजाँ,

तो धर्मो के पापी कहावों जी ॥ १०१ ॥

(कहे) “(म्हारा) हाथ बालता ने जो कोई वरजे,

तिणने तो होसी धर्मो जी ।”

(तो) दूजा रा हाथ बालता (ने) वरजे,

तेमें क्यों कहो अधर्मो जी ॥च०॥१०२॥

इम सर्व जीव यें सरीखा जाणो,

यें सोच देखो मन माँई जी ।

दुःख भेटण में पाप बतावा रो,

कुबुद्धि तजो दुःखदाई जी ॥च०॥१०३॥

अनुकम्पित-विचार

भारा हाथ जलावा न बर्जे,

तेमें तो धर्म बचावा जी ।

झोरोँ रा राखे तो पाप बचाओ,

(बे)पसी क्योँ कुम्हति ठावो जी ॥५०॥१०४॥

ज सीध बचावा में पाप कहूँ बे

तले ते काम बन्यो जी ।

विपरीत भट्ठा रा फल दे खाटा

आल गवा अगबन्तो जी ॥५०॥१०५॥

मावों रे कमरे अकप इणी मे,

जगा करे दे रवाये जी ।

डोले लीये आवे, समाले,

ते साधु करे इलाक्यारो जी ॥५०॥१०६॥

अनन्त सीधों री पात दूर दिशों,

इय से करे निबाखो जी ।

पूखवा भी कम्पनीक बतावे,

विहनों रो जोयो नमाखो जी ॥५०॥१०७॥

(कहे) “धर्म रे कारण हिंसा कौधा,
बोध धीज रो नासो जी ।”

तो साधु काजे हिंसा करी ते,
तिण घरमें क्यों करो वासोजी च०॥१०८॥

‘पुरुषान्तकड़’ रो नाम लेई ने,
सैजान्तर धर्म बतावो जी ।

धर्म रे काजे हिंसा हुई यहाँ,
तेने मिथ्यात क्यों न बतावोजी॥च०॥१०९॥

(कहे) “दर्शन धर्म अरु हिंसा पाप में,
दोनों मानों न्यारा जी ।”

(उत्तर) तो साधर्मी वत्सलता धर्म में,
हिंसा पाप मे वारा जी ॥चतुर०॥११०॥

उगाड़े मुख बोली (श्रीने) आहार आमत्रे,
(बलि) मुख खुले बोल बेरावे जी ।

जीव असुर्य हरया तुम काजे,
(इणमें) धर्म पाप सूँ थावे जी॥च०॥१११॥

अनुकम्पा-विचार

(कहे) “वाम देवा रो तो धर्म है मोटी,

असतत रो पाप में मानों जी ।”

(कहे) तो बसलता रो तो धर्म है मोटी,

आरंभ पाप बलाओं जी ॥अ०॥११२॥

एवा अनेक निज कार्यों में,

पाप ने धर्म बसावे जी ।

अनुकम्पा रूपकारे (ओ कहे) आरंभ,

तो अनुकम्पा पाप में गावे जी ॥अ०॥११३॥

एकेन्द्रिय मरे पंचेन्द्री रहा,

(छिप में) एकान्त-पाप सिखावे जी ।

एकेन्द्री माने ने सारों (पंचेन्द्रिय) न बेचे,

छिप ने तो धर्म बसावे जी ॥अ०॥११४॥

ब-अपा इछाते साथे जावे,

(छिप ने) रस्ता ही संवा बसावे जी ।

त्याग कराय साथ ले जाव,

धर्म रो सोम दिखावे जी ॥अ०॥११५॥

निज स्वारथिया आहार रा अर्थी,
भोलों ने भरमावे जी ।

गाड़ी-घोड़ा लश्कर रे साथे,
उमाया-उमाया जावे जी ॥चतु०॥११६॥

स्वारथे हिंसा याद न आवे,
पर-उपकार में (भटपट) गावे जी ।

अठारे पाप रो नाम लेई ने,
मूरख ने भरमावे जी ॥चतुर०॥११७॥

(कहे) “आरंभ लागा उपकार हुवे तो,
भूठ चोरी थी पिण होसी जी ।”

(उत्तर) (इम) अठारेही पापों रो नाम बतावे,
ते पर-उपकार रा रोषी जी ॥च०॥११८॥

चोरी करी थारा दर्शन खातिर,
(कोई) कुड़ी-साख भरी धन लावे जी ।

तिन धन थी थारा दर्शन कीधा,
(कही) लारी भावना भावे जी ॥च०॥११९॥

धनुस्त्वर्गनिवार

आरम्भ कर आयो दर्शन कोअ

विष्णुत धर्म बतावो जी ।

ता जोरी-जारी रा धम भी बंधो,

विष्णु में विष्णु धर्म दिलावो जी ॥ १२० ॥

(कहे) 'जारी जारी, खोरी गवाही,

दर्शनधर्मि न सेवे जी ।

आरम्भ बिना ता आवै न सके

(लेयी), आरम्भ कर दरा सब जी ॥ १२१ ॥

(इत्तर) (तो) इपकार में तुम्हें इमहिज जम्प

इपकारी गोरी न मने जी ।

कुड़ीसाग्य इपमिषार पाप न

इपकारी तज दस जी ॥ चतुर० ॥ १२२ ॥

इमहिज अतिरता न जाना,

जारी आरम्भ महिमये जी ।

सम्पत्तिय बिना (महा) रक्षा न हा ता

आरम्भ न आरम्भ केदजी ॥ च० ॥ १२३ ॥

आरम्भ उपकार जुआ-जुआ छे,

इमहिज रचा जाणो जी ।

उपकार रक्षा धर्म रो अंग,

आरम्भ अलग पिछाणो जी ॥१२४॥

जिन-भारग री नीव है रचा,

खोजी हुवे ते पावे जी ।

जीव बचाया धर्म है निर्मल,

दधि मथिया घी आवे जी ॥च०॥१२५॥

जीवरक्षा में पाप बतावे,

ते जल में लाय लगावे जी ।

अमृत थी मरणो कोई केवे,

ते मिथ्यावादी कहावे जी ॥च०॥१२६॥

जीवरक्षा श्री जिनजी री वाणी,

दशमें अंग बखाणी जी ।

जो करसी भवसागर तिरसी,

मनवृद्धित सुगदानी जी ॥चतु०॥१२७॥

आखीसे जयाखी संमत में,
 सुदि भावव पकाइरामी जी ।
 हात जोड़ी रक्षा वीपावणी,
 विमिर मित्यवय रामी जी ॥च०॥१२८॥
 मानवन्द कोठारी रे कमरे,
 बूह कियो बोमाखो जी ।
 कोठरपों सुख नखा पारी
 पामी दान-मकमो जी ॥चतुर०॥१२९॥

इति वचनी हाक सन्तक



ॐ शान्ति

ॐ शान्ति

ॐ शान्ति

